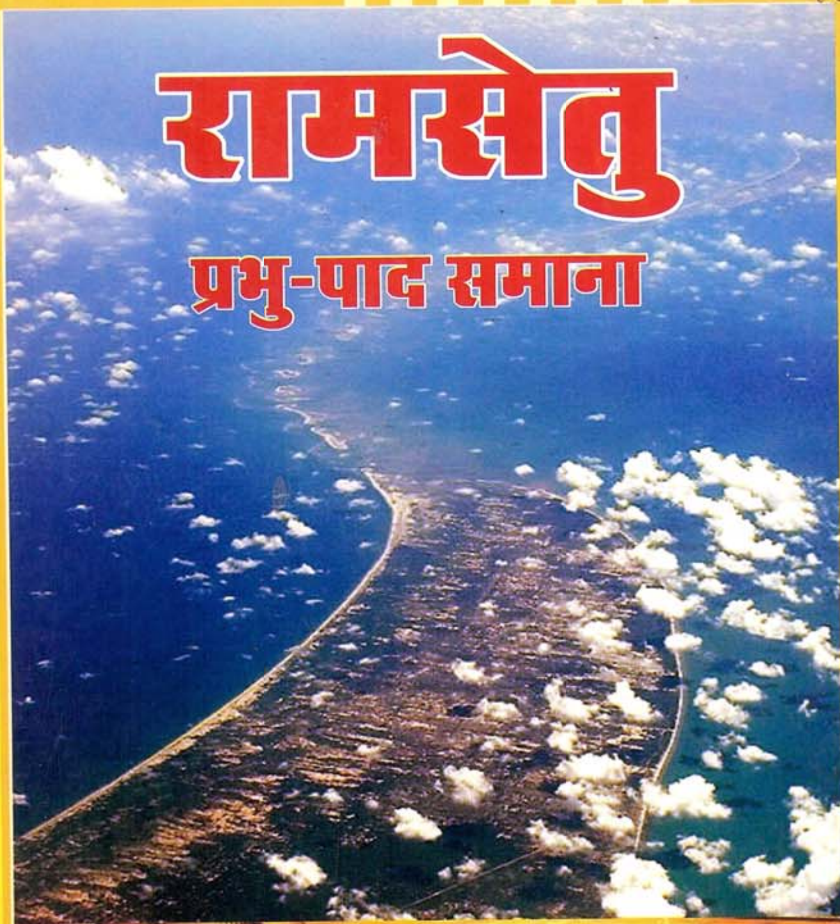
# रामसेतु

## प्रभु-पाद समाना



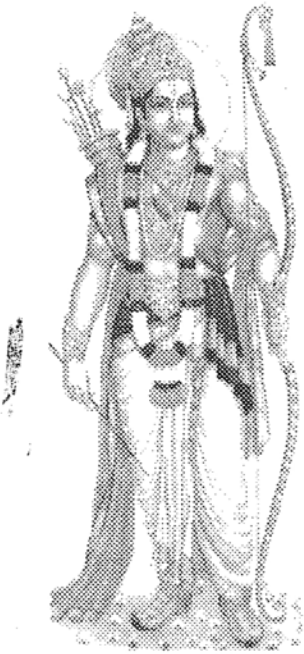



पं. अमरनाथ त्यागी

# रामसेतु

## प्रभु-पाद समाना





इंजी. अमरनाथ त्यागी
'मानस-मर्मज्ञ'



**छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान**
कृष्णसखा प्रेस, टूरी हटरी, रायपुर, फोन-2227895

रामसेतु प्रभु-पाद समाना ● मो.-094242-33033

○ इंजी. अमरनाथ त्यागी 'मानस-मर्मज्ञ'
27/406, पुरानी बस्ती, बनियापारा
गोपाल मंदिर के निकट, रायपुर (छ.ग.)

| | | |
|---|---|---|
| प्रकाशक | -: | छत्तीसगढ़ अस्मिता प्रतिष्ठान<br>कृष्णसखा प्रेस, टूरी हटरी रायपुर (छ.ग.) |
| मुद्रक | -: | महावीर ऑफसेट, गीता नगर, रायपुर |
| संस्करण | -: | 2010 |
| मूल्य | -: | 20 रु. (बीस रु. मात्र) |
| शब्द-संयोजन | -: | कृष्ण सखा प्रेस, टूरी हटरी, रायपुर |



फोन कार्या.: 0771-2221000-01
निवास : 0771-2331000-01

**डॉ. रमन सिंह**
मुख्यमंत्री,
छत्तीसगढ़ शासन रायपुर

# शुभकामना

*यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारी महान भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर "रामसेतु" पर इंजीनियर श्री अमरनाथ त्यागी द्वारा सम्पादित एक महत्वपूर्ण पुस्तक "रामसेतु" शीर्षक से प्रकाशित की जा रही है, जिसमे श्री त्यागी सहित अनेक विद्वानों के आलेख शामिल किए गए।*

*मुझे आशा है कि प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व, कला, संस्कृति, धर्म और अध्यात्म की दृष्टि से यह पुस्तक अत्यंत सुरूचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक होगी। प्रकाशन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।*

*(डॉ. रमन सिंह)*



-निवास-
बी-5/1, शंकर नगर, रायपुर
नि. 0771- 4080226, 2221226
कार्या. 0771-2331011, 2331070

**बृजमोहन अग्रवाल**
लोक निर्माण, पर्यटन,संस्कृति,
स्कूली शिक्षा, धर्मस्व मंत्री,
छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर

# शुभकामना

*यह प्रसन्नता का विषय है कि इंजी. अमरनाथ त्यागी जी ने भारतीय संस्कृति के आस्था केन्द्र रामसेतु पर सारगर्भित तार्किक कृति का सृजन किया है।*

*भारतीय जन मानस ने राम और रामसेतु को आत्मसात् किया है। रामसेतु पर राजनैतिक नहीं शोध परक चिन्तन आवश्यक है। श्रीराम सत्य हैं रामसेतु सत्य है। इसकी अस्मिता पर प्रश्न चिन्ह नहीं लग सकता। श्रीराम प्रश्न चिन्ह नहीं पूर्ण विराम हैं। यह कृति त्यागी जी की ऊर्जा सम्पन्न कलम को जन-जन तक पहुँचाये, यही कामना है। एतदर्थ शुभकामनाएँ।*

**(बृजमोहन अग्रवाल)**




# शिवराज सिंह

आई.ए.एस.
पूर्व मुख्य सचिव
एवं सलाहकार
छत्तीसगढ़ शासन

दूरभाष : 0771-2521007
मोबाइल : 94252-06346


## संदेश

*मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि इंजी. अमरनाथ त्यागी के संपादन में 'रामसेतु' नामक पुस्तक का प्रकाशन होने जा रहा है। आज रामसेतु एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्न बन गया है। जिस पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक, पर्यावरणविद्, चिंतक एवं साहित्यकार निरन्तर विचार-मंथन कर रहे हैं। यह पुस्तक इन समस्त चिंतनाओं के स्वरों को मुखरित करने मे सक्षम हुई है जो देश की एकता, अखंडता एवं सद्भाव के सेतु के रूप मे समाहित होगी। इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ इस 'रामसेतु' संकलन की सफलता के लिए मेरी कोटिशः हार्दिक शुभकामनाएँ।*

(शिवराज सिंह)



कार्यालय : कक्ष क्र.-350 मंत्रालय
दूरभाष : 0771-2221316,4080316
निवास : सी-5, रामेश्वरम्, शांति नगर, रायपुर
दूरभाष : 0771- 2331036, 2331037
कुरूद : दूरभाष- 07705 -223162

**अजय चंद्राकर**
पूर्व पंचायत एवं ग्रामीण
विकास, संसदीय कार्य,
स्कूल शिक्षा मंत्री,
छत्तीसगढ़ शासन, रायपुर

# सन्देश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि ''छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य मंडल'' द्वारा भारतीय अस्मिता के प्रतीक एवं विश्व की प्राचीनतम् धरोहर ''रामसेतु'' की जानकारी छत्तीसगढ़ प्रदेश के आमजनों तक पहुंचाने के लिए ''रामसेतु'' शीर्षक से श्री अमरनाथ त्यागी द्वारा संपादित पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

उक्त पुस्तक, ''रामसेतु'' की जानकारी से लोगों को अवगत कराने में सफल होगी, ऐसा मुझे विश्वास है।

पुस्तक प्रकाशन के लिए धन्यवाद !

(अजय चंद्राकर)



**सत्यानंद राठिया**

पूर्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं
उपभोक्ता संरक्षण विभाग

-निवास-
ई- बी/1, शंकर नगर, रायपुर
नि. 0771- 2331703,2331704
कार्या. 0771-2221318,4080319

# सन्देश

*यह जानकर अतिप्रसन्नता हो रही है कि आपके संपादकत्व मे "रामसेतु" नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पुस्तक मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शो, मूल्यों व प्रतिमानों की पुनर्स्थापना में सद्प्रयास के रूप में देश व समाज की मार्गदर्शक बनेगी।*

*"रामसेतु" के प्रकाशन एवं पुस्तक की सफलता की कामना करता हूँ व शुभकामनाएँ देता हूँ।*

*(सत्यानंद राठिया)*



दूरभाष (कार्या.): 0771-2533788
मो. : 094252-15420

**श्याम बैस**
अध्यक्ष
छ.ग. राज्य बीज एवं कृषि
विकास निगम (छ.ग.)

# संदेश

*मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि इंजी. अमरनाथ त्यागी के संपादकत्व में रामसेतु नामक पुस्तक का प्रकाशन होने जा रहा है। रामसेतु भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रतीक है। यदि राष्ट्रीय प्रतीकों एवं अस्मिता के साथ कोई भी राष्ट्रविरोधी तत्व ध्वसांत्मक कार्रवाई करेगा तो भारत की जनता उसका डटककर मुकाबला करेगी। यही ध्येय और यही संदेश राष्ट्रवादी विचारों एवं समर्थकों के लिए अनंत शुभ कामनाओं सहित।*

*(श्याम बैस)*



**चन्द्रशेखर साहू**
मंत्री
छत्तीसगढ़ कृषि एवं
श्रम मंत्री

# संदेश

*छत्तीसगढ़ हिन्दी साहित्य मण्डल के अप्रतिम प्रयास से "रामसेतु" पर एक पुस्तिका का प्रकाशन स्तुत्य है। कण-कण में बसने वाले राम, रोम-रोम में बसने वाले राम की हमारी यह धरा पावन एवं वंदनीय है।*

*नेशनल एयरोनाटिक्स स्पेश एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) द्वारा 17 लाख वर्ष पुरानी धरोहर आंकना यह स्वयंसिद्ध करता है कि यह हमारी प्राचीन धार्मिक धरोहर है। इसका संरक्षण उन सभी मान्यताओं का एवं परंपराओं का संरक्षण है जो हमारी संस्कृति के आधार हैं। इसकी महिमा एवं महत्ता को पहुँचाने का यह पुनीत प्रयास छत्तीसगढ़ के संदर्भ में प्रणम्य है।*

*शुभकामनाओं सहित,*

*भवदीय,*

*(चंद्रशेखर)*

# भूमिका

इंजीनियर श्री अमरनाथ त्यागी द्वारा रचित भावग्रंथ ''रामसेतु '' ऋग्वेद काल से अद्यतन संदर्भों को समाहित करते हुए जिन विभिन्न तथ्यात्मक आयामों सहित प्रस्तुत हो रहा है, वह श्री त्यागी की ज्ञान गरिमा से जुड़ा हुआ अतुलनीय प्रस्तुतीकरण है। अलौकिक संदर्भों को विभिन्न दृष्टिकोणों से चिंतन-मनन कर उसे लौकिक स्वरूप देते हुए विगत एक साल से विवादित ''सेतु समुद्रम'' विषय पर अनेक आदिकालीन प्रमाणों को संजोकर श्री त्यागी ने यह प्रमाणित किया है कि किस प्रकार शिलाओं और पात्रों से पाँच दिनों के भीतर महाभारत के अनुसार 100 योजन लम्बे और 10 योजन चौड़े रामसेतु का निर्माण किया गया। नीति-ज्ञान-धारक रक्षराज जाम्बवंत के भगवान श्रीराम के श्री पादों में बैठकर वानर श्रेष्ठ नल-नील सहित अनन्य वीर वानरों द्वारा सेतु निर्माण के लिए हुए प्रयत्नों का मानस वर्णित प्रस्तुतिकरण वाचक को कौतुहल देते हुए आगे की रचना धर्मिता से बांध लेता है। सागर में अथवा नदजल में तैरने वाले शिलाखण्ड या प्रस्तर अंश आज भी भारतवर्ष में मिलते हैं। प्रागैतिहासिक काल के पश्चात् निर्विवाद रूप से यह तथ्य अनेक धार्मिक ग्रंथों में वर्णित है कि रामसेतु साढ़े सत्रह लाख वर्ष से आज तक अस्तित्व की दृष्टि से अकाट्य सत्य है। रामायण और महाभारत काल से लेकर उसके उत्तरार्द्ध के युग की सभी रचनाएं यथा वेद-वेदांत में ''रामसेतु'' वर्णित है। किस तरह अगणित वानरों ने सुमेध पर्वत को घेरकर नल-नील के श्रेष्ठतम प्रयत्नों से बने पुल पर आधिपत्य स्थापित कर निर्बाध रूप से लंका की ओर प्रयाण किया। इसके अनेक उदाहरण ''धर्मग्रंथों से लेकर'' श्री त्यागी ने अपने श्रमसाध्य लेखन से इस कृति को अनुपमेय बना दिया है। जिस शैली में भगवान राम का उल्लेख वाल्मिकी रामायण, मौल्ल रामायण और आध्यात्म रामायण तथा गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित् मानस में प्रस्तुत हुआ है, उन सभी की मौलिकता को ध्यान में रखते हुए श्री त्यागी ने एतद् विषयक तथ्यों के अन्वेषण को जन-साधारण के निकट ला दिया है। चाहे वह औषधीय विज्ञान का विषय हो, आणविक रेडियोधर्मिता का विषय हो अथवा रामेश्वर से श्रीलंका की मन्नार खाड़ी के बीच स्थापित आदिकालीन रामसेतु का वर्णन हो, या लंका की वनश्री का वर्णन हो, सभी का अनिर्वचनीय सुखदायी वर्णन इस कृति को

पढ़ने से मिलता है। ब्रिटिश काल में हुए शोध में इस रामसेतु पुल की आयु भी प्राचीन स्वीकारी गई है।

वर्तमान वैज्ञानिकों ने इसकी निर्मिती के काल को 17 लाख पचास हजार वर्ष पूर्व युक्तिसंगत माना है। इसे तोड़कर सारे विश्व के हिन्दु समाज की धार्मिक आस्थाओं को असहनीय क्लेश देने वाली "सेतु समुद्रम योजना" समग्र हिन्दु मानस को आज तप्त, दग्ध और उद्वेलित एवं आंदोलित कर रही है। अनेक भूगर्भ वैज्ञानिक यह कह चुके हैं कि इस पुल के ध्वंशावशेष अस्तित्व में हैं। एक धर्म विशेष के दुराग्रही नेताओं के कहने में आकर यहाँ से समुद्री नहर निकालकर हिन्द महासागर के भारत और लंका के बीच बंगाल की खाड़ी से जहाज परिवहन को अरब सागर तक जोड़ने की इच्छा से यह विवाद खड़ा हुआ है और करोड़ों हिन्दुओं की धर्म आस्था से खेलने का दुष्प्रयास किया है। उनकी कुनीति और अधर्मी षड़यंत्र में फंसकर भारत सरकार ने लंका और भारत के बीच में नहर निर्माण की अनुमति दे दी। जब देश के बहुसंख्यक हिन्दू-समाज ने इसका विरोध किया तो इस जन आस्था के मामले को सर्वोच्च न्यायालय में इसे विवादित विषय बनाया गया। तमिलनाडु की हिन्दू-विरोधी सरकार के स्वर में स्वर मिलाते हुए केन्द्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में कहा कि रामसेतु जैसी चीज कभी थी ही नहीं। प्रकारान्तर से उन्होंने कोटि-कोटि हिन्दुओं के आराध्य भगवान राम के अस्तित्व को ही चुनौती दे डाली। इस महापापकीय अक्षम्य करतूत से जब हिन्दू-समाज में उग्र प्रतिक्रिया हुई और संवैधानिक आधार पर सर्वोच्च न्यायालय ने भी जन-आस्था से न खेलने की नीति-निर्देशक बात कहीं, तब केन्द्र सरकार ने दूसरा पैंतरा खेला। उसने तमिल में लिखी "कम्बन रामायण" और पद्मपुराण का हवाला देते हुए कहा कि भगवान राम ने स्वयं ही उस सेतु को तीन स्थानों पर तोड़ दिया था, ताकि भविष्य में कोई भी इस सेतु से लंका न जा सके। स्वयं लंका सरकार ने "रामसेतु" के अस्तित्व को स्वीकारा है। अनेक पर्यावरण-प्रेमियों ने उसे एडम ब्रिज कहते हुए कहा है कि यहाँ के समुद्री जल के भीतर बचे शैल-खण्डों के साथ यदि छेड़छाड़ हुई तो इसका न केवल जलीय जन-जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा बल्कि इससे परिस्थितिकीय और पर्यावरणीय दोनों स्वरूप प्रभावित होंगे। हिन्दु समाज के लिए यह धार्मिक तीर्थस्थल है, और करोड़ों हिन्दुओं का पूजा-विश्वास का स्थल है, जिसे क्षति पहुँचाने से उनकी भावनाएँ निश्चित रूप

से आहत होंगी। इन सभी का मत है कि रामसेतु मुद्दे पर केन्द्र सरकार के पास कोई ठोस तर्क या सबूत नहीं है। वह रामायणों में टकराव कराकर अपनी साजिश को सफल करना चाहती है जिसे हिन्दु समाज कभी स्वीकार नहीं करेगा। चाहे गिलहरी के सिकताकणों का संदर्भ हो या भगवान राम की समग्र गाथाओं का, श्री त्यागी के अनुसार साहित्य में वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक-पुराण, रामायण आदि में श्रीराम और श्री रामसेतु की महिमा और उसमें जन-स्वीकृति का गान है। भारत का पूरा गौरव हमारे पुराण-इतिहास में ही नहीं समग्र हिन्दु समाज की रग-रग में समाया हुआ है। जब तक वह सजीव बनकर हमें प्रेरणा देता रहेगा तब तक भारत जिन्दा रहेगा। श्री त्यागी ने यह सही लिखा है कि हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल मुस्लिमकाल ही रहा जिसमें भक्ति और रीति-काव्य का सृजन पनपा और जिसने भाव और अभिव्यक्ति के शिखर को स्पर्श किया। हिन्दी साहित्य का गौरव जिस महाकाव्य रामचरित मानस पर आश्रित है, उसमें उसी राम की गाथा गायी गई है। उन गाथाओं को सजीव बनाये रखने वाले उपकरण सदैव हमारे सामने दिखाई देते रहे हैं। अंग्रेजों के काल में ''रघुपति राघव राजा राम'' गीत गाकर हमारे पुरुषार्थ को जगाये रखने की अमर गाथाओं का वर्णन इस कृति में श्री त्यागी ने विस्तार से लिखा है। रामायण का एक गुटका अपने साथ मारीशस ले जाने वाले भारतीय मजदूरों ने अपने आपको टूटकर बिखरने नहीं दिया। यह संदेश इस कृति में है और ऐसा हमारा दृढ़ समाज था- यह अभिव्यक्ति है। अब वोट की राजनीति में वही भारत एक विशेष समुदाय को प्रसन्न करने के लिए और हिन्दुओं को तोड़ने के लिए श्रीराम के अवतार पर ही प्रश्नचिन्ह लगाकर आघात करता है, तो यह घोर आपत्तिजनक है।

''ज्ञानी नाम अग्रहण हनुमान जी'' को केन्द्र में रखकर श्री त्यागी की यह कृति मेरे मतानुसार श्री त्यागी के नाम के अनुरूप धर्म-आस्था और सत्य-शोधन की असाधारण अमर कृति भारतीय वांग्मय में दर्ज होगी। मेरे पास श्री त्यागी के इन श्लाघनीय प्रयत्नों के लिए वे शब्द न्यून हो रहे हैं जिनसे मैं उनकी आत्मीय सराहना कर सकूँ। ''शुभास्ते पंथानाः ॥

**बबन प्रसाद मिश्र**

अध्यक्ष,

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी शोधपीठ

# प्राक्कथन

वेद-शास्त्रों, उपनिषद-पुराणों तथा रामायण एवं महाभारत में इतिहास है। पं. नीलकण्ठ शास्त्री ने लगभग 500 वर्ष पूर्व मंत्र-रामायण की रचना कर वेदों में राम-कथा की ऐतिहासिकता प्रतिपादित की। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण के साथ-साथ लोमश-रामायण, नारद, रामायण, कौशिक रामायण, तुलसी रामायण आदि की प्रामाणिक राम-कथा का विशद वर्णन अनेक दृष्टियों से प्रस्तुत ग्रंथ में प्रस्तुत हुआ है।

श्रीराम-कथा को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास महर्षि वाल्मीकि ने किया। श्रीराम का नाम श्री रामचंद्र के रूप में किस प्रकार विकसित हुआ ? आदि कवि ने श्रीराम के मुख की तुलना अनेक स्थलों पर चंद्रमा से की। उन्हें 'सोमवत्प्रियदर्शन-(2/2/28) कहा गया है, कहीं उन्हें 'पूर्णचंद्रानन (2/1/44) बतलाया गया है और कहीं 'लोककान्तः शशीपथा'-(5/34/28) कहा गया है। इस सादृश्यविधान से उनका नाम श्रीराम से श्री रामचंद्र के रूप में विकसित और प्रसिद्ध हुआ।

श्रीराम अपने उदात्त एवं महान चरित्र के कारण भारतीय संस्कृति के प्रतीक बन गये हैं। वे कभी झूठ नहीं बोलते-'रामोद्धिर्नाभिभाषते'-(2/18/30) वे पिता की सेवा करना तथा आज्ञा का पालन करना अपना धर्म मानते हैं -'न ह्यते धर्मचरणं किंचिदस्ति महत्तरम्। यथा पितरि सुश्रुषा तस्य व वचन क्रिया।' (2/19/22) वे कभी भी पराई स्त्री पर दृष्टि नहीं डालते-'न रामः परदारान्स चक्षुर्म्यामपि पश्चति (2/72/48)

श्रीराम की सबसेबड़ी विशेषता उनका संतुलन बनाये रखने में है। वे धर्म परायण तो हैं, किन्तु संसार के भोगों से विरत नहीं हैं। सुग्रीव के प्रति उनका यह कथन उनके पूर्ण मानव होने का प्रमाण है :-

धर्ममर्थ च कामं च काले यस्तु निषेवते।
विभज्य सततं वीर स राज हरि सत्तमम ॥

अर्थात् जो धर्म, अर्थ और काम के लिए समय का विभाग करके सदा उचित समय पर उनका न्याययुक्त सेवन करता है, वही श्रेष्ठ राजा है। इसके विपरीत जो धर्म-अर्थ का त्याग करके केवल काम का ही सेवन करता है, वह वृक्ष

की अगली शाखा पर सोये हुए मनुष्य के समान है। गिरने पर ही उसकी आँखे खुलती हैं-

हित्वाधर्म तथार्थ च कामं यस्तु निषेवते।
स वृक्षाग्रे यथा सुप्तः पतितः प्रतिबुध्यते॥ (4/88/20-22)

धर्म को अत्यधिक महत्व देते हुए तथा उसे संसार का सार सिद्ध करते हुए सीता जी श्रीराम से कहती है :-

धर्मादर्थः प्रभवतिधर्मात् प्रभवते सुखम्।
धर्मेण लभते सर्व धर्मसारमिदं जगत्॥ (3/9/30)

धर्म से ही अर्थ प्राप्त होता है, धर्म से ही सुख का उदय होता है और धर्म से ही मनुष्य सब कुछ पा लेता है। इस संसार में धर्म ही सार है। धर्म सघन सद्गुण है। विभीषण के प्रति शरणागत वत्सलता श्रीराम के आचरण की श्रेष्ठता सिद्ध करती है। वे इस अवसर पर कहते हैं -

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्वभूतेब्यो ददान्येतद व्रतं मम॥ (6/18/33)

जो एक बार भी मेरी शरण में आकर-'मैं तुम्हारा हूँ-ऐसा कहकर मुझसे जो रक्षा की प्रार्थना करता है, उसे मैं समस्त प्राणियों में अभय कर देता हूँ - यह मेरा सदा के लिए व्रत है। देवद्रोही राक्षसों के संहार के लिए आप मर्त्यलोक में अवतार लेने का निश्चय करते हैं और उन्हें पुत्र,पौत्र, अमात्य, मंत्री और बन्धु-बांधवों सहित युद्ध में नष्ट करने का संकल्प करते हैं :-(1/15/28-29)

वे सीता जी द्वारा अरण्य में निरपराध प्राणियों को न मारने और अहिंसा का पालन करने के उनके अनुरोध को अत्यंत शालीनता के साथ अस्वीकार करते हैं। वे अपने जीवन के उद्देश्य को प्रकट करते हुए कहते हैं कि उनका अवतरण ही राक्षसों के विनाश के लिए हुआ है। वे क्षात्रधर्म के विषय में कहते हैं-'क्षत्रियैर्धार्यिते चापो नार्तशब्दोमवेदिति'-(3/10/3) वे कहते हैं कि क्षत्रिय इसीलिए धनुष धारण करतेहैं, जिससे कि आर्त शब्द कहीं सुनाई न पड़े अर्थात् कोई किसी को पीड़ित न करे। श्रीराम ने इस प्रकार स्पष्ट किया कि शस्त्रधारी की सार्थकता लोकरक्षा में है और इस उद्देश्य की सिद्धि में उसे कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। श्रीराम अपने इसी संकल्प के कारण लोक में अजर-अमर हैं और यही है उनका अमर संदेश आने वाली पीढ़ियों के राजाओं के लिए कि वे अपने तथा प्रजा के धर्म, उनकी आस्था

और उनके विश्वास की रक्षा करें।

अप्यहं जीवितं जह्यां त्वां वा सीतेसलक्ष्मणम्।
न तु प्रतिज्ञां संश्रुत्य ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः ॥ (3/10/18)

वे सीता जी से कहते हैं कि मैं अपने प्राण छोड़ सकता हूँ। तुम्हारा और लक्ष्मण का भी मैं परित्याग कर सकता हूँ, किन्तु अपनी प्रतिज्ञा को, विशेषतः ब्राह्मणों के लिए की गई प्रतिज्ञा को, कदापि नहीं तोड़ सकता।

सीता जी के इस कथन में श्रीराम के चरित्र की उदात्तता के सहज ही दर्शन होते हैं :-

श्रीण्येव व्यसनान्यत्र कामजानि भवन्त्युत।
मिथ्यावाक्यं तु परमं तस्माद् गुरुतराविभौ ॥
परदाराभिगमनं विना वैरं च रौद्रता ॥
मिथ्यावाक्यं न ते भूतं न भविष्यति राघव ॥
कुतोऽभिलक्षणं स्त्रीणो परेणां धर्मनाशनम्।
तव नास्ति मनुष्येन्द्र न चाभूव ते कदाचन्। (3/9/3-5)

इस जगत में काम से उत्पन्न होने वाले तीन ही व्यसन होते हैं। मिथ्याभाषण बहुत बड़ा व्यसन है, किन्तु उनसे भारी दो व्यसन और हैं - परस्त्रीगमन तथा बिना वैर के ही दूसरों के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार। इनमें से रघुनंदन ! मिथ्याभाषण रूप व्यसन न तो आप में कभी हुआ है और न आगे कभी होगा ही। पर स्त्री विषयक अभिलाषा तो आपको हो ही कैसे सकती है ? नरेन्द्र ! धर्म का नाश करने वाली यह कुत्सित इच्छा न आपके मन में कभी हुई थी, और न कभी भविष्य में होने की संभावना ही है।

मनस्यपि तथा राम न चैदद विद्यते क्वचित्।
स्वदारनिरतश्चैव नित्यमेव नृपात्मज ॥
धर्मिष्ठः सत्यसंघश्च पितुर्निर्दिशकारकः।
त्वयि धर्मश्च सत्यं च त्वयि सर्वे प्रतिष्ठितम् ॥ (3/9/6-7)

राजकुमार श्रीराम ! यह दोष तो आपके मन में कभी उदित नहीं हुआ है, फिर वाणी और क्रिया में कैसे आ सकता है ? आप सदा ही अपनी पत्नी में अनुरक्त रहने वाले सत्यप्रतिज्ञ तथा पिता की आज्ञा का पालने करने वाले हैं। आपमें धर्म और सत्य दोनों की स्थिति है। आप में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है।

श्रीराम पारिवारिक जीवन के आदर्श हैं। पिता के प्रति उनके हृदय में अनन्य श्रद्धा है। वे सीता जी से कहते हैं -

न सत्यं दानमानौ वा यज्ञो वाप्याप्रदक्षिणाः।
तथा बलकराः सीते यथा सेवा पितुर्मता ॥ (2/30/35)

पिता की सेवा करना कल्याण की प्राप्ति का जैसा प्रबल साधन है, वैसा न सत्य है, न दान है, न मान है और न पर्याप्त दक्षिणावाले यज्ञ ही हैं। गुरुजनों की सेवा का अनुसरण करने से स्वर्ग, धन-धान्य, विद्या, पुत्र और सुख कुछ भी दुर्लभ नहीं है-'गुरुवृत्यनुरोधेन न किंचिदपि दुर्लभम् (2/30/36)। ऐसे महापुरुष देवलोक, गन्धर्व-लोक, गोलोक तथा अन्य लोकों को भी प्राप्त कर लेते हैं -

देवगन्धर्वगोलोकान् ब्रह्मलोकान्स्तथापरान्।
प्राप्नुवंति महात्मानो मातापितृपरायणाः ॥ (2/30/37)

श्रीराम आदर्श भ्राता हैं। भरत के प्रति उनके हृदय में अगाध स्नेह है। वे अयोध्या का राज्य भरत को दे देने में अपार आनंद का अनुभव करते हैं। इसीलिए कैकेयी को वर देकर धर्मसंकट में छटपटाते हुए राजा दशरथ से श्रीराम स्पष्ट शब्दों में कहते हैं :-

इयं सराष्ट्रासजना धनधान्य समाकुला।
मया विसृष्टा वसुधा भरताय प्रदीयताम् (2/34/41)

राष्ट्र और यहाँ के निवासी मनुष्यों सहित धन-धान्य से सम्पन्न यह सारी पृथ्वी मुझे नहीं चाहिए। आप इसे भरत को दे दें। इसी के साथ ही आगे फिर कहते हैं :-

अहं निदेशं भवतो यथोक्तमनुपालयन्।
चतुर्दश सभा वत्स्ये वने वनचरैः सह।
मा विमर्शो वसुमती भरतायप्रदीयताम् ॥

मैं आपकी आज्ञा का पालन करता हूआ चौदह वर्षों तक वन में वन्य प्राणियों के साथ निवास करूंगा। आपके मन में अन्यथा विचार नहीं होना चाहिए। आप यह सारी पृथ्वी भरत को दे दीजिए। औगे श्री राम भरत के सद्गुणों का वणर्झन करते हुए वे तृप्त नहीं होते। चित्रकूट में लक्ष्मण जी के रोष को शान्त करते हुए वे कहते हैं :-'भरतोभ्रातृवत्सलः मम प्राणैः प्रियतरः' (2/97/9) भरत बड़े भ्रातृभक्त हैं। वे मुझे प्राणों से भी प्रिय हैं। वे उनके यहाँ ससैन्य आगमने के

औचित्य को सिद्ध करते हुए कहते हैं :-

श्रुत्वाप्रव्राजितं माहि जटावल्कलधारिणम् ।
जानक्या सहितं वीर त्वया च पुरुषोत्तम ।
स्नेहेनाक्रान्तहृदयः शोकेनाकुलितेन्द्रियः ।
द्रष्टुगम्यागतो ह्येषं भरतो नान्यथाऽऽगतः ॥ (2/97/10-11)

मुझे तो ऐसा ज्ञात होता है कि भरत अयोध्या आने पर जब यह सब सुना कि मैं तुम्हारे और जानकी के साथ जटा-वल्कल धारण करके वन में आ गया हूँ, तब उनकी इंद्रियां शोक से व्याकुल हो उठी हैं और वे कुलधर्म का विचार करके स्नेहयुक्त हृदय से हम लोगों से मिलने आये हैं। इन भरत के आगमन को इसके अतिरिक्त कोई अन्य उद्देश्य नहीं हो सकता। भरत के प्रति उनके अखण्ड विश्वास की सहज अभिव्यक्ति उनके इस कथन में स्पष्ट परिलक्षित होती है :-

उच्यमानोहि भरतो मया लक्ष्मण तद्वचः ।
राज्यस्मै प्रयच्छेत् बादमित्येव मंस्यते ॥ (2/98/8)

यदि मैं भरत से यह कहूँ कि तुम राज्य इन्हें दे दो तो वे अच्छा कहकर अवश्य ही मेरी बात मान लेंगे। भरत जी श्रीराम के अनन्यभक्त हैं। उनकी कर्तव्यपरायणता एवं धर्मनिष्ठा की प्रशंसा करते हुए श्री राम कभी नहीं थकते। उनके लिए अपापदर्शिनं शूरं कृतात्मनं यशस्विनम्। (2/73/22) आदि अनेक विशेषणों का प्रयोग करते हैं। कैकेयी से भरत जी कहते हैं कि श्रीराम किसी की बुराई नहीं देखते। वे शूरवीर, पवित्रात्मा और यशस्वी हैं। उनकी समत्वबुद्धि की पुष्टि करते हुए कहते हैं :-

यथा मृतस्तथा जीवन यथासति तथा सति ।
यस्यैष बुद्धिलाभः स्यात् परित्येत केन सः । (2/106/4)

श्रीराम के लिए जैसा जीवन, वैसी मृत्यु, जैसा होना वैसा न होना, सब समान है। ऐसा समत्व, जिसकी बुद्धि में हों, उसको परिताप कहाँ से हो सकता है ?

भरत जी अयोध्या में राज्य की अचलता का हेतु चरणपादुकाओं को मानतेहैं, जिन्हें वे चित्रकूट से वापस आते समय श्रीराम से ले आए थे। प्रजाजनों से उनके इस कथन में उनकी इसी धारण की पुष्टि होती है :-

आम्यां राज्येस्थ्झितो धर्म पादुकाभ्यां गुरोर्मम् (2/115/16) । मैं इन्हें

आर्य श्रीरामचंद्र जी के साक्षात चरण मानता हूँ - छत्र धारयत क्षिप्रमार्यपादाविभौ मतौ।

इसी प्रकार श्रीराम और लक्ष्मण का प्रेम भी ऐसा ही है। महर्षि वाल्मीकि ने सदा ही रामस्य दक्षिणा बाहु कहा है। शक्ति लगने पर श्रीराम ने भाई के लिए जो करुणाविलगित विलाप किया है, उसे सुनकर विश्व का कौन ऐसा कठोर हृदय होगा, जिसके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित न होगी। उनके उस विलाप में भाई की महिमा की जैसी सहज अभिव्यक्ति हुई है, वैसी विश्व-साहित्य में कहीं समानता नहीं है। वे विलाप करते हुए कहते हैं :-

देशे-देशे कलत्राणि, देशे देशे च बान्धवः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्रातासहोदरः ॥ (6/101/15)

प्रत्येक देश में स्त्रियाँ मिल सकती हैं, देश-देश में जाति-भाई उपलब्ध हो सकते हैं, परन्तु मुझे ऐसा कोई देश दिखाई नहीं देता, जहाँ सहोदर भाई मिल सके। प्रस्तुत उद्धरण भी श्रीराम के अगाध स्नेह, अनुराग तथा आत्मीयता का परिचायक है -

नहि मे जीवेतेनार्थः सीतया च जयेन वा
कोहि मे जीवितेनार्थस्त्वयिपंचत्वमागते। (6/101/94)

तुम्हारे बिना जीवन की रक्षा से सीता से अथवा विजय से भी कोई मतलब नहीं है। जब तुम्ही न रहोगे तब मैं इस जीवन को रखकर क्या करूंगा ? वास्तव में लक्ष्मण-शक्ति का यह सम्पूर्ण प्रसंग अत्यंत करुण मर्मस्पर्शी, भातृप्रेम की गुरुता, पवित्रता तथा विशदता का परिचायक है।

कृतज्ञता-ज्ञापन चित्त की निर्मलता का परिचायक है। प्रस्तुत उदाहरण जहाँ तत्कालीन शिष्टाचार को रेखांकित करता है, वहीं श्रीराम के चारित्रिक-सौंदर्य पर भी प्रकाश डालता है। राज्याभिषेक के उपरान्त श्रीराम हनुमान जी के उपकारों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं :-

एकैकस्योपकारस्य प्राणान् दास्यामि ते कपे।
शेष्येहोपकाराणां भवान ऋषिणों वयम्।
मदङ्गे जीण4तां यातु यत् त्वयोपकृतं कपे।
नरः प्रत्युपकारणारामायत्स्वायाति पात्रताम् ॥ (7/40/23-24)

कपे ! तुमने जो मुझ पर उपकार किये हैं, उनमें एक-एक के लिए मैं

अपने प्राण न्यौछावर कर सकता हूँ। तुम्हारे शेष उपकारों के लिए मैं ऋणी ही रह जाऊंगा। कपिश्रेष्ठ ! मैं तो यह चाहता हूँ कि तुमने जो-जो उपकार किये हैं, वे सब मेरे शरीर में ही पच जाएं। उनको चुकाने का कभी मुझे अवसर न मिले, क्योंकि पुरुष में उपकार का बदला पाने की योग्यता आपत्तिकाल में ही आती है। मैं नहीं चाहता कि तुम भी कभी संकट में पड़ो और मैं तुम्हारे उपकार का बदला चुकाऊँ। श्रीराम अपनी भूल के लिए क्षमा-याचना भी करते हैं। उन्होंने सीता जी के परित्याग के लिए महर्षि वाल्मीकि से क्षमा माँगी :-

लोकोपवादो बलवान् येन त्यक्त्वा हि मैथिली।
सेयं लोकभयाद् ब्रह्मन्नपापेत्याभिजानता।
परित्यक्ता मया सीता तद् भवान क्षन्तुमर्हति ॥ (7/97/4)

लोकोपवाद से विवश होकर मुझे मैथिली का परित्याग करना पड़ा है। ब्रह्मण ! यह जानते हुए भी कि सीता निष्पाप है, मैंने केवल समाज के भय से ही उन्हें छोड़ दिया था, अतः आप मेरे इस अपराध को क्षमा करें।

इस प्रकार अपने इन्हीं श्रेष्ठ गुणों के कारण ही श्रीराम मर्यादा की चरम सीमा है और इसीलिए वे आज भी सम्पूर्ण मानवता के लिए श्रृंगार हैं। निस्संदेह उनका आदर्श जीवन जन-जन के लिए उदात्त जीवन जीने की अदम्य प्रेरणा है।

- इंजी अमरनाथ त्यागी
'मानस-मर्मज्ञ'
महासचिव, छ.ग. हिंदी साहित्य मंडल
रायपुर

# अनुक्रम

# राम-सेतु के संरक्षक हनुमान

[ इंजी. अमरनाथ त्यागी ]
'मानस-मर्मज्ञ'

राम से है नेह, स्वर्ण शैल के समान देह,
ज्ञानियों में अग्रगण्य,गुण के निधान हैं।
महाबलशाली हैं, अखण्ड ब्रह्मचारी, यति,
वायु के समान वेग,शौर्य में महान हैं॥
राघव के दूत बन, लंक में निशंक गए,
सीता सुधि लाए, कपि-यूथ के प्रधान है।
भक्त-प्रतिपाल, क्रूर, दानवों के काल-व्याल,
रक्षा राम सेतु हेतु वीर हनुमान हैं।

✤

वैदिक संस्कृति में इतिहास के दो प्रकार माने गए हैं। एक है नित्य(शाश्वत) इतिहास और दूसरा है लौकिक इतिहास। पूरे कल्प को दस अथवा चौबीस काल खंडों में बाँट कर और उनके प्रतिनिधि नित्य अवतारों की लीलाओं तथा उस काल की धार्मिक,सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक परिस्थितियों और युग-मूल्यों आदि का सांगोपाग वर्णन ही नित्य इतिहास कहलाता है। यही इतिहास प्रत्येक कल्प में थोड़े-बहुत अंतर के साथ अपने आप को दोहराता रहता है। यही नित्य इतिहास हमें वेदों और समस्त वैदिक वाङ्मय में प्राप्त होता है।

लौकिक इतिहास तो हम सब जानते ही हैं। पश्चिमी देशों की नव-अंकुरति संस्कृतियों और उन मूल्यों पर आधारित जड़वादी चिंतन और उन मूल्यों में ढलकर आई जिन पद्धतियों से हम लौकिक इतिहास लिखने की चेष्टा कर रहें हैं, वह मानव के श्रेयस की दृष्टि से निरर्थक एवं अनुपयोगी तो है ही, वह श्रम साध्य तथा अर्थसाध्य भी है। इतिहास आदि लेखन की पद्धति को यदि मानव-जाति इसी प्रकार अपनाती रही तो एक कल्प के इतिहास को सुरक्षित रखने के लिए अनेक नगरों के बराबर पुस्तकालयों आदि की व्यवस्था करने की आवश्यता होगी। फिर भी उसके अध्ययन- अध्यापन से मानव कल्याण के लिए कोई सार-तत्व इस मानव-जाति को प्राप्त होने की कोई संभावना नहीं है। ऐसी दशा में नृशंस, मदांध, मानवता के नाम पर कलंक और अत्याचारी राजाओं की अपेक्षाकृत कुछ उपयोगी महापुरुषों, राजाओं और नित्य अवतारों का इतिहास ही मानव-समाज एवं विश्व के लिए लाभदायक हो सकता है। इसीलिए नित्य इतिहास की परिभाषा हमारे वैदिक-वाङ्मय में इस प्रकार की गई है।

धर्मार्थकाममोक्षामुपदेश समन्वितम् ।
पूर्ववृत्त कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते ।।

विष्णुधर्म.। 3 । 15 । 1 ।।

महाभारत के प्रसिद्ध भाष्यकार पं. नीलकंठ जी ने,आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व वेदों के लगभग 240 वेद-मंत्रों को उद्धृत करते हुए'मंत्र-रामायण' पर सुंदर भाष्य लिखा है। वह ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है और वह प्रकाशित है। ऋग्वेदीय सांकल संहिता के प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, नवम एवं दशम मंडल के निन्यानवें सूक्त आदि में श्री राम-कथा विस्तार पूर्वक अंकित है। विश्व की समस्त रामायण इन्हीं मंत्रों के भाष्य हैं। विश्व के तमाम ऋषि-मुनियों और कवियों ने इन्हीं मंत्रों पर विभिन्न दृष्टिकोणों से चिंतन-मनन करके श्रीराम कथा का विस्तार किया है। इसलिए पवनपुत्र हनुमान जी की वैदिकता पर सर्वप्रथम विचार करना समीचीन होगा।

स हि द्युता विद्युता वेति,
सामं पृथुयोनिम सुरत्वाससाद ।
स सनीडेभिः प्रसहानो अस्य,
भर्तुर्न ऋते सप्तथस्य माया : ।।

(ऋग्वेद 10-99-2)

वही प्रसिद्ध राम द्योतमान अपनी अभिव्यक्ति से तथा विशेषतया प्रकाशमान माया शक्ति से, आसुरी उपद्रवों के शमन निमित्त, बहुलता से अवतरित होता है। रावण आसुरी योनि के कारण पृथ्वी से उत्पन्न होने वाली सीता को चुरा ले गया। उस राम पर समान लोकवासी देवताओं हनुमानदि वानरों के स्वामी सुग्रीव सहित सांग्रामिक अनेक कष्टों को सहन करते हुए, सातवें व्यक्ति (विष्णु, ब्रह्मा, कश्यप, मरीचि, पुलस्त्य, विश्रवा, रावण) की कूटनीति का प्रभाव, श्री सत्यस्वरुप भगवान श्रीराम पर नहीं हुआ। इसी प्रकार हनुमानजी की सहायता संबंधी चर्चा पर दृष्टिपात करें -

स रुद्रेभिरशस्तवार ऋभ्वा हित्वी गयमारे अवद्य आगात् ।
वभ्रस्य मन्ये मिथुना विवत्री अन्नमभीत्यारोदयन् मुषायन् ।।

-(ऋक10-99-5)

वह राम, रुद्रावतार हनुमान आदि की सहायता से अग्नि- परीक्षा द्वारा संशोधन करके ऋतसे भासमान देवी सीता सहित अयोध्या को आ गए। पश्चात रजकनिन्दा के कारण उन्हें त्याग दिया। वाल्मीकि के यमल शिष्य(लव और कुश) रामायण ग्रंथ के विवरण करने वाले हुए। मिथ्या अपवादों के कारण परित्यक्ता सीता रुदन करती थी। हनुमान जी के सेवा-कार्यों का स्मरण करते हुए उनकी प्रार्थना का वेद-मंत्र दृष्टव्य है :-

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।।(ऋक01-12-1)

दैत्य-वन के दाहक अग्नि को, जनकल्याण के लिए धराधाम पर अयोध्या में अवतीर्ण, दशरथ नंदन श्रीराम के दूत को, जिस वीराग्रणी महानुभाव ने प्रभु श्री राम की प्रसन्नता के लिए समुद्रोल्लंघन, सीता-अन्वेषण, युध्दभूमि में मूर्च्छित लक्ष्मण के पुनर्जीवन के लिए संजीवनी आदि लोकोत्तर पराक्रम किए, उन हनुमान जी को हम भक्त लोग उपास्य रूप में स्वीकार करते हैं, अथवा,हम उनकी प्रार्थना करते हैं।

हनुमानजी के ध्यान के निम्नलिखित श्लोक में भी उपर्युक्त मंत्र के ही पदों से सूचित भाव समाए हुए हैं।

**मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।**
**वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥**

वेद-मंत्रों में हनुमान जी हन्मन शब्द द्वारा निर्दिष्ट हुए हैं :-

**अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्याऽवर्धत मध्य आ नाव्यानाम् ।**
**सध्रीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभि द्यून् ॥**

(ऋक 01-33-11)

अन्तरिक्ष स्थित समुद्र (मेघ के उदर में स्थित जलराशि रूप समुद्र) में जाने पर भी वे साधारण प्राणियों की तरह डूबे नहीं, अपितु वे विशाल आकृति धारण कर वहां विचरते रहे और यह प्रयास कहते रहे कि इन्द्र के ऐरावत को पकड़कर भक्षण कर लें। इन्द्र के भगाने पर वे उल्टे उसे ही सताने लगे। अन्त में चिढ़कर क्रुद्ध इन्द्र ने उन पर प्रहार कर दिया। हनुमान जी मन के समान शीघ्र गति से इन्द्र के साथ-साथ चलते रहे। उनकी चेष्टा थी कि किसी तरह इन्द्र के वाहन ऐरावत को वे भोज्य बना लें। अतः 'हन्मना'- हनुमान से पीड़ित होने के कारण उन्हें विवश होकर उन पर वज्र प्रहार करना पड़ा।

इस प्रकार हम देखते है कि वेद में दूत शब्द विभक्ति भेद से 90 बार, हनू शब्द 4 बार और हन्मना शब्द जो तृतीयान्त'हनुमता' शब्द का रुपांतर है 5 बार प्रयुक्त हुआ है। अतः वेद में सौ से अधिक बार मंत्रों में हनुमत्परक व्याख्या हमें प्राप्त होती है। इसी तरह प्रथम मंत्र से हनुमान जी की वंदना करते हुए ऋग्वेद को प्रारंभ किया गया है :-

**अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं**
**होतारं रत्नधाततम् ॥ ऋक् 01-01-01॥**

वानरराज सुग्रीव ने पहले जिन्हें मैत्री के लिए श्रीराम के समीप भेजा और युद्धारम्भ होने से पूर्व जिन्हें श्री सीता जी की खोज के लिए भेजा गया तथा समुद्र पार कर जो दैत्यों को कंपाने वाले हैं और जो युद्ध के लिए राक्षसवृंद को आह्वान करने वाले हैं, सीताजी के लिए पहचानने के लक्ष्य से श्रीराम द्वारा दी गई रामनामांकित अंगूठी के धारक और सीता जी द्वारा दी गई चूड़ामणि को ग्रहण

करने वाले बुद्धिमान दूत वायुपुत्र हनुमान जी की मैं स्तुति पूर्वक वंदना करता हूँ। वेद में अनेक स्थलों पर हनुमान जी के लिए 'अपां नपात और अपां नप्त्र' शब्द का प्रयोग किया है :-

**हिरण्यरूपःस हिरण्यसंदृगपां नपात् सेदु हिरण्यवर्णः ।**
**हिरण्ययात्परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै ॥**

-ऋक् ॥ 02-35-10 ॥

वह हिरण्यमय शरीर युक्त तथा हिरण्यमय इन्द्रियों से समलंकृत है। अतः वह निश्चित ही स्वर्ण के समान (हेमशैलाभदेहं) कांति से शोभित है। जो सूर्य मंडल के ऊपर स्थित होकर सुशोभित हो रहा है। स्वर्ण का दान करने वाले संपन्न भक्त इस देव हनुमान के लिए अन्नोपलक्षित मधुर मोदकादि पदार्थों से भोग लगाते हैं। अब हम हनुमान जी की लीलाओं और उनके अद्भुत कार्यों का वेदमत्रों के माध्यम से दिग्दर्शन करें :-

**देवास आयन् परशूँ रबिभ्रन,**
**वना वृश्चन्तो अभि विड्भिरायन्।**
**निसिद्रुवं दधतो वक्षणासु,**
**यत्रा कृपीटमनु तद्दहन्ति ॥**

-ऋक् ॥ 01-28-8 ॥

सीताजी का संदेश श्रीराम जी के लिए लेकर, हनुमान जी रावण की अशोक वाटिका को उजाड़ने लगे और रखवालों के रोकने पर उन्हें मारपीट कर इतना व्याकुल कर दिया कि जो बचे उनकी बुद्धि ही भ्रष्ट हो गई। जिससे उन्होंने समझा कि देवता लोग आकर उपद्रव कर रहे हैं। अतः बचे हुए घायल रक्षकगण जाकर रावण से कहने लगे।

बहुत से देवता लोग अशोक वन में आ गए हैं और वे हम लोगों के परशु आदि को छीनकर, हमारी संतानादि और परिवार सहित अशोकवन को एकदम उजाड़ते हुए, इधर-उधर चारों ओर हमें दौड़ा रहे हैं। अग्नि की तरह सब देवगण एक-एक पेड़ कुंज आदि को इस प्रकार तहस-नहस कर रहें है कि आस-पास के वृक्ष भी उनकी दहल से नष्ट हो जाते हैं। ऐसा सुनकर रावण विचारने लगा :-

**शशः क्षुरं प्रत्यञ्च जगाराद्रिं लोगेन व्यभेदमारात् ।**
**बृहन्तं चिद्दहते रन्धयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः ॥**

-ऋक् ॥10-28-9 ॥

जैसे तुच्छ पशु शशक तीक्ष्ण धार वाली कटार को निगलने की चेष्टा करता है और अपना अंत कर लेता है। अथवा जिसप्रकार दूर से कोई मिट्टी का ढेला मारकर पर्वत को चूर्ण करना चाहता हो - वही दशा अब मेरी है और जैसे कुछ दिन पहले जन्मा बछड़ा बढ़ कर बड़ा परिश्रमी बैल बन जाता है, वैसे ही मैं इस महान चैतन्य तत्व आत्मा का परित्याग करके और तुच्छ शारीरिक सुख के लिए

लोगों को पीड़ा पहुँचाकर, अपने पापों को बहुत बढ़ा चुका हूँ। तम प्रधान होने के कारण रावण का यह ज्ञान क्षण भर में ही लुप्त हो गया और उसने हनुमान जी को बांध कर लाने का विचार किया :-

**सुपर्ण इत्था नखमासिषायावरुद्धः परिपदं न सिंहः ।**
**निरुद्धश्चिन्महिषस्तर्ष्यावान् गोधा तस्मा अयथं कर्षदेतत् ॥**

-ऋक् ॥ 10-28-10 ॥

आकाश में पक्षी के समान विचरने वाले मायावी रावण ने इस प्रकार अनेक यत्न करके छेदन- भेदन आदि से कभी भी दुःखी न होने वाले हनुमान जी को बंधवाने के लिए ब्रह्मपाश का प्रयोग करवाया। परंतु हनुमान जी ब्रह्मपाश में घिरे होकर भी सिंह के समान चारों ओर घूमते थे। जिस प्रकार प्यासा भैंसा जल की ओर जाता है और जैसे मन चित्त वृत्तियों को खींच ले जाता है- उसी तरह ये राक्षसगण भी हनुमान जी को रोक रखने में असमर्थ होते हुए भी पाश में बांध कर उन्हें खींचने लगे। ब्रह्मपाश का अपमान न हो इसलिए देवतागण हनुमान जी की प्रार्थना करने लगे :-

**अक्षानहो नह्यत नोत सोम्या इष्कृणुध्वं रशना ओत पिंशत ।**
**अष्टाबन्धुरं वहताभितो रथं येन देवासो अनयन्नभि प्रियम् ॥**

-ऋक् ॥ 10-53-7 ॥

हे भगवद्भक्त परम वैष्णव हनुमान जी महाराज आपको बांधने आया राक्षस अक्ष कुमार स्वयं ही मृत्युपाश में बँध गया। आप कृपा कर इस ब्रह्मपाश बंधन को अभी स्वीकार कर लीजिए। बाद में चाहे आप इसे खण्ड-खण्ड कर डालें। दो हाथ, दो पाँव, दोनों कंधे और दोनों उरु इस तरह आठ जगह बंधे हुए, आप लंका पुरी में जाइए। जिससे देवतागण अपना अभीष्ट प्राप्त करें अर्थात् आपके लंका में जाने से देवताओं को सुख होगा। किन्तु बाद में रावण द्वारा हनुमान जी की पूँछ में आग लगवा देने का समाचार सुन श्री सीता जी अग्निदेव से प्रार्थना करती हैं :-

**रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म ।**
**शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ॥**

-ऋक् ॥10-87-1॥

राक्षसों को मारने वाले एवं परम वेग वाले हनुमान जी को इस दशा में देखकर मैं शोक सेआंसू बहाती हूँ, अतः उन अग्निदेव से जो आञ्जनेय के पिता पवन के मित्र तथा परम पवित्र एवं प्रतिष्ठित देवता हैं, उनसे वत्स हनुमान के कल्याण की कामना करती हूँ। पूर्वमें मेरे द्वारा श्रीराम के साथ यज्ञों में पूजित अग्निदेव स्वयं मेरे प्रिय वात्यल्यभाजन हनुमान जी की सदैव रक्षा करें।

**अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुपस्पृश जातवेदः समिद्धः ।**
**आ जिह्वया मूरदेवान् रभस्व क्रव्यादो वृक्त्व्यपिधत्स्वासन् ॥**

-ऋक् ॥10-87-2॥

हे अग्निदेव! आप लौहमय दाढवाले हैं। आप अपनी प्रज्वलित लपट से इन राक्षसों को चाट

जाइए। आप भूतकाल की सब बातें जानने वाले हैं। अतः हे सर्वज्ञ अग्निदेव ! खूब प्रज्वलित होकर अपनी जिह्वा से असुरों को सब प्रकार नष्ट कर दीजिए। इन मांसाहारी राक्षसों को एकत्र करके चबा डालिए।

**यत्रेदानीं पश्यसिजातवेदष्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरंतम् ।**
**यद्वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्ता विध्य शर्वा शिशान : ॥**

-ऋक् ॥ 10-87-6 ॥

हे अत्यंत तेज बाण चलाने वाले सर्वज्ञ अग्निदेव! इस समय वे राक्षसगण जहाँ कहीं भी हों , चाहे वे बैठे हों अथवा जल,निद्रा या आनंद में डूबे हों अथवा आकाश में विचरते हुए हों अथवा मार्ग में जाते हों उन सब राक्षसों को और उस दुष्ट रावण के घर की समस्त वस्तुओं और सम्पूर्ण राक्षसों को अपने तीक्ष्ण बाणों से बींध डालिए।

**पुरि त्वाग्ने पुरं वयं विप्र सहस्य धीमहिं ।**
**धृषद्वर्णं दिवे दिवे हन्तारं भङ्गुरावताम् ॥**

-ऋक् ॥10-87-22 ॥

हे तेजस्विन अग्निदेव! आप व्यापक हैं इस लिए शत्रु नगर को चारों ओर से घेर लीजिए ताकि कोई बाहर न जा सके। स्वयं अधर्षित रहकर दूसरों को धर्षित करने वाले अग्निदेव ! नित्यप्रति विनाश लीला मचाने वाले राक्षसों का नाश करने वाले आप की मैं प्रार्थना करती हूँ। आप इन श्रीरामदूत हनुमान की रक्षा कीजिए। इस अग्नि प्रार्थना के वेदमंत्रों का भावानुवाद श्री बाल्मीकि रामायण (5-53-27-30) में देखा जा सकता है। श्रीसीता जी का पता लगाकर जब हनुमान जी वानरों सहित श्रीराम के पास पहुँचे, उन क्षणों का वेद वर्णन द्रष्टव्य है :-

**हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते ।**
**उद्वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कवि चित् परिप्रियः ॥**

-ऋक् ॥ 09-72-1 ॥

तब परम शान्तस्वरुप श्रीराम हनुमानजी के ऊपर प्रेमयुक्त हाथ फेरने लगे। जैसे पञ्चगव्य युक्त कलश में सोमरस अच्छी तरह मिलाया जाता है। उसी तरह आंजनेय जी ने श्रीराम के प्रेमपूरित कलश को श्री सीता की प्रेमपूर्ण संदेश वाणी से पूर्ण कर दिया। वे कहने लगे कि जिनकी मति सदैव बढ़ी रहती है, ऐसे श्रीराम को जब ब्रह्मा-शिव आदि की स्तुतियां भी प्रसन्न करने में समर्थ नहीं होतीं, तब भला मैं आपकी महिमा का क्या वर्णन कर सकता हूँ। उसी प्रकार श्री राम भी हनुमान आदि वानरों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहते है :-

**क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो, वेनन्तिः वेना पतयन्त्या दिशः ।**
**न मर्डिता विद्यते अन्य एभ्यो, देवेषु मे अधि कामा अयंसत ॥**

-ऋक् ॥10-64-2॥

वानररूप में अवतरित सत्यसंकल्प देवता मेरी सेवा करने की इच्छा करते हैं। ये हृदय के

बड़े सरस हैं अथवा पूर्ण भक्त के रुप में शोभित हैं। ये जनकनंदिनी सीता की खोज में चारों ओर समस्त दिशाओं में गए। इन वानररूप देवताओं से बढ़कर दूसरा कोई भी मेरे लिए सुखदाता नहीं है। मेरे मनोरथ इन्हीं देवताओं के द्वारा सदा पूर्ण हुए हैं। इस कथन में हमें हनुमान जी के पराक्रम युक्त यश का दर्शन होता है। ऋग्वेद से उद्धृत एक मंत्र श्री सीतान्वेषण में तत्पर हनुमान जी का प्रसंग प्रस्तुत करते हुए, मंत्ररामायण के टीकाकार पं. नीलकंठ महाराज ने, हनुमान जी के रूप में प्रकट रूद्र द्वारा, रामायण की रचना करने की बात भी कही है :-

**सहस्रधारे वितते पवित्र आ, वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः ।**
**रुद्रास एषामिषिराषो अद्रुहः, स्पशः स्वञ्चः सुदृशोनृचक्षसः ॥**

-ऋक् ॥ 9-73-7 ॥

सर्वज्ञ व्यापक परम पवित्र और स्वरूप से ही सच्चिदानंदमय अनंत प्रवाह प्रकट करने वाले श्री राम के निमित्त कवि बाल्मीकि आदि उनके गुणगान के द्वारा अपनी वाणी पवित्र करते हैं। इन्हीं कवियों में रूद्र के अवतार हनुमान जी - अद्रोही, अद्‌भुत गति वाले,गुप्तचर, दूत, सुंदर संचरण वाले और नृचक्षा मानवमूर्ति सीता जी के प्रत्यक्षदर्शी हैं। इन्होंने सीता जी को लंका में ढूंढ निकाला और उनका साक्षात दर्शन किया। बाल्मीकि की भांति रुद्रावतार हनुमान जी ने भी रामायण आदि की रचना की है, किन्तु उनमें श्रीराम के प्रति दास्य भाव की अभिव्यक्ति अधिक हुई है। इसी तरह दूसरे लोगों को भी चाहिए किं वे श्री राम के स्तवन से वाणी को तथा दास्य सेवा से अपने शरीर को पवित्र करें।

**कृशानुमस्तृन तिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे ।**

-ऋक् ॥10-64-8 ॥

सर्वाभीष्ट फलप्रद वानराकार विग्रह शिव का संस्तवन करते हुए ऋषि कहते हैं कि हम रूद्रों के एक रूप हनुमान जी का जो शत्रु संहार में समर्थ हैं, अपने इष्ट की सिद्धि के लिए आह्वान करते हैं। आगे ऋषि कहते हैं कि हनुमान जी श्रीराम के पार्षद भी हैं :-

**स सनीलेभिः प्रसहानो...... मायाः ।**

-ऋक् ॥10-99-2 ॥

ऋग्वेद की निम्नांकित ऋचा मे हनुमान जी के समुद्र लंघन की इच्छा का अभिव्यंजन मिलता है :-

**प्रमातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन् कुमारो न वीरुधः प्रसर्पदुर्वीः ।**
**ससं न पक्कमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अंतः ॥**

-ऋक् ॥ 10-79-3 ॥

इसी प्रकार ऋग्वेद की एक अन्य ऋचा में मैनाक का स्पर्श करते हुए समुद्र लाँघने का उल्लेख हमें मिलता हैं :-

**अद्रिभिः सुतः पवते गभस्त्योर्वृषायते नभसा वेपते मती।**
**स मोदते नसते साधते गिरा नेनिक्ते अप्सु यजते परीमणि ॥**

-ऋक् ॥ 9-71-3 ॥

यहाँ समुद्र लंघन के समय हनुमान जी द्वारा मैनाक पर्वत के स्पर्श मात्र का वर्णन है। मैनाक ने समुद्र के मध्य से प्रकट होकर उनसे विश्राम करने का संकेत किया। किन्तु हनुमान जी ने हाथ से छू कर उसको सम्मानित किया और उन्होंने उसके पृष्ठभाग पर विश्राम नहीं किया।

हनुमान जी ने समुद्र को पार किया और अत्यंत रमणीय लंका में पहुँच गए। उन्होंने अशोक वाटिका में सीता जी का दर्शन कर उनके श्रवणों को अमृततुल्य मधुर वचनों से सींचना आरंभ किया :-

**उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु**
**मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि ॥**

-ऋक् ॥ 9-68-2 ॥

श्री रामदास अथवा विष्णु-भक्त के रूप में उन्होंने भगवती सीता को अपना परिचय दिया। हनुमान जी ने कहा कि मैंने श्रीराम के अनुग्रह से आपका दर्शन किया है। बिना भगवद् अनुग्रह के उनकी तेजोमयी शक्ति का दर्शन किसी के भी द्वारा संभव नहीं है।

" नेन्द्रादृते पवते धाम किंचन ॥"

-ऋक् ॥ 9-69-6 ॥

ऋग्वेद के निम्नांकित मंत्र से सिद्ध होता है कि भगवती सीता जी की आज्ञा से, उनके आशीर्वाद एवं वरदान से देवता, यक्ष गंधर्व आदि हनुमान जी की सेवा-अर्चा में तत्पर रहते हैं :-

**अत्राण्यस्मै पड्भिः सं**
**भरन्त्युत्तानहस्ता नमसाधि विक्षु ।**

-ऋक् ॥ 10.79.2 ॥

इसी प्रकार समस्त वेद-शास्त्र, उपनिषद, पुराणों आदि में हनुमान जी के उदात्त चरित्र का वर्णन आया है। वृहद्भागवतामृत में श्री नारद जी ने गोपकुमार को वेद-शास्त्र वर्णित हनुमान जी के आराध्य श्रीराम के गुणगान के साथ उनका स्मरण करते हुए कीर्तन करने की जो सीख दी है, उससे यह स्पष्ट होता है कि हनुमान जी का पुण्य चरित वेद-शास्त्र वर्णित है, क्योंकि प्रभु श्रीराम के कार्य संपादन में हनुमान जी के सहयोग की प्रमुखता एवं अभिन्नता है।

लंका अभियान ही श्रीराम-लीला का आधारभूत घटनाचक्र है और इस घटनाचक्र के

सूत्रधार हनुमान जी महाराज ही अधिक उपयुक्त प्रतीत होते हैं। हनुमान जी ने वेद, शास्त्र, व्याकरण, सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, महाभाष्य, छन्द शास्त्र आदि का भी गहन अध्ययन किया था। अपनी शंकाओं के समाधान के लिए वे अपने गुरुदेव भुवनभास्कर भगवान श्री सूर्यनारायण जी के पास जाते थे। पराक्रम, उत्साह, बुद्धि, प्रताप, नीति, गम्भीरता, धैर्य, ज्ञान और तपस्या के अनुष्ठान में हनुमान जी सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होते हैं।

श्री सीता-अन्वेषण में अशोक-वाटिका को नष्ट करके हनुमान जी ने तीन लक्ष्य साधे :- (1) साम, दाम, एवं भेद से अभेद्य शत्रु को अपने पराक्रम-प्रदर्शन द्वारा मुख्य आक्रमण के पूर्व आतंकित करना, (2) रावण की सैन्य-शक्ति का अनुमान लगाना और (3) श्री जानकी माता को दिये गये आश्वासनों का उन्हें विश्वास दिलाना।

श्री सीता-अन्वेषण के पश्चात लंका-विजय-अभियान में हनुमान जी का योगदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा। उस अगाध सागर पर पुल बाँधने की कल्पना को मूर्त रूप दिया श्री हनुमान जी ने। वे राम-नाम अंकित करके शिलाओं को समुद्र में डालते जाते थे और पत्थरों-वृक्षों आदि से देखते ही देखते वह श्रीराम-समुद्र-सेतु नल के शिल्प-कौशल द्वारा तैयार हो गया, जिससे लंका-विजय-अभियान की एक महत्वपूर्ण कड़ी पूर्ण हो गई। उस युग के राम-सेतु आदि के अवशेष आज भी विश्व-धरोहर के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

वाल्मीकि रामायंण में वर्णन आया है कि यह 100 योजन का पुल हनुमान जी के निर्देशन में और वास्तुविद नल-नील के कौशल से सहस्र कोटि महाबली एवं उत्साही वानरों द्वारा बनाया गया। प्रथम दिन 14 योजन लम्बा पुल तैयार हो गया। दूसरे दिन 20, योजन तीसरे दिन 21, चौथे दिन 22 और पाँचवे दिन 23 योजन का पुल तैयार हुआ। इस तरह एक सप्ताह से कम समय में इस विराट पुल का निर्माण हुआ। वे पर्वत के समान विशालकाय वानर पर्वत-शिखरों और वृक्षों को उखाड़कर या तोड़कर समुद्र तक खींच लाते थे। वे साल, अश्वकर्ण, धव, बाँस, कुटज, अर्जुन, ताल, तिलक, तिनिश, बेल, छितवन, खिले हुए कनेर, आम, अशोक आदि वृक्षों और करील, बकुल तथा नीम आदि को भी इधर-उधर से तोड़-तोड़ कर लाने लगे। इस प्रकार 100 योजन लम्बा एवं 10 योजन चौड़ा पुल बाँधते-बाँधते वह समस्त वानर सेना एवं श्रीराम-लक्ष्मण जी को लेकर हनुमान जी समुद्र के उस पार पहुँच गये।

ऐतिहासिक पुराणों एवं रामायणों के आधार पर यह रामसेतु 17 लाख 50 हजार वर्ष पुराना है। आज नासा उपग्रह आदि के चित्रों से भी इसकी प्राचीनता सिद्ध हो गई है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा बालकाण्ड एवं लंका काण्ड में दी गई तिथियों एवं उस समय ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों की स्थितियों को जब कम्प्यूटर में डालकर देखा गया, तो प्लै नेटेरियम साफ्टवेयर के माध्यम से यह निर्धारित हुआ कि उस प्रकार की खगोलीय घटनाएं सबसे पहले आज से 5114 ई. पू. दोपहर के समय ग्रह-नक्षत्र आदि की स्थिति बिल्कुल वही थी, जो महर्षि वाल्मीकि ने वर्णित की है। (श्री राम जन्म संबंधी) यदि लगभग 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व की गणना करें, तो श्रीराम जन्म चैत्र माह की नवमी तिथि को

उन्हीं ग्रह-नक्षत्रों के साथ हमें प्राप्त होगा।

आज उसी राम-सेतु को तोड़कर भारत-सराकर अमेरिका के कूटनीतिक दबाव में 'सेतु-समुद्रम्-पोत नहर परियोजना' को क्रियान्वित करने के प्रयास कर रही है, जिसे रोकने के लिए एक जन-आंदोलन चल रहा है, जिसे अधिक व्यापक एवं कारगर बनाने का भी उपक्रम किया जाना चाहिए। इस घटनाचक्र के पीछे का षड्यंत्र सचमुच एक राष्ट्र के लिए कल्याणकारी तो है ही नहीं, वह अशुभ संकेत भी है। इस संदर्भ में विश्व के घटनाचक्र को समझना दूरदर्शिता के लिए परम आवश्यक है। इस सेतु की सुरक्षा करना वैदिक संस्कृति की सुरक्षा करना भी है।

23 जून 2005 को अमेरिकी नौसेना ने भारत और श्रीलंका के मध्य समुद्री जल क्षेत्र को केलव इन दोनों राष्ट्रों के बीच का क्षेत्र मानने से इन्कार करके भविष्य के संकेत दे दिये थे। अमेरिका के कूटनीतिक दबाव में भारत सरकार ने इस परियोजना की स्वीकृति दी है - ऐसा प्रतीत होता है। तभी तो अतिशीघ्रता से 2 जुलाई 2005 को तमिलनाडु राज्य सरकार के सहयोग से भारत सरकार ने उक्त परियोजना का उद्घाटन करके, जन-आस्था का अपमान करने में किसी प्रकार का भी संकोच नहीं किया।

रामसेतु को तोड़ने के लिए विदेशी कम्पनियों की 6 मशीनें आईं, जो टक्कर मारते ही टूट गईं, जिन्हें मरम्मत करने के लिए वापिस अमेरिका भेजा गया तथा उनका नामकरण हनुमान किया गया। किन्तु पुनः कार्य में लगाने पर उनमें फिर खराबी आ गई। अब तक केवल 0.2 प्रतिशत सेतु ही टूट पाया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि रामसेतु के टूट जाने के पश्चात राष्ट्रसंघ के कानून के अनुसार यह मार्ग अंतर्राष्ट्रीय मार्ग घोषित हो जाएगा, जिससे भारत की आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा खतरे में पड़ जाएगी। तमाम विदेशी तस्कर एवं नशीले पदार्थों के सौदागर तथा अवैध हथियारों के व्यापारियों को रोकना असंभव हो जाएगा। इससे देश में आतंकवादी संगठनों पर लगाम लगाना अत्यंत कठिन होगा। यह चीन की दीवार से भी अधिक भारत के लिए दी गई श्री राम द्वारा अमूल्य सौगात है,जो हिमालय की तरह भारत की दक्षिणी सीमा की सुरक्षा करती है।

इस सेतु के टूटने से 20 लाख मछुआरों की जीविका समाप्त हो जाएगी। लगभग 3600 प्रकार की समुद्री वनस्पतियाँ और 450 प्रकार के जीव-जन्तुओं के अलावा अनेक प्रकार की मछलियों की दुर्लभ प्रजातियाँ भी समाप्त हो जाएंगी। इस सेतु को तोड़ने पर जो एक करोड़ क्यूबिक मीटर मलबा निकलेगा, उस से पर्यावरण का संतुलन खराब होगा। भू-गर्भीय वैज्ञानिकों की इस चेतावनी को भी केन्द्रीय सरकार ने अनदेखा कर दिया कि इस कारण सुनामी लहरों से भारत के समुद्री तटों पर भारी खतरा उत्पन्न हो जाएगा और आन्ध्र, केरल और तमिलनाडु प्रदेश को इस भयंकर संकट से बचाना मुश्किल हो जाएगा तथा भूकम्प आदि खतरे इस क्षेत्र की समस्याओं को और अधिक बढ़ा देंगे।

सारी दुनिया में इस समय कुल मिलाकर उत्तम गुणवत्ता के 11 लाख टन थोरियम भंडार का पता लगाया जा चुका है। यह यूरेनियम के समान ही दुर्लभ पदार्थ माना जाता है और इसका प्रयोग परमाणु ऊर्जा तथा तत्संबंधी हथियारों के निर्माण में होता है। यह थोराइट, यूरेनो-थोराइट और

मोनो जाइट पत्थरों से मिलता है। संसार में अभी तक उपलब्ध थोरियम के ज्ञात भंडारों का 31 प्रतिशत हिस्सा भारत के समुद्री तटों पर उपलब्ध है।

अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण (आई.ए.ई.ए) की 2 से 4 दिसंबर 1985 को बियना (आस्ट्रीया) में आयोजित बैठक में गहन चर्चा के बाद उपर्युक्त निष्कर्ष निकाले गये। इसलिए मणिपाल विश्वविद्यालय के भूगर्भ एवं राजनीति के प्रो. नलपत का भी यही निष्कर्ष है कि 'रामसेतु को तोड़ने से थोरियम की जो क्षति होगी, वह भारत की परमाणु-योजनाओं को गहरा आघात पहुँचाएगी। हिन्द महासागर में उठने वाली लहरें पुनः अवरोधों से टकराकर निर्मित होने वाली विपरीत लहरों के कारण ही भारी तत्व भारतीय समुद्री तटों तक पहुँचते हैं। श्री राम सेतु उसी अवरोधक का काम करता है, जो महासागरीय लहरों के थपेड़ों को झेलता हुआ, बहुमूल्य भारी तत्वों को आगे बहने का रास्ता देने की जगह, उन्हें भारतीय तटों की ओर धकेल देता है। यह कैसी विडबम्ना है कि एक ओर भारत सरकार परमाणु ईंधन के लिए अमेरिका से उसकी शर्तों पर समझौता करना चाहती है और वहीं दूसरी ओर वह अपने ही परमाणु ईंधन के महान भण्डार को नष्ट करने पर तुली है।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कल्याण रमण ने कहा कि आज तमिलनाडु के किनारों पर 3 लाख 6 0 हजार टन थोरियम का भंडार रेती में बिखरा पड़ा है। यह थोरियम भंडार विश्व के तमाम थोरियम भंडार का एक तिहाई है। भारत के सन 2020 में महाशक्ति बनने का सपना पूरा करने के लिए, जितनी ऊर्जा की आवश्यकता होगी, उसे 400 वर्षों तक इस भंडार से पूरा करना संभव होगा। उसे नष्ट करने का षड़यंत्र अमेरिका ने रचा है, ताकि वह थोरियम महासागर के आघातों से नष्ट हो जाए या वह थोरियम डियो गार्सिया द्वीप की ओर खिसक जाए, ताकि इसे अमेरिका मुफ्त में हासिल कर ले। यह प्रश्न देश की सुरक्षा तथा विकास से भी जुड़ा है। यह सेतु विश्व की सबसे प्राचीन सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक धरोहर भी है। इसलिए भी इसे सुरक्षित किया जाना चाहिए।

इस प्राचीनतम विश्व धरोहर को वैसे ही संरक्षित किया जाना चाहिए जैसे भारत-सरकार ने कुतुबमीनार को बचाने के लिए दिल्ली मेट्रो-रेल्वे के मार्ग को बदला। और मुस्लिम व्होटों के चक्कर में वहां मेट्रो प्रबंधक श्रीधरन द्वारा कुतुबमीनार से काफी हटकर, किए गए वृहत कार्यों को भी अर्थहीन आपत्तियों को सिर माथे चढ़ाकर, उस कार्य को हठपूर्वक और तर्कहीन विधि से स्थगित कराके, उसकी एवज में प्रधानमंत्री के आकस्मिक कोष से करोड़ों रुपए का भुगतान किया गया, जो निश्चित रूप से देश के सार्वजनिक धन का दुरुपयोग है।क्योंकि कुतुबमीनार से पर्याप्त दूरी पर बिछाई जाने वाली मेट्रों रेल्वे लाईन से इसे किसी भी संभावित हानि की आशा का कोई भी वैज्ञानिक कारण उपलब्ध नहीं है। उसी प्रकार ताजमहल को बचाने के लिए ताज कारीडोर परियोजना को रोका गया। इसे तालिबान की तरह बुद्ध-मूर्तियों को एक पत्थर कहकर, नहीं तोड़ा जाना चाहिए। रामसेतु केवल एक पत्थर से जुड़ा तथ्य नहीं, है, अपितु यह पूरे भारत की भावना से जुड़ा आस्था-केन्द्र भी है।

सेंटर फार मैरीन एनालिटिकल रेफरेन्स एण्ड स्टैण्डर्ड्स के कार्यकारी निर्देशक प्रो. सी. एस. पी. अय्यर के अनुसार-'मन्नार की खाड़ी में सागरीय जैविक भण्डार की रक्षा परम आवश्यक है। दुनिया में कहीं भी 3600 प्रकार के समुद्री जीव एक ही सागर क्षेत्र में उस प्रकार नहीं मिलते, जिस प्रकार रामसेतु क्षेत्र के निकट मिलते हैं। सेतु समुद्रम परियोजन 2006 के मूल्यांकन प्रपत्र में स्वयं तूतीकोरिन पोर्ट ट्रस्ट के विशेषज्ञों ने पर्यावरण पर पड़ने वाले इन दुष्प्रभावों को स्वीकार किया है। चेन्नई की सुप्रसिद्ध पर्यावरण रक्षक संस्था कोस्टल एक्शन ने भी इस परियोजना के समुद्री पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव पर अपनी गहरी चिन्ताओं से सरकार को अवगत कराया है।

प्रख्यात सुनामी विशेषज्ञ एवं विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. टाड एस. मूर्ति ने दिसंबर 2005 में तूती. पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री रघुपति जी को सुझाव दिया था कि वे इस परियोजना के लिए रामसेतु तोड़कर बनने वाली इस सेतु-नहर की बजाय अन्य विकल्प पर विचार करें। क्योंकि इस सेतु के कारण 26 दिसम्बर 2004 को हिन्द महासागर में आई सुनामी की लहरों के भयंकर ताण्डव से केरल का दक्षिणी समुद्री तट बच गया था।

भारत सरकार के समक्ष रामसेतु को तोड़े बिना भी सेतु समुद्रम् परियोजना को पूरी करने के विकल्प मौजूद हैं। धनुषकोटि और मण्डपम् ग्राम के बीच के भूभाग पर एक खुली नहर बनाकर उक्त परियोजना को पूरा किया जा सकता है। इस विकल्प से इस परियोजना पर आने वाला व्यय भी 50 प्रतिशत कम हो जाएगा और सेतु नहर सेदूरी भी घट जाएगी तथा साथ-साथ राम-सेतु भी बच जाएगा। इससे करोड़ों-करोड़ों लोगों की जन आस्था एवं भावनाओं का भी सम्मान होगा। प्रत्येक देश अपने पूर्वजों की धरोहरों को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का हर सम्भव प्रयत्न करता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय सेंट पाल गिरजाघर लंदन को हिटलर ने भी बम वर्षा से मुक्त रखने के आदेश दिये थे। पेरिस को यूरोपीय संस्कृति का उत्स माना जाता है, उसकी पुरा-संपत्ति को क्षति न पहुँचने पाये-इसका पूरा ध्यान और सम्मान मित्र-राष्ट्रों की सेनाओं ने रखा। सालोमन द्वारा बनवाए गए मंदिर की एक शेष ध्वस्त दीवार को यहूदी आज तक श्रद्धा से पूजते हैं। अल-अक्सा के लिए झगड़ा होता रहता है। सोफिया चर्च, कुस्तुन्तुनिया, जिसे तुर्क इस्तम्बुल कहते हैं- आज भी यथावत सोफिया मस्जिद के नाम से सुरक्षित है।

कुतुबमीनार दिल्ली को कोई क्षति न पहुँचे, इसलिए मेट्रो रेल दिल्ली का रास्ता बदल दिया गया। ताजमहल की सुंदरता और सुरक्षा को ध्यान में रखकर आगरा क्षेत्र के 300 से अधिक कारखानों को बंद करवा कर लाखों लोगों को बेरोजगार कर दिया गया। हजरत बल, कश्मीर में मोहम्मद साहब के बाल को संरक्षित करने के लिए सरकार ने कितना परिश्रम और व्यय किया है- यह इस देश की जनता से छुपा नहीं है, परन्तु रामसेतु को तोड़ने के लिए जैसे भारत सरकार ने कसम खा रखी है। आखिर रामसेतु के कारण इस जल परिवहन मार्ग को बदलने में भारत सरकार को क्या दिक्कत है ? वह सरकार 2740 करोड़ रु. खर्च करके हिन्दु-भावनाओं पर इसलिए ठोकर मारने जा रही है, ताकि उसकी धर्म-निरपेक्ष छवि का आडम्बर बना रहे और उसका वोटों का यह व्यापार इसलिए

फलता-फूलता रहे, चूँकि इस देश का 80 करोड़ हिन्दुओं का जन-सैलाब मूल रूप से अहिंसक और शांति प्रिय है और इसलिए कि वह हिंसा में विश्वास नहीं रखता। परन्तु भारत-सरकार यह न भूले कि लाखों वर्ष बीत जाने पर भी, काश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से लेकर कटक तक, भारत का करोड़ों हिन्दु आज भी उस रावण के पुतलों का, उसके परिवार एवं पार्टी के प्रतीक रूप कुम्भकर्ण और मेघनाद के पुतलों के साथ प्रतिवर्ष इसलिए दहन करता है, चूँकि उसने भारत की अस्मिता पर, भारत की इज्जत पर, उसकी मान-मर्यादा पर, उसकी सभ्यता पर, उसकी संस्कृति पर, उसकी बेटी महारानी देवी सीता पर कुदृष्टि रखने का अपराध किया था। भारत-सरकार समय रहते इस संवेदनशील श्रीराम-सेतु के मुद्दे को समझे, चूँकि श्रीराम-सेतु पुनः उसी निर्णायक भूमिका पर आकर खड़ा हो गया है।

संप्रग सरकार अपने देश की कालजयी संस्कृति और अद्भुत स्थापत्य की धरोहर को अमेरिका के कुटिल इशारों पर क्यों नकार रही है ? वह उसे नष्ट करने पर आखिर क्यों तुली हुई है। अच्छा होता यदि संप्रग सरकार देश की जनता की इस भावना को समझ पाती -

"जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिए ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।"

भारतीय सामुद्रिक पुरातत्व समाज (मैरीन आर्कियालॉजी सोसायटी ऑफ इंडिया) के अध्यक्ष और समुद्री पुरातत्व के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ डॉ. एस. आर. राव ने 30 मार्च 2007 को केन्द्रीय मंत्री को इस आशय का एक पत्र लिखा था कि रामसेतु समुद्री पुरातत्व की एक महान संरचना है और यह विश्व विरासत भी है। इसलिए उन्होंने इस विश्व की महान धरोहर को न तोड़ने का आग्रह किया था।

उन्होंने इस संदर्भ में भारतीय संविधान की धारा 49 का उल्लेख करते हुए कहा कि यह धारा राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों, स्थानों, वस्तुओं सहित ऐतिहासिक महत्व से जुड़े प्रत्येक स्थल, स्मारक या वस्तु को संरक्षित करने के लिए राज्य की बाध्यता को रेखांकित करती है।

उन्होंने आगे कहा कि हमारे संविधान की धारा 51 ए के अंतर्गत हमारी राष्ट्रीय विरासत का अंग होने के कारण भी रामसेतु की रक्षा देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बनता है। सुप्रसिद्ध इंजीनियर मेलकोम पी. आर. लाईट ने रामसेतु को सिविल इंजीनियरिंग की महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए इस विश्व विरासत को संरक्षित किये जाने की अपील की है। श्री लाईट के अनुसार इस सेतु ने पिछले 20 हजार वर्षों से लगातार भारतीय समुद्री तटों की रक्षा की है।

इस सेतु को रामसेतु, नल सेतु, हनुमान सेतु, आदि- सेतु, रामायण ब्रिज, रामार ब्रिज, आदम पुल, एडम्स-ब्रिज आदि के नाम से भी पुकारा जाता है। ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रथम सर्वेयर जनरल जेम्स रेनल ने सन 1788 ई. में हिन्दुस्तान का वह राजनीतिक नक्शा बनाया था, जिसमें भारतीय समुद्री तट पर स्थित रामन कोईल और श्रीलंका के तट तलईमन्नार को जोड़ने वाले सेतु को, रामारसेतु के नाम से अंकित किया गया है। यह ऐतिहासिक दस्तावेज तंजौर के सुप्रसिद्ध सरस्वती

महल पुस्तकालय में मौजूद है। परन्तु इन्हीं महाशय ने इसी नक्शे की एक और प्रतिलिपि 1804 में तैयार की और किसी बड़ी शक्ति के दबाव में उन्होंने इस रामार ब्रिज के स्थान पर एडम्स ब्रिज अंकित कर दिया।

मद्रास प्रेसीडेन्सी द्वारा सन 1803 में ग्लोसरी नामक एक शब्दावली प्रकाशित की गई। इस शब्दावली के एवन्ड 3 में आदम शब्द की मीमांसा की गई है। इस शब्दावली में स्पष्ट उल्लेख है कि आदम ने स्वर्ग से उतरने के पश्चात इसी सेतु से चलकर श्रीलंका की यात्रा की थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह सेतु आदम के स्वर्ग से उतरने से पूर्व ही स्थापित था। शब्दावली से इस सेतु के निर्माण का उल्लेख करते हुए स्पष्ट कहा गया है कि इसका निर्माण नल द्वारा किया गया। चूँकि आदम ने भी इस पुल सेतु का प्रयोग किया, अतः इसे मोहम्मदी परम्परा में आदम पुल कहा जाने लगा। फिर सन् 1860 में एक अंग्रेज की पनडुब्बी इस सेतु से टकराई थी। अतः रामसेतु का नाम बदलकर, उस अंग्रेज के नाम पर एडम्स ब्रिज रख दिया गया। बाद में सन् 1860 से यह एडम्स ब्रिज कहलाने लगा।

10 अक्टूबर 2004 को यह रामसेतु सारी दुनिया में चर्चा का विषय बन गया, जब अमेरिकी अंतरिक्ष संस्थान नासा ने उपग्रह के द्वारा इसके चित्र लेकर, जारी करते हुए कहा कि यह मानव निर्मित सेतु 17 लाख 50 हजार वर्ष पुराना है। यही काल त्रेतायुग में भगवान श्रीराम का है, जिससे स्पष्ट हो गया कि यह वही सेतु है, जिसे श्रीराम ने लंका पर चढ़ाई करने हेतु वानर सेना के सहयोग से बनवाया था।

नासा द्वारा लिए गये इन चित्रों से अमेरिकी नौसेना ने हिन्द महासागर के लिए अपनी गतिविधियाँ तेज कर दीं और उसने भारत सरकार पर परियोजना पूर्ण करने के लिए भारी कुटिल दबाव बनाना प्रारम्भ कर दिया। चीन और अमेरिका दोनों ही शीर्ष विश्व शक्तियाँ बनने के लिए हिन्द महासागर पर अपना-अपना वर्चस्व बनाने की रणनीतियाँ खेल रहीं हैं।

सरस्वती-सिंधु योजना के सूत्रधार एवं एशियन डेवलपमेंट बैंक के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी डॉ. कल्याण रमन ने कहा है कि-अमेरिका ने डियागो गर्शिया में सैनिक अड्डा बना लिया है। जहाँ वह हिन्द महासागर में अपना वर्चस्व बनाने के लिए सक्रिय है। वहीं चीन भी इसमें गहरी दिलचस्पी ले रहा है। चीन ने बर्मा के पास अण्डमान निकोबार से सटे हुए कोको नामक द्वीप पर अपना रणनीतिक अड्डा स्थापित कर लिया है। पाकिस्तान के ग्वादल बंदरगाह को भी उसने अपने निर्बाध आवागमन के लिए एक समझौते के अंतर्गत अपने नियंत्रण में ले लिया है। यही काम चीन ने लंका में भी करना प्रारम्भ कर दिया है। श्रीलंका के दक्षिणी समुद्री तट पर स्थित हमबंटोटा पर एक अत्याधुनिक बंदरगाह बनाने की परियोजना में भी चीन ने अपनी दखल कर ली है। इस प्रकार चीन और अमेरिका की कूटनीति एवं रणनीतिक चालों ने हिन्दमहासागर में भारत की रणनीतिक स्थिति को काफी कमजोर कर दिया है।

श्रीराम सेतु के ध्वस्त हो जाने से भारत की स्थिति और भी कमजोर हो जाएगी। अमेरिका जिस समुद्री मार्ग का खुद निर्माण करना चाहता है, उसे भारत सरकार स्वंय पूरा करने

पर तुली हुई है।

दर असल अमेरिका की कूटनीति यह है कि वह भारत को पनामा नहर और स्वेज नहर के लाभों को गिनाकर इसके लालच को बढ़ाए, ताकि भारत अपनी होने वाली हानि को नजरअंदाज कर दे। इसके लिए वह भारत व श्रीलंका के बीच हुई जल-संधि को भी शून्य कर देना चाहता है। भारत और श्रीलंका दोनों देशों की सरकारों के बीच 23 मार्च सन 1976 को सागर-सीमा निर्धारित होने के पश्चात जो जल-संधि हुई, उसमें दोनों देशों ने अपने-अपने देश के मछुआरों, नौकाओं तथा तटरक्षकों को एक-दूसरे की सागर-सीमाओं में जाने की निर्बाध छूट दी है। श्री लंका के राष्ट्रपति ने 15 जनवरी सन् 1977 तथा इसके पूर्व 2 सितंबर 1976 को अपने सागर क्षेत्रीय कानून संख्या 22 अनुच्छेद 7 में यह घोषणा दोहराई है। इस घोषणा में श्रीलंका में पाल्क स्टेट, मन्नार की खाड़ी और पाल्कखाड़ी के पूरे परिक्षेत्र को ऐतिहासिक जल-राशि का हिस्सा माना है।

अमेरिका की इस सोची-समझी कूटनीति की शिकार हमारे शक्ति सम्पन्न उच्च अधिकारियों की एक चौकड़ी भी हो गई है। जिसमें जहाज रानी मंत्रालय का सचिव डी.टी. जोसफ नामक ईसाई, घोर अनीश्वरवादी केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री टी. आर. बालू, कट्टर इस्लामिक शक्ति के प्रतिनिधि मिश्र के राजदूत खैर एल्दीन लतीफ और ड्रेजिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया के निदेशक हुसैन अब्दुल रहमान ने, स्वेज नहर के प्राधिकारियों के साथ मिलकर सेतु समुद्रम् परियोजना को शीघ्र पूरा करने के लिए, समझौता कर लिया है। जो भारत की अस्मिता को खण्ड-खण्ड कर उसके आस्था के केन्द्र बिन्दु इस सेतु को यथाशीघ्र नष्ट करने पर तुली हुई है।

जबकि सेतु बंध से लेकर हिमाचल पर्यन्त फैले इस भाग को भारतवर्ष के रूप में भारत सरकार का सर्वेक्षण विभाग भी आसेतु हिमाचल कहकर इन्हें भारत की उत्तरी और दक्षिणी सीमा मानता है। राम-सेतु की ऐतिहासिकता और प्राचीनता को प्रमाणित करने वाले तथ्यों को श्रीलंका की पाठ्य पुस्तकों में भी पढ़ाया जा रहा है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि, जो इस समय भारत सरकार की इस परियोजना के प्रबल समर्थक एवं प्रवक्ता बन गये हैं, ने सन 1982 में, अब से 25 वर्ष पूर्व, रामनाथ पुरम् गजेटियर की प्रस्तावना लिखी थी -

उन्होंने उसमें लिखा था कि इस पुल को समार पल्लम् पुकारा जाता है, क्योंकि इसे हनुमान जी के नेतृत्व में वानर-सेना ने बनाया था, ताकि श्रीराम लंका पर विजय पा सकें। करुणानिधि ने तमिलनाडु की जनता को यह भी बताया था कि सन् 1480 तक यह सेतु श्रीलंका पहुँचने का जमीनी मार्ग था। रामसेतु का उपयोग सभी लोग करते थे। उससे ही तमिलनाडु की रक्षा भी होती थी। भले ही समुद्री तूफानों ने रामसेतु को पानी के नीचे कर दिया हो, पर उसका कवचीय प्रयोजन आज भी बना हुआ है।

विडम्बना यही है कि वही, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में, करुणानिधि उस कवच रूपी रामसेतु को तोड़े जाने की आज जोरदार वकालत कर रहे हैं। वोट-बैंक के लालच में करुणानिधि ऐसा कुछ कर जायेंगे कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। उन्होंने हिन्दुओं से पूछा है

कि राम कौन से इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ने गये थे ? करुणानिधि भगवान श्रीराम पर अपमान जनक टिप्पणी करने से भी नहीं चूके। उनकी टिप्पणी थी कि हिमालय जितना विशाल है, राम उतने ही झूठे और पिचक्कड़ हैं। करुणानिधि की इन अविवेकपूर्ण टिप्पणियों की जितनी निंदा की जाए, उतनी कम है।

करुणानिधि के इन बयानों पर मकपा के महासचिव प्रकाश करात का कहना है कि आस्थावान लोगों की तरह नास्तिकों को भी अपनी राय रखने का अधिकार है। इस संदर्भ में करुणानिधि और प्रकाश करात से यह पूछा जाना चाहिए कि वे इस्लाम और ईसाई धर्मों की आलोचना की जा सकने वाली मान्यताओं की आलोचना करने की हिम्मत क्यों नहीं करते ? यह कटु सत्य है कि अन्य धर्मों पर यदि विदेश में भी आंच आती है, तो भारत सरकार का तापक्रम बढ़ जाता है। किन्तु जब यह आंच हिन्दू धर्म पर आती है, तो सरकार का कान भी गर्म नहीं होता। क्या देश के साथ यह विश्वासघात नहीं है ?

ठीक इसके विपरीत श्रीलंका राम सेतु एवं अन्य रामायण कालीन 34 स्थलों एवं स्मारकों को न केवल सुरक्षित एवं संरक्षित रखने के लिए करोड़ों रुपए व्यय करता है, बल्कि अपने विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में उन वैभवशाली इतिहास के तथ्यों को पढ़ाता भी है। भारत के इतिहासकार जहाँ श्रीराम के अस्तित्व को 5 से 7 हजार वर्ष पूर्व का ही, अपने पूर्वज पश्चिमी इतिहासकारों की तर्ज पर मानते हैं, वहीं श्रीलंका अपने पाठ्यक्रमों में श्रीराम का जन्म 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व के ही अनुसार आज भी पश्चिम के इतिहासकारों का भय माने बिना पढ़ा रहा है, जो वस्तुतः त्रेतायुग के श्रीराम का जन्मकाल है।

श्री लंकाई इतिहास विशेषज्ञ डॉ. चान्सरकर ने अपने शोध-पत्र द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि रावण का शरीर आज भी श्रीलंका के बालपन पर्वत की गुफा में रासायनिक लेप लगाकर सुरक्षित रखा हुआ है। उनके मतानुसार रामायण में वर्णित लंका ही वास्तविक लंका है। जिस पर्वत की गुफा में, एक ऊंचे चबूतरे पर रावण का शव रखा हुआ है, उस स्थल का स्थानीय नाम रागल है। सिंहली भाषा रागल का अर्थ रावण का शिखर है। गुफा में रावण के प्राचीन अवशेष भी रखे हैं। गुफा के आसपास आज भी हजारों नर-कंकाल बिखरे पड़े हैं। ये कंकाल संभवतः राम-रावण युद्ध में रावण के सैनिकों (राक्षसों) के शवों की अस्थियाँ हैं।

रावण की गुफा एक झरने के पीछे है। इस गुफा में रावण का स्वर्णजटित पलंग है, तथा भारी मात्रा में सोने-चाँदी के बर्तन हैं। सिंहली भाषा के पौराणिक दस्तावेजों के अनुसार रावण की पार्थिव देह राजकीय सम्मान के साथ पहाड़ी पर रखी गयी है। रावण को श्रद्धांजलि देने के लिए मिश्र (इजिप्ट) के तत्कालीन सम्राट भी आए थे। जिस प्रकाशमान गुफा में रावण का शरीर रखा है-यह गुफा दो पहाड़ियों के बीच घने वनक्षेत्र में है।

रावण के समय लंका की राजधानी 'रावण-कोट्टे' थी। श्रीलंका के दक्षिणी-पूर्वी तट पर दक्षिण बेसेस के क्षेत्रों में रावण का अति विशाल राजमहल था और उसमें कई प्राचीरें थीं। इस स्थान

की काली मिट्टी भस्मीभूत लंका की राजधानी का इतिहास बदलने में सक्षम है. लोक मान्यता है कि रावण का निवास-स्थान वेलिमादा के पास मलिगावा में टेन्ना में था। यहाँ पर अति प्राचीन काल की ईंट, नक्काशीदार पत्थर एवं ग्रेनाइट की सिल्लियाँ भी प्राप्त हुई हैं। सम्भावना है कि राम-रावण के मध्य युद्ध ऊपरी हवा में पहाड़ी की ओर लड़ा गया था। यहाँ वर्तमान में भी पूरा क्षेत्र बीहड़ ही है और यहाँ स्थित चट्टानों पर श्रीराम के आग्नेयास्त्रों के टकराने के चिन्ह आज भी दिखाई पड़ते हैं।

रावणकोट्टे से मात्र पाँच कि.मी. दूर अवस्थित है, नुवारा एलिया। जिसका अर्थ है - क्यों शहर जल रहा है ? जो स्पष्टतः जलती हुई लंका के नगर की ओर संकेत करता है। सीता जी का अपहरण कर रावण ने उन्हें रावण कोट्टे में ही रखा था। तत्पश्चात उन्हें सुरक्षा की दृष्टि से नवारा एलिया में अशोक वाटिका में रखा। यह छोटा-सा पठारनुमा एलिया है। वर्तमान नुवारा एलिया से बाहर स्थित वाटिका एलिया श्री सीताजी से संबंधित है। इस वाटिका में अशोक के वृक्ष फूलों से लदे रहते थे।

बजरंगबली हनुमान जी सीता माता की खोज में यहीं आए थे। प्रतिवर्ष 3-4 लाख तीर्थयात्री नुवारा एलिया में आते हैं। सीताम्मा कोवि के रूप में महत्व प्राप्त स्थान की मान्यता है कि यहीं पर सीता जी के समक्ष हनुमानजी प्रकट हुए थे। यहाँ स्थित मंदिर में सीता जी श्रीराम और हनुमान जी की नयनाभिराम पांच फीट ऊँची प्रतिमाएँ सीलोन टूरिस्ट बोर्ड और मंदिर न्यास द्वारा स्थापित की गई हैं। वहाँ आज भी निकटस्थ ग्रेनाइट पर्वत पर प्राप्त उनके पदचिन्हों के रूप में प्रतिष्ठा और पूजा प्राप्त है।

बंदरवेला से मात्र सात मील की दूरी पर 'रावण एल्ला' नामक एक गुफा समुद्र तल से 4500 फीट ऊपर स्थित है। जब श्री राम की सेना लंका आ रही थी, तब रावण ने सीता जी को घने वनों में स्थित इसी गुफा में रखा था। यहाँ पर 'रावण एल्ला' जलप्रपात भी है। मान्यता है कि सीता जी इसी भू-भाग में विचरण करती थीं तथा इसी प्रपात के जल में स्नान करती थीं। वर्तमान में भी यह क्षेत्र सघन वनाच्छादित है और मनुष्य द्वारा की गई क्षति से अभी तक बचा हुआ है।

सीता जी के साथ अयोध्या प्रस्थान करने से पूर्व श्री राम गणकामधन पर्वत पर स्थित एक मंदिर में ठहरे थे। कहते हैं कि उन्होंने यहाँ सोने का एक शिवलिंग दान दिया था। तत्पश्चात वे अयोध्या चले गए थे। श्रीलंका के दक्षिणी तट पर गल्ले के समीप 'रुमास्सल कण्डा' नामक स्थान है, जहां पर 'रुमास्सल पर्वत' है, जो कि सीताजी , श्रीराम व हनुमान जी से जुड़ा हुआ है। इस पर्वत पर विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ उगती हैं। पर्वत पर चढ़ कर समुद्र तट का मनोहारी दृश्य देखा जा सकता है। यदि आसमान साफ हो, तो यहां से मन्नार की खाड़ी, मन्नार शीर्ष, श्रीराम सेतु (श्रीपद, आदमपुल, एडम्स ब्रिज) देखा जा सकता है। इस पूरे स्थान से यह पर्वत भिन्न दिखाई देता है।

रामायण के अनुसार यह वही पर्वत है, जिसे वैद्य सुषेण के बताए अनुसार हनुमानजी उठाकर लाए थे। जब मेघनाथ के साथ युद्ध में लक्ष्मण जी मूर्च्छित हो गए थे। लंका के वैद्य सुषेण

द्वारा जड़ी-बूटी लाने के लिए कहने पर, गए हुए हनुमान जी द्वारा उसे न पहचानने के कारण, वे उस पर्वत को ही उठा लाए थे। आज भी रुमास्सल पहाड़ को हिमालय से हनुमान जी द्वारा लाया हुआ कहा जाता है। अब यह पहाड़ वर्जित क्षेत्र है और वहाँ हनुमान जी की पूजा होती है।

श्री लंका में 'सीता एलिया', 'अशोकाक्कन', जैसे स्थल आज भी अस्तित्व में है, जिन्हें वंदनीय एवं पूजनीय माना जाता है। श्री लंका द्वीप के उत्तर -पश्चिम, उत्तर और मन्नार की खाड़ी के हिस्सों में आज भी भारत से आसानी से पहुँचा जा सकता है। शताब्दियों पूर्व भी खानाबदोश लोग इसी मार्ग का उपयोग करते थे। मान्यता है कि सीता माता का पता लगाने के लिए हनुमान जी ने इसी मार्ग का उपयोग किया था।

मन्नार का शीर्ष ही वह सेतु है, जो कि श्रीराम की सेना ने लंका तक जाने के लिए बनाया था। इस रामसेतु को आदम-पुल या एडम्स-ब्रिज भी कहते हैं। रावण के साथ युद्ध में जाने से पूर्व श्रीराम ने यहाँ पर भगवान शिव की आराधना की थी। वाल्मीकि रामायण में वर्णन है "दक्षिण स्यादधेस्तीरे त्रिकूटो नाम पर्वत :।" अर्थात् दक्षिण समुद्र तट पर एक त्रिकूट नामक पर्वत है। उसके शिखर पर विशाल पुरी है, जो देवराज इंद्र की अमरावती के समान हैं। उस पुरी का निर्माण विश्वकर्मा ने किया था।

करोड़ो भारतीयों की आस्था को केन्द्र सरकार बालू का ऐसा जमा हुआ ढेर मानती है, जिसे तटीय जल प्रवाह ने निर्मित किया हैं। जबकि ऐतिहासिक दस्तावेजों एवं विश्व के तमाम विश्वसनीय ग्रंथों के अनुसार भारत और श्री लंका के बीच इस सेतु का उपयोग वर्ष 1480 तक होता था। लोग इस पुल से श्रीलंका तक पैदल ही आया जाया करते थे।

वर्ष 1225-1325 के बीच भारत यात्रा पर आए इटली के यात्री मार्कोपोली ने भी रामसेतु की चर्चा की है। इण्डोनेशिया ने नौवीं शताब्दी में बने प्राम्बनम मंदिर की प्रतिमाओं में श्रीरामसेतु के निर्माण की कथा को उकेरा गया है। रामसेतु के संबंध में उपलब्ध ऐतिहासिक देस्तावेजों मे से एक मद्रास प्रेसीडेंसी की सन् 1830 ई. में प्रकाशित प्रशासनिक निर्देशिका के अनुसार सन् 1480 तक श्रीलंका को मुख्य भूमि से जोड़ने वाला यह पुल था जिसमें बाद में एक समुद्री तूफान के दौरान दरार पड़ गईं। निर्देशिका में रामसेतु का वर्णन करते हुए कहा गया है कि रामानंद से 48 मील दूर एक पथरीली पट्टी , रेत और सूखी चट्टानों से निर्मित मन्नार की खाड़ी के उत्तर में समाप्त होती है, जो कि दक्षिण की ओर से जुड़ती है। यह दो द्वीपों को मुख्य रुप से श्रीलंका को मुख्य भूमि से जोड़ती है। हिन्दु इसे रामसेतु पुकारते हैं और कहते हैं कि इसका निर्माण श्री राम ने हनुमान जी और उनके वानरों की सहायता से श्रीलंका पर चढ़ाई करने के लिए किया था।

श्री लंका की चढ़ाई और रामरावण युद्ध में दिव्यास्त्रों के निशान आज भी वहाँ पत्थरों पर दिखाई देते हैं। रामायण कालीन दिव्यास्त्र आज के प्रक्षेपास्त्रों (मिसाइलों) की दूसरी-तीसरी पीढी के अस्त्रों की अति विकसित श्रेणी के थे। वे इतने हल्के थे कि उनको धनुष पर चढ़ा कर और मंत्र-ध्वनि से संचालित किया जा सकता था। बालि को मारने के लिए भी जो बाण चलाया गया था वह भी इसी

प्रकार की तकनीक से बनाया गया आणविक बाण था। आज की ए.के. 47 और ए.के. 56 रायफल्स की गोली भी सात-सात की कतार में खड़े ताड़-वृक्षों को नही भेद सकतीं। केवल नाभकीय अस्त्रों के अतिरिक्त अन्य किसी अस्त्र की इतनी अधिक भेदक क्षमता संभव नहीं है। बिना किसी बाधा के लक्ष्य भेदन की क्षमता से परिपूर्ण वे दिव्यास्त्र लक्ष्य भेद कर पुनः अपने नियंत्रक के पास आ जाते थे। सीता जी पर कुटिल दृष्टि रखने के अपराध में श्रीराम ने इन्द्रपुत्र जयंत पर दिव्यास्त्र का प्रहार किया तो वह आतंकित होकर भागने लगा, किन्तु बाण ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। आखिर जयंत की एक आँख क्षतिग्रस्त करके ही प्रक्षेपास्त्र श्रीराम के तरकस में वापस आ गया।

श्रीराम- रावण युध्द में एण्टी प्रक्षेपास्त्र प्रणाली का भी प्रयोग किया गया था। श्रीराम ने रावण द्वारा प्रयोग किए गए संहारक रौद्रास्त्र को निष्क्रिय करने हेतु परमास्त्र एवं एण्टी प्रक्षेपास्त्रों का भी प्रयोग किया था। रावण के पास अतुलनीय नाभिकीय आयुधों का भंडार था, जैसे वर्तमान में अमेरिका के पास है। इसलिए इन आयुधों के कारण वह अविजित था -और उसे अमरता प्राप्त थी। उसने महाराजा दशरथ पर भी दो बार आक्रमण किया था। महाराजा दशरथ ने स्वंय इस तथ्य को स्वीकार किया था कि कोई भी रावण की अपार शक्ति की समानता करने में सक्षम नही हैं और उन्होंने राजर्षि विश्वामित्र कौशिक जी से यही कहा था। राम-रावण युद्ध के समय विभीषण ने रावण की इसी नाभिकीय शक्ति की जानकारी श्रीराम को दी थी कि जब तक उसकी अमृतकुंभ नाभिकीय शक्ति को नष्ट नहीं किया जाता, तब तक वह अविजयी रहेगा। बाल्मीकि रामायण के अनुसार भी रावण की मृत्यु उसकी नाभि में तीर मारने से नहीं अपितु उसके वक्ष में तीर लगने और हृदय के फटने से हुई थी। युध्द में जब श्री राम-लक्ष्मण की घनघोर बाण-वृष्टि से रावण की सेना के पाँव उखड़ गए थे ,तब मेघनाथ ने विमान से (नभ से) ब्रह्मास्त्र का प्रहार वानर सेना पर किया था, जिससे करोड़ो वानर वीर इस अमोघास्त्र के प्रहार से प्राणहीन हो गए थे। इसी प्रकार के अन्य वर्णन विश्व-साहित्य में रामसेतु एवं राम-रावण युद्ध से संबंधित दृष्टव्य हैं।

आज भारत की ही नहीं अपितु विश्व की लगभग 200 करोड़ जन मानस की आस्था एंव श्रद्धा के केन्द्र श्रीराम सेतु की प्रामाणिकता पर प्रश्न चिन्ह उठाये जा रहे हैं। जबकि सत्यान्वेषी और समाधिजन्य ऋतम्भरा प्रज्ञा प्राप्त ऋषियों के आप्तवचनों की तुलना शराब, मांसाहार और व्यभिचार में संलिप्त उन लेखकों, उपन्यासकारों और इतिहास लेखकों से की जा रही है जो भारत को सदियों तक गुलाम रखने के लिए असत्य कल्पनाओं एवं विचारों का ताना-बाना बुनने और मानवता की हत्या करने में जिन्हें लेश मात्र भी लज्जा का अनुभव नहीं हुआ और उन्हीं के मानस पुत्र आज फिर वही परिस्थितियाँ उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ- वेद, शास्त्र, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, पद्मपुराण, स्कंदपुराण आदि अनेक पुराणों, हनुमन्नाष्टक आदि के साथ-साथ कालिदास, भवभूति आदि संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठतम ग्रंथों एवं विश्व के अनेक देशों के श्रेष्ठ ग्रंथों में राम रावण युध्द के प्रथम चरण श्री रामसेतु और उसके निर्माण में हनुमान जी के योगदान के पर्याप्त उल्लेख हमें प्रमाण रुप में प्राप्त होते हैं।

उनमें वर्णित खगोलीय घटनांए, भौगोलिक स्थान, नदी, नाले, तीर्थ आदि अपनी सत्यता को प्रमाणित करते हुए, आज भी उसी प्रकार यथा स्थान हैं और ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम को यथावत व्याख्यायित करते हुए अपनी सत्यता का उद्‌घोष करते हैं। इन ग्रंथों में राम और रावण की वंशावलियां उसी प्रकार दी गई हैं, जिस प्रकार किसी भी व्यवहार वाद एवं राजस्व प्रकरण के निर्णय में आज भी वंशावलियों की प्रस्तुतियों को न्यायहित में स्वीकार किया जाता है। किसी भी घटना की ऐतिहासिकता उस घटना से जुड़े स्थलों, ग्रंथों, मार्गों, एतिहासिक साक्ष्यों, वंशावलियों और जनश्रुतियों की सामग्री से की जाती है। ये सभी आधार सामग्रियाँ प्राचीन साहित्य, लोक कथाओं, गीतों व किंवदंतियों में बिखरी पड़ी हैं। श्रीराम, हनुमानजी एवं रावण पर जितना लिपिबद्ध साहित्य हमें उपलब्ध होता है, उतनी ऐतिहासिक सामग्री संसार के किन्हीं भी पात्रों, पीर-पैगम्बरों-औलियाओं या विश्व के किसी महान धर्म के प्रर्वतक के विषय में प्राप्त नहीं होती। इससे यह भी सिद्ध होता है कि श्रीराम की गाथा जनमानस में परंपरागत रूप से पीढी दर पीढी हजारों-लाखों वर्ष से उतरती हुई आज भी जीवित हैं।

वैदिक मंत्रों में समायी रामकथा का महाभाष्य और लौकिक संस्कृत के ग्रंथों में सबसे प्राचीन तम ग्रंथ वाल्मीकि रामायण है। इसमें श्रीराम के संपूर्ण जीवन का विस्तृत वर्णन किया गया है। इसमें अयोध्या से लेकर श्रीलंका तक के सभी स्थलों का वर्णन है जहाँ श्रीराम गए थे। आज भी वे स्थान यथावत हैं। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम के द्वारा सेतुनिर्माण का भी विस्तृत उल्लेख किया गया है। जब श्रीराम की सेना लंका पर विजय अभियान के अंतर्गत समुद्र तट पर पहुँच गई, तब श्रीराम विभीषण के परामर्श पर समुद्र पार करने हेतु मार्ग देने के लिए महासागर से आग्रह करने के पश्चात, उसके तट पर धरना देने के लिए और सत्याग्रह को स्वीकार करने हेतु, कुशा बिछा कर हाथ जोड़ कर लेट गए :-

**ततः सागर वेलायां दर्भानास्तीर्य राधवः।**
**अंजलिं प्राङ्मुख कृत्वा प्रतिश्यिे महादधे :॥**

-वा.रा. ॥ युध्द काण्ड - 1-2॥

इस घटना का उल्लेख महाभारत में भी प्राप्त होता है कि श्रीराम ने लक्ष्मण सहित आचमन करके समुद्र के तट पर कुश की चटाई बिछाकर उस पर लेट कर विधिपूर्वक धरना दे दिया।

**इत्युक त्वा सह सौमित्ररुपस्पृश्याथ राधवः।**
**प्रतिश्यिे जलनिधि विधिवत कुशसंस्तरे ॥**

-महा. ॥ वन पर्व-32-283॥

रामेश्वरम् में आज भी उस स्थान पर, जहाँ श्रीराम लेटे हुए थे, एक विशाल मंदिर विद्यमान है। जिसमें श्रीराम की शयनमुद्रा में प्रतिमा विद्यमान है। इस मंदिर को दर्भशयनम् मंदिर के रूप में जाना जाता है। भारत में अन्य किसी भी स्थान पर श्रीराम की लेटी हुई शयन मुद्रा वाली प्रतिमा प्राप्त

नहीं होती।

समस्त आर्ष ग्रंथों में श्रीराम सेतु के मुख्य शिल्पी के रूप में विश्वकर्मा के पुत्र नल के नाम का उल्लेख आता है। इसलिए इसका नाम नलसेतु भी है। श्री वाल्मीकि रामायण के अनुसार समुद्र ने श्रीराम को सेतु निर्माण का परामर्श देते हुए कहा कि सौम्य! आपकी सेना में जो यह नल नामक कांतिमान वानर है, साक्षात विश्वकर्मा का पुत्र है। इसे इसके पिता ने यह वर दिया था कि तुम मेरे ही समान शिल्प-कला में निपुण होओगे। इस नल के हृदय में आपके प्रति बड़ा प्रेम है :-

**अयं सौम्य नलो नाम तनयो विश्वकर्मणः।**
**पित्त दत्तवरः श्रीमान् प्रीतिमान् विश्वकर्मणः ॥**

- वा.ना.॥ युद्धकाण्ड- 85-3 ॥

महाभारत में वर्णित है कि समुद्र ने श्रीराम से कहा कि तुम्हारी सेना में एक नल नामक वानर है,जो शिल्पियों के लिए भी आदरणीय है। बलवान नल देवशिल्पी विश्वकर्मा का पुत्र है :-

**अस्ति त्वत्र नलो नाम वानरः शिल्पिसम्मतः।**
**त्वष्टुर्देवस्त तनयो बलवान विश्वकर्मणः ॥**

-महा.॥ वन प.-41-283 ॥

वह अपने हाथ से उठा करजो भी काठ, तिनका या पत्थर मेरे भीतर डाल देगा, वह सब मैं जल के ऊपर धारण किए रहूंगा। वही तुम्हारे लिए पुल होगा :-

**स यत काष्ठं तृणवापि शिलां वा क्षेप्यस्ते मयि।**
**सर्वे तद् धारयिष्यामि स ते सेतुर्भविष्यति ॥**

**-म.भा.॥व.न.-42-283 ॥**

महाभारत के अनुसार श्रीराम का वह सेतु आज भी भूमंड़ल मे नलसेतु के नाम से विख्यात है। श्रीराम की आज्ञा मानकर समुद्र ने उस पर्वताकार पुल को अपने ऊपर धारण किया।

**नल सेतुरिति ख्यातो योद्यापि प्रथितो भूवि।**
**रामास्याज्ञां पुरसकृत्य निर्यातो गिरिसनिभः ॥**

-म.भा.॥ व.प.-45-283 ॥

दक्षिण भारत की प्रांतीय भाषाओं में रचित रामायणों में भी नल के द्वारा वानरों के सहयोग से सेतु बांधे जाने का वर्णन प्राप्त होता है। मलयालम भाषा में तुंचतु एषुत्तच्छन् कृत अध्यात्म रामायणम् में भी उल्लेख आता है कि समुद्र ने उपरोक्त सुझाव भी दिया था। पर्वततुल्य स्थूल शरीर तथा दुर्निवार बलशाली और साहसी वानर सब दिशाओं से तुरंत ही पर्वत, शिलाएं तथा वृक्ष समूह

लेकर आने लगे तथा नल उन्हें क्रम से रख-रख कर शत योजन लंबा तथा दस योजन चौड़ा सेतु बनाने लगे :-

**सर्व दिक्किड्कलुं निन्नु सरभसं,पर्वत पाषाण जलङ्खळु ।**
**कोण्टु वरून्नव वाड्टित्तेरुतेरे,कुण्ठताहीनं पटुत्तु तुटड्डिनान् ॥**
**नेरे शतयोजनायतमायुट-नोरंचु योजन विस्मारमां वण्णं ।**

तेलुगु भाषा में लिखित 'मोल्ल रामायण' में यह उल्लेख आता है कि समुद्र ने श्रीराम को बताया कि हे महीपति!रावण की आज्ञा से सारे मत्स्य पाषाणादि को निगल रहे हैं। मेरे जल में फिरने वाले तिमितिमिंगल आदि जलचर रावण कीआज्ञा का पालन करते हैं। यह सेतु यदि नल के द्वारा निर्मित होगा, तभी ठहर पाएगा। अतः हे कमललोचन ! नल को आज्ञा दीजिए।

**रावण पंपनु रालेल्ल जेपलु, म्रिगुंचुडे गदयय मेदिनीश,**
**तिमि तिमिंगलमुलु तिरुगुचु नायंदु- नुंडि रावण पंपुनोनर जेयुः ।**
**नलुडु कट्टिन गानि निलुवनेरदु कट्टं, नलुनि बंप गदयय नलिननेत्र ॥**

दक्षिण के भक्त कम्बर की रामायण में रामसेतु के प्रसंग की चर्चा करते हुए लिखा गया है कि बादलों सहित फेंके गए पहाड़ों को नल ने अपने कंधों पर उसी प्रकार उठा लिया, जिस प्रकार कृपानिधान भगवान अपनी शरण में आए भक्तों को अपना लेते हैं। अर्थात् अपने हाथ में आए पहाड़ों को क्रम से लगा-लगा कर उसने पुल का निर्माण किया।

**मंची निल् तिकल तरुम् मलैयै,**
**माकुं एंकु, एंचुर कटितु एटुत्तु एरियवे नलन् ।**
**विंचैयिल तांकिनतन चटैयन् वेण्णेयिल् तंचम् एन्टोरकलै तांगुम् तन्मैयोन् ॥**

असमिया भाषा में माधव कंदली द्वारा रचित रामायण को श्रीमद् शंकरदेव एवं माधवदेव ने 15 वीं शताब्दी में संकलित किया। इस रामायण में भी यह उल्लेख है कि समुद्र ने श्रीराम को बताया कि आपका सहायक जो नल है, उसको विश्वकर्मा ने वर देकर कहा है कि वह जिन पदार्थों को स्पर्श करेगा, वे जल में नहीं डूबेंगे-

**तोमर सारथी नल आछन्त बानर ।**
**बीर विश्वकर्मा ताक दिया आछे बर ॥**
**शुनियोक पात्र शुभाशय नल ।**
**तुमि छुइले वृक्ष-शिला नयाइबेक तल ॥**

हनुमान जी ने निकट दूर सभी स्थानों से शिला-पर्वत वृक्षादि लाकर समुद्र तट पर एकत्र किए और नल उन्हें स्पर्श कर सेतु-बंधन करने लगे :-

**हनुमन्ते पर्वत आनंत बर बेगे ।**
**जलत पेलाइले छोवे नले सेड़ चगे ॥**

असमिया के कवि दुर्गा बर कायस्थ ने अपने गीति-रामायण में सेतुबंध का वर्णन करते हुए लिखा है कि समुद्र ने श्रीराम को सेतुबंधन का परामर्श देते हुए कहा कि नल द्वारा सारी सामग्रियों का स्पर्श करवाकर समुद्र पर सेतु का निर्माण करोः-

**विश्वकर्मा सूत नल छुले शिला नयाई तल**
**बांधिबेक अगाध सागर ।**

इसके अतिरिक्त रघुनाथ मंहत कृत 'शत्रुंजय' तथा कारबि जनजाति की रामायण 'छाबिन आलून' आदि में भी इस प्रसंग की चर्चा की गई है।

वाल्मीकि रामायण में सेतु की निर्माण प्रक्रिया का विस्तृत उल्लेख है। महाकाय महाबली वानर हाथी के समान बड़ी-बड़ी शिलाओं और पर्वतों को उखाड़कर यंत्रों द्वारा समुद्र तट पर लाते थे -

**हस्तिमात्रान महाकायाः पाषाणाश्च महाबलाः ।**
**पर्वतांश्च समुत्पाट्य यंत्रै परिवहन्ति च ॥**

-वा.रा.॥ यु.का.-60-22 ॥

वाल्मीकि रामायण में रामसेतु का आकार बताते हुए कहा गया है कि यह सौ योजन लंबा तथा 10 योजन चौड़ा था और इसमें प्रत्येक दिन का निर्माण कार्य भी बताया गया है -

**दसयोजनविस्तीर्ण शतयोजन मायतनम् ।**
**ददृशर्देवगन्धर्वा नल सेतु सुदुष्करम् ॥**

-वा.रा ॥ यु.का.-76-22॥

इसी प्रकार अध्यात्म रामायण में उल्लेख है कि समुद्र पर वानर श्रेष्ठ नल ने प्रथम दिन चौदह योजन, दूसरे दिन बीस योजन,तीसरे दिन इक्कीस, चौथे दिन बाईस और पांचवे दिन तेईस योजन पुल बांधा। उसी पुल से वानरगण उस पार गए फिर असंख्य वानरों ने सुबेल पर्वत को घेर लिया -

**कृतानि प्रथमे नाह्ना.......सुबेलाद्रि रुरुधुः प्लवगोतमाः ॥**

अ.रा.॥ युद्ध का.सर्ग -7 । 5,6,7,8 ॥

महाभारत में भी सौ योजन लंबे एवं दस योजन चौड़े पुल के निर्माण का उल्लेख है :-

**दशयोजन विस्तारमायतं शतयोजनम् ॥**

-महा.॥ व.प.-44-283 ॥

तुंचत्तु एषुत्व्छन् कृत अध्यात्म रामायण में वर्णन है कि शिलाओं, पादपों आदि को क्रम से रखकर जल्दी-जल्दी कार्य होता गया और पहले दिन 14 योजन सेतु तैयार हुआ दूसरे दिन 20, तीसरे दिन 21, चौथे दिन 22, पांचवे दिन 23, इस प्रकार पांच दिन में सौ योजन लंबा सेतु तैयार हुआ-

**विद्रतमद्रि पाषाण तरुक्कळाल,**
**छिने तीर्न्नु पतिन्नालु योजन ।**
**तीर्न्नि तिरुपतु योजन पिट्टेन्नाल,**
**मून्नां दिनमिरुपत्तोन्नु योजन ।**
**नालांदिन मिरुपत्ति रष्टायतु,**
**पोलोथिरुपत्तिमुन्नमुंचां दिनं**
**अंचु नाळ कोण्टु शत योजनात् ॥**

इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरित मानस में वर्णन करते हुए कहते हैं कि भगवान श्रीराम द्वारा समुद्र के प्रति क्रोध करने पर समुद्र ने प्रकट होकर पुल बनाने हेतु नल-नील के नाम का सुझाव दिया :-

**बिनय न मानत जलधि जड़,**
**गए तीनि दिन बीति ।**
**बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति ॥**
**नाथ नील नल कपि द्वौ भाई ।**
**लरिकाईं रिषि आसिष पाई ।**
**तिन्ह के परस किएँ गिरि भारे ।**
**तरिंहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥**

-रामचरितमा.॥सु.का.॥दोहा 57-59/1॥

इस प्रकार जाम्बवान ने प्रभु श्रीराम की आज्ञा पाकर नल-नील तथा वानरों को सेतु बांधने हेतु आदेश दिया तो सब सेतु बांधने के प्रयास में लग गए और देखते -देखते ही सेतु बंध तैयार हो गया :-

**अति उतग गिरि पादप,लीलहिं लेहिं उठाइ ।**
**आनि देहिं नल नीलहि, रचहिं ते सेतु बनाइ ॥**

- रा.मा.॥लंका का.-1 ॥

**सैल बिसाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥**
**देखि सेतु अति सुंदर रचना । बिहसि कृपानिधि बोले बचना ॥**

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है कि श्री रघुवीर के प्रताप से पत्थर भी समुद्र पर तैर गए। ऐसे श्रीराम जी को छोड़कर जो किसी दूसरे स्वामी को भजते हैं, वे निश्चय ही मंदबुध्दि हैं -

**श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषान ।**
**ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥**

-लंका का. ॥ दोहा-3 ॥

इस प्रकार हम देखते है कि सभी वेद-वेदांग, रामायण, महाभारत आदि सभी ग्रंथों मे रामसेतु का विशद वर्णन इस बात का प्रमाण है कि यह रामसेतु 17लाख 50 हजार वर्ष पूर्व मुख्य वानर शिल्पी विश्वकर्मा पुत्र नल ने हनुमान जी के निर्देशन में और वानरों की सहायता से समुद्र पर बनाया था और वानर सेना सहित, हनुमान जी के साथ श्रीराम- लक्ष्मण ने इसी सेतु से पार होकर लंका पर चढ़ाई की थी।

रामसेतु की पवित्रता रामकथा के साथ और उसका निश्छल प्रकाश शताब्दियों पूर्व ही विश्व के लगभग सभी देशों को अपने पूर्ण आलोक से आच्छादित कर चुका था। तभी तो थाईलैण्ड, कंबोडिया, वर्मा, इण्डोनेशिया, मलेशिया, कोरिया, चीन, जापान, फिलिपाइन, तिब्बत, जावा, लाओस, नेपाल, मारिसस,फीजी आदि देशों में कवियों द्वारा रचित रामायणों के आधार पर रामकथा के प्रसंग एवं लंका विजय में रामसेतु की भूमिका के पावन-प्रसंग गुंजित होते हैं। सच तो यह है कि श्रीराम अपने चरित्र की महानता के कारण विश्वव्यापी हो गए हैं। वर्तमान स्वार्थमयी एवं भौतिकवादी युग में जबकि मानव जीवन के शाश्वत मूल्य लुप्त होते जा रहे हैं, रामायण द्वारा स्थापित मूल्य और आदर्श विश्वशांति एवं मानव अस्तित्व की रक्षा हेतु अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

रामायण कालीन अकाट्य पुरावशेष सेतुबंध रामेश्वरम् तीर्थ क्षेत्र में आज भी स्थित हैं।

1. **कोदण्डराम मंदिर-** विभीषण ने इसी स्थान पर श्रीराम की शरण ली थी और भगवान ने विभीषण का राजतिलक यहीं पर किया था। उसी स्मृति में आज यहाँ विशाल मंदिर है।

2. **रामझरोखा मंदिर-** रामेश्वरम् मंदिर के उत्तर पश्चिम में 3 किमी. दूर गंधमादन पर्वत पर रामझरोखा मंदिर स्थित है। राम का युध्द मंत्रणा शिविर इसी स्थल को कहा जाता है।

3. **दर्भशयनम्** - यह रामायण काल की घटना का जीवंत स्मारक है। समुद्र से रास्ता मांगने के लिए यहीं पर श्रीराम ने तीन दिन तक प्रार्थना की थी। उन्हीं पलों की स्मृति में यहाँ एक विशाल मंदिर का निर्माण कराया गया है, जिसमें प्रभु श्रीराम की शयनमुद्रा में मूर्ति स्थापित की गई है। समस्त विश्व में उनकी यही एक प्रतिमा शयन मुद्रा में उपलब्ध होती है। श्रीरामसेतु की चौड़ाई इस दर्भशयनम् से लेकर देवीपत्तनम् होते हुए छेदुकराई तक मानी जाती है।

4. **रामलिंगविलास शिला-** यहां ऊँचे सिंहासन पर 30 सेमी. ऊँचा एक वर्गाकार चमकदार पत्थर रखा है। इसी को रामलिंगविलास शिला कहते हैं। यह सुंदर पत्थर की चौकी जो

प्राचीन काल के सिंहासन के रूप में प्रसिद्ध है, श्रंग्वेरपुर के निषादगुहा का प्रथम सेतुपति के रूप में अभिषेक श्रीराम ने इसी स्थान पर किया था। उसी स्मृति में यह स्थल आज तक पूजित होता आ रहा है।

**5. सेतुबंध रामेश्वरम्** - श्रीराम द्वारा सेतु पार जानेके पूर्व यहां भगवान शिव का पूजन किया था। उस काल का यह सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण स्मारक है। यह चारों धामों में से एक प्रमुख धाम माना जाता है।

इस सेतुबंध रामेश्वर का वर्णन संस्कृत के सभी ग्रंथों मे बड़ी श्रद्धा के साथ किया गया है किन्तु श्री रामसेतु की गवाही देती श्री गुरुनानक देव जी की जन्म साखियां विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं। श्री गुरूनानक देव की सबसे पुरानी जन्मसाखी की एक हस्तलिखित प्रति दिल्ली के श्री प्यारेलाल कूपर के पास सुरक्षित है,जिसे कुछ वर्ष पूर्व पंजाब विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया था। इस जन्म साखी में सेतुबंध रामेश्वर का वर्णन इस प्रकार किया गया है -

जब वहाँ से चले तो बाले ने कहा कि जिसे सेतुबंध रामेश्वर कहा जाता है, वह न देख सके। तब गुरुनानक देव ने कहा -भाई बाले वह तो दूर है। तो बाले चुप कर गया। तब फिर गुरुनानक ने कहा क्यों भाई बाले, देखने का बहुत मन है ? फिर बाले ने कहा, जैसी आपकी इच्छा तो गुरूनानक ने कहा चलो भाई बाला वह भी देखकर ही चलते हैं। वहां से उड़ारी लगाई और सेतुबंध रामेश्वर आ पहुँचे।

इस जन्मसाखी से यह स्पष्ट होता है कि गुरुनानकदेव राम सेतु पहुँचे थे। भाई मणिसिंह की साखी में गुरुनानक देव जी के रामसेतु जाने का वर्णन है। वह जन्मसाखी इस प्रकार है -तो फिर मरदाने ने कहा, यही सेतुबंध रामेश्वरम् है,जहाँ श्रीराम ने पर्वतों का पुल बांधा था। अतः उस स्थान का भी दर्शन करें। तब बाबा, मरदाना और बाला तीनों पुल पर आए। यहाँ पत्थरों पर राम-नाम लिखने का महात्म्य भी बाबा ने मरदाने को समझाया।

तब फिर बाबा ने कहा कि चलो अब आपको लंका का भी दर्शन करवाएं। तब मरदाने ने कहा - सेतु तो टूटा हुआ है , परंतु जिस नाम से सेतुबंध है, उसी नाम के सहारे आपको पार ले जाएंगे। मेहरबान वाली जन्मसाखी में बाबा नानक के सेतुबंध रामेश्वर जाने का उल्लेख निम्न प्रकार से आया है :-

फिर सेतुबंध रामेश्वर आया। बोलो भाई जी वाहे गुरु, धनगुरु, सतगुरु। तब सेतुबंध देखकर गुरु बाबे जी के मन में आया.... तब सेतुबंध से आगे के लिए चल पड़े। जाते-जाते दक्षिण की धरती में पहुँचे, वहां की भाषा ही समझ में नहीं आती थी।

पांचों जन्मसाखियों के आधार पर प्रसिद्ध इतिहासकार श्री कृपाल सिंह ने ऐतिहासिक तथ्यों और प्रमाणों को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि लंका में मैनर से गुरुनानक देव जी भाई मरदाना के साथ नाव अथवा बादबानी जहाज द्वारा सेतुबंध पहुँच गए, जहाँ आजकल धनुष

कोटि बंदरगाह है। यह स्थान रामेश्वर से 8-9 मील दूर है। कहा जाता है कि श्री राम ने लंका जीतने के लिए यहाँ पुल बांधा था। कृपाल सिंह के अनुसार गुरुनानक देव जी की पहली उदासी, जो ईस्वी सन् 1504 में शुरु हुई थी और सन् 1516 तक चली।

इसका अर्थ यह हुआ कि सन 1510 और 1516 के बीच किसी समय गुरुनानक देव सेतुबंध गए होंगे। जन्मसाखियों के उदाहरणों से यह निष्कर्ष सहज ही निकलता है कि गुरू श्री नानक देव जी जिस समय सेतुबंध पर पहुँचे थे, उस समय सेतुबंध सही सलामत विद्यमान था। सन 1903 में प्रकाशित मद्रास प्रेसीडेन्सी के प्रशासन मैन्युअल के अनुसार भी उस समय यह पुल कहीं तो पानी के ऊपर था और कहीं पानी के नीचे -लेकिन उस समय ज्यादातर पुल तीन या चार फीट पानी के भीतर ही दिखाई देता था।

यह मैन्युअल 1903 में प्रकाशित हुआ और उसमें यह बताया गया है कि रामसेतु अभी भी दिखाई देता है। जन्मसाखियों में इनके 1500 सन् तक विद्यमान होने के प्रमाण मिलते ही हैं। इससे स्वतःस्पष्ट है कि रामसेतु का पौराणिक अस्तित्व ही नहीं अपितु वास्तविक अस्तित्व भी है, जिसकी प्रामाणिक गवाही श्री गुरुनानक देव जी की जन्मसाखियाँ हैं।

लाखों वर्ष के काल खण्ड में भारतकी तरह लंका में भी बहुत अधिक उथल-पुथल रही है। इस परिवर्तनशील इतिहास में लंका कब सिंहल हो गई और कब सिंहल नाम से पुकारी जाने लगी, उसे स्वंय भी पता नहीं चला। गोस्वामी तुलसीदास जी को भी यह बदला हुआ नाम - उसका भोला सुदंर सा नाम बहुत पसंद था। इसके पीछे बड़ा रुचिकर इतिहास है। बहुत बाद में वह अंग्रेजों से सीलोन हो गई और तत्पश्चात आजादी के बाद बहुत समय पश्चात उसे अपना खोया हुआ अस्तित्व- अपनी -अस्मिता अपना नाम श्रीलंका प्राप्त हुआ।

बंग प्रदेश का एक सिंह नामक व्यक्ति गुजरात के लत्ता प्रदेश(लाटराज्य) में जाकर बस गया। उसका पौत्र विजय सिंह अपने पांच सौ अनुचरों के साथ सेतुबंध रामेश्वर के दर्शन कर, रामसेतु द्वारा सागर पार कर लंका पहुँचा। उसके साथ अनुचर के वेष में पांच सौ वीर रण बांकुरे सैनिक थे। वह स्वयं भी एक अद्‌भुत वीर था। उसने लंका का अध्ययन कर, वहां क्रांति करा दी और तत्कालीन शासक पाँण्डय नरेश को पराजित कर वहां शासन स्थापित किया। उसने पाँण्डय नरेश की अनिंद्य सुंदरी कन्या राजकुमारी अनुराधा से विवाह किया।

उसने राजकुमारी अनुराधा की पाँच सौ सखियों के संग अपने पाँच सौ सैनिकों का विवाह भी कराया। अनुराधा के साथ अन्य तमिल दास-दासियां भी थीं। विजय सिंह राजा ने नई राजधानी बसाने का संकल्प किया। उसने अनुराधापुरम् नामक नई राजधानी बसाई।

महात्मा बुद्ध भगवान जिस समय निर्वाण प्राप्त कर रहे थे, ठीक उसी समय विजय सिंह लंका में राज्य स्थापित कर रहे थे। उन्होंने अपने प्रपितामह सिंह व अपनी उपाधि के नाम पर लंका का नाम सिंहल के रूप में परिवर्तित कर दिया। इसी कारण से फिर वहां की भाषा भी सिंहली कहलाई।

इससे ज्ञात होता है कि बौद्धकाल में भी श्रीरामसेतु का अस्तित्व था जो सिंहल द्वीप के इतिहास से सिद्ध होता है। इसी प्रकार महाभारतकाल में भी रामसेतु के अस्तित्व के भरपूर प्रमाण प्राप्त होते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान श्रीलंका ही प्राचीनकाल की लंका है। श्रीराम, हनुमानजी, रावण ये सब श्रीरामसेतु सहित अन्य सभी रामायणकालीन पात्र एवं स्थल ऐतिहासिक हैं।

लंका से अयोध्या लौटते हुए श्रीराम सीता जी को पुष्पक विमान से सेतुबंध दिखाते हुए कहते हैं कि इस पुण्यस्थल में जो विशालकाय समुद्र का तीर्थ दिखाई देता है। वह सेतुनिर्माण का मूल प्रदेश होने के कारण, सेतुबंध नाम से विख्यात तथा तीनों लोकों से पूजित होगा। यह तीर्थ परम पवित्र और महान पातकों के नाश करने वाला होगा-

**एतत तु दृश्यते तीर्थं सागरस्य महात्मनः ॥20॥**
**सेतुबंध इति ख्यांत त्रैलोक्येन च पूजितम ।**
**एतत् पवित्रं परमं महापातकनाशम ॥**

-बा.रा. ॥युद्धका. -123 सर्ग ॥21 ॥

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है -

**ममकृत सेतु जो दरसनु करिहि ।**
**सो बिनु श्रम भवसागर तरिहि ॥**

यहां एक प्रश्न उठता है कि श्रीरामसेतु को बांधने वाली वानर जाति क्या पशु-योनि की जाति थी ?

गोस्वामी तुलसीदास जी के रामचरित मानस , लंका काण्ड-44 में ''कपि लीला कर तिन्हहि डेरावहिं, और सिर लंगुर पछारा'' आदि में वानर स्वभाव के अनुकूल कुछ गुणों के दर्शन का भ्रम होता है। उसी प्रकार वाल्मीकि रामायण में -वनसंबेधि फलादिक राति गृहणाति- से भी वन में उपलब्ध कंदमूल फल आदि से भोजन सामग्री के रूप में प्राप्त करने वाले वानर कहे गए हैं। उन्हें वन्यपशु आदि हिंसक प्राणियों से गहन वनों में अपनी सुरक्षा हेतु उठाए कदमों और पेड़ों को अपना निवास बनाए जाने के कारण शाखा-मृग से भी संबोधित किया गया है। उन्हें उत्साह से कूद कर चलने के कारण प्लंवगम की उपाधि भी दी गयी है। वनवासी होने के कारण इन वन्य जातियों को वनौकस भी कहा गया है। वाल्मीकि रामायण में प्लवंगम शब्द 240 बार, हरि शब्द 540 बार और वानर शब्द 1087 बार हमें विविध प्रसंगों में देखने को मिलता है।

हनुमान जी के वध के लिए तैयार रावण को विभीषण जी द्वारा दूत के अवध्य होने के कारण अन्य किसी दंड की सलाह देने पर रावण हंस कर कहता है कि इसको अंग-भंग कर लौटा दिया जाए। रावण भी पूँछ का उल्लेख करता है -

'कपि के ममता पूँछ पर, सबहिं कहउँ समुझाइ' और 'पूँछहीन वानर तहँ जाइहि' किन्तु

'बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला' - कह कर उनका मनचाहे रूप धरने और शरीर घटाने-बढ़ाने की क्षमता की ओर संकेत किया गया है। महर्षि वाल्मीकि जी ने स्पष्ट रूप से वानरों द्वारा अलंकार रूप में पूँछ धारण करने का वर्णन किया है।

**कपीनां किल लांगूलमिष्टं भवति भूषणम् ॥**

-वा.रा.||5-33-3 ||

यदि हम वानरों को पशु मानें या फ्रायड जैसे पश्चिमी विद्वानोंके विकास वादके सिद्धांतों को स्वीकार करें तो वानरों की पूँछ कुछ-कुछ प्रमाण में घटते हुए दिखाई देनी चाहिए थी। किन्तु यहाँ इसके एक दम विपरीत वर्णन हमें प्राप्त होते हैं। वानरों में तो पूँछ का वर्णन मिलता है किन्तु वानरियों (बालि-पत्नी तारा एवं सुग्रीव पत्नी रूमा आदि) में पूँछ की कोई कल्पना नहीं है। श्रीराम के अयोध्या लौटने के समय सीता जी का किष्किंधा में सुग्रीव आदि की पत्नियों से मिलने के वर्णन से ज्ञात होता है कि वानर-पत्नियां श्रृंगार आदि करके उत्सवों में जाती थीं। तारा की आज्ञा पाकर सारी वानर पत्नियों ने श्रृंगार किया-

**तारया चाभ्यनुज्ञाताः सर्वा वानरयोषितः**

-वा.रा. ||युद्ध का. -123-36 ||

उस काल के विश्वविख्यात महर्षि एवं कुलपति अगस्त्य एवं कुलपति मतंग मुनि तथा कुलपति अत्रि मुनि और कुलपति विश्वामित्र कौशिक के विश्वविद्यालयों में अन्य जाति के छात्रों के साथ वन्य जातियों (आज की अनुसूचित जनजाति) के छात्र भी विधिवत शिक्षा ग्रहण करते थे। हनुमान जी ने स्वंय भगवान सूर्य नारायण से वेद-शास्त्र-व्याकरण आदि की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की।

हनुमान जी की प्रथम भेंट में भगवान श्रीराम लक्ष्मण जी को उनका परिचय देते हुए और उनकी वाणी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि जिसे ऋग्वेद की शिक्षा नहीं मिली, जिसने यजुर्वेद का अभ्यास नहीं किया तथा जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार सुंदर भाषा में वार्तालाप नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होंने समूचे व्याकरण का कई बार स्वाध्याय किया है। इनके मुख से एक बार भी अशुद्ध वाक्य का उच्चारण नहीं हुआ है। ये शास्त्रीय परिपाटी और संस्कार सम्पन्न संस्कृत भाषा में अद्भुत, अविलम्बित तथा हृदय को आनंद प्रदान करने वाली कल्याणमयी वाणी का उच्चारण करते हैं। हे निष्पाप लक्ष्मण! जिसके कार्यसाधक दूत ऐसे उत्तम गुणों से युक्त हों, उस राजा के सभी मनोरथ दूतों की बातचीत से ही सिद्ध हो जाते हैं :-

**नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः ।**
**नासामवेद विदुषः शक्यमेवं विभाषितुम् ॥**

-वा.रा. || कि.का. सर्ग-3- 28-36 ||

इस प्रकार हम देखते हैं अनेक स्थलों पर हनुमान जी वैदिक विद्वान एवं व्याकरणाचार्य तथा व्यवहार कुशल एवं नीतिवान दूत के रूप में हमें दृष्टिगोचर होते हैं। इसलिए उन्हें ज्ञानिनामग्रगण्यं कहा गया है। हनुमान जी संगीत विशारद हैं, उनकी संगीत के चार आचार्यों में गणना की जाती है। वानरों के अनुशासित होने का उनका आधुनिक सैनिकों के समान पंक्तिबद्ध खड़े होना और श्रीराम द्वारा एक-एक वानर से कुशल क्षेम पूछना, उनकी बुद्धि-सामर्थ्य का वर्णन करता है। बालि द्वारा प्राण त्यागने के पूर्व श्रीराम, सुग्रीव और अंगद से जो कुछ वार्तालाप हुआ, उससे बालि की चतुराई, उसकी मानवीय संवेदनाएँ, दूरदृष्टिपरक अंगद के प्रति उपदेश आदि से यही प्रमाणित होता है कि मानव-बुद्धि के समतुल्य ही उनके विचार हैं। उसी प्रकार उनके आचार-विचार और परम्पराएँ हैं। तारा का विलाप और अंगद के युवराज होते समय सम्भाषण उनकी बुद्धि-चातुर्य दिखाता है।

वानरराज बालि के श्वसुर सुषेण वैद्य थे और वे प्रवीण योद्धा भी थे। महाबली सुषेण वैद्य ने लंका-युद्ध में श्रीराम की ओर से युध्द किया था। सुग्रीव ने लंका के समर में मुष्टिका युद्ध के साथ-साथ ढाल-तलवार, मूसल-विद्या का भी प्रयोग किया था। सुषेण वैद्य को उस युग का आयुर्वेद का धुरंधर विद्वान माना जाता है। सुग्रीव काष्ठ-कला के विद्वान भी थे। उन्होंने ऐसे वृक्षों का वर्णन किया है, जिनसे सुंदर पलंग मालाएं, पेय आदि बनाये जा सकते हैं :-

**शयनानि प्रसूयन्ते चित्रास्तरणवन्ति च।**
**मनः कान्तानि माल्यानि फलन्त्यत्रापरे द्रुमाः॥**

-वा. रा.॥ कि.का. सर्ग 43-47॥

अनेक युद्धों में इन वानर वीरों की शूर-वीरता का परिचय हमें मिलता है। ये बल के भण्डार हैं, युद्ध से थकते नहीं हैं। ये अपने पराक्रम के लिए प्रसिद्ध और उद्योग करने में श्रेष्ठ हैं। वानरराज सुग्रीव श्रीराम को वानरों का बल बताते हुए कहते हैं :-

**ख्यातकर्मापदानाश्च बलवन्तो जितक्लमाः।**
**पराक्रमेषु विख्याता व्यवसायेषु चोत्तमाः॥**

-वा.रा.॥ कि.कां.सर्ग- 40/4॥

लक्ष्मण जी किष्किंधापुरी के वैभव व महलों की शोभा तथा उपवन और वाटिकाओं से सजे उस नगर को देखकर तथा वहाँ के मुख्य-मुख्य वानर यूथपतियों के बहुमंजिले भवनों एवं राजमार्ग पर उनके बंगलों पर दृष्टिपात करके वानर जाति के नगर-विन्यास तथा स्थापत्य कला और उनका वैभव देखकर विस्मित हो जाते हैं :-

**एतेषां कपिमुख्यानां राजमार्गे महात्मनाम्।**
**ददर्श गृहमुख्यानि महासाराणि लक्ष्मणः॥**

वा. रा. कि.कां. सर्ग 43.12

ऋक्षराज जाम्बवान, वानरी सेना के अधिपति, को जड़ी-बूटियों का वृहत ज्ञान था। उनके

आदेशानुसार ही हनुमान जी ऋषभ और कैलाश पर्वतों केबीच औषधियों के पर्वत से चार औषधियों- मृतसंजीवनी, विशल्यकरणी, सुवर्णकरणी और संधानी, को लेने के लिए हिमालय पर्वत पर गये। फिर उनकी सुगंध से ही श्रीराम लक्ष्मण, विभीषण सहित सारी सेना स्वस्थ एवं सचेत हो गई।

**तयोः शिखरयोर्मध्ये प्रदीप्तमतुलप्रभम् ।**
**सर्वौषधियुतं वीर द्रक्ष्यस्योषधिपर्वतम् ।**

-वा.रा. युद्ध का. सर्ग 74, श्लोक 31

**मृतसंजीवनीं चैव विशल्यकरणीमपि ।**
**सुवर्णकरणीं चैव संधानीं च महौषधीम् ॥**

वा.रा. सर्ग 74, श्लोक 33

रावणपुत्र इंद्रजित के साथ संग्राम करते हुए लक्ष्मण और विभीषण के शरीर में बाण आदि के प्रहारों से उन्हें श्वास लेने में भी कठिनाई हो रही थी, तो वानर यूथपति सुषेण ने उनकी दिव्य चिकित्सा की -

**एवमुक्तः स रामेण महात्मा हरियूथपः ।**
**लक्ष्मणाय ददौ नस्तः सुषेणः परमौषधम् ॥**

-वा. रा. युद्ध कांड सर्ग 91.24

महात्मा श्रीराम के कहने पर वानरयूथपति सुषेण ने लक्ष्मण की नाक में एक बहुत ही उत्तम औषधि लगा दी। इस के द्वारा शरीर से बाण निकल गये और उनकी सारी पीड़ा दूर हो गई। उनके शरीर में जितने भी घाव थे, वे सब भर गये।

बालि की पत्नी तारा का विलाप, बालि का श्रीराम से अंतिम संभाषण, बालि का दाह संस्कार, सुग्रीव का राज्याभिषेक, अंगद को युवराज पद, सुग्रीव को हनुमान जी द्वारा समझाना, तारा द्वारा लक्ष्मण जी को शान्त करना और सुग्रीव का वानरों को सीताजी को खोजने के लिए भौगोलिक वर्णन करते हुए चारों दिशाओं में भेजना आदि समस्त वानर जाति के कार्यकलापों पर दृष्टि-निक्षेप करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि वानर जाति किसी भी दृष्टिकोण से पशु-योनि में संगणित नहीं की जा सकती। उनमें सभी प्रकार से मानव-जाति की तरह ही आचार-विचार और सदाचार तथा परम्पराएँ वैदिक संस्कृति के समान ही उन्नत एवं समृद्ध थीं। अतः वानर जाति एक सुसभ्य एवं सुसंस्कृत जाति थी।

किसी भी घटना की ऐतिहासिकता उस घटना से जुड़े स्थलों, ग्रंथों, ऐतिहासिक साक्ष्यों, मार्गों, आकाशीय नक्षत्रों, खगोलीय घटनाओं, जल-प्लावन, हिमयुग आदि की प्रामाणिकताओं की जाँच में और साक्ष्य रूप में न्याय के व्यापक हित में वंशावलियों पर भी दृष्टिपात करना, उन की प्रामाणिकता के लिए आवश्यक है। रामकथाओं के अनुसार, उनकी वंशावली इस प्रकार है :-

ब्रह्मा, मारिच, कश्यप, सूर्य, वैवस्वत मनु, इक्ष्वाकु, कुक्षि, विकुक्षी, बाण, अनरणय, पृथु, त्रिशंकु, धुंधुमार, युवनाश्व, मांधाता, सुसंधि, ध्रुवसंधि, भरत, असित, सगर, असमंजस, अशुंमान, दिलीप, भगीरथी, ककुस्थ, रघु, सौदास, शंखण, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्रम, मरु, पशुश्रव, अम्बरीष, नहुष, नाभाग, अज, दशरथ और राम। इसी प्रकार राक्षस-वंश का वर्णन बाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के सर्ग 2 से लेकर 5 तक इस प्रकार हैः-

ब्रह्मा, कश्यप,मरीचि, पुलस्त्य, विश्रवा और विश्रवा के कुबेर, रावण, कुभंकरर्ण, विभीषण एवं पुत्री सूर्पणखा हुई। इनके पूर्व उस राक्षस वंश का विस्तार इस प्रकार है - ब्रह्मा, हेति, प्रहेति, विद्युत्केश, सुकेश, माल्यवान, सुमाली, और माली हुए।सुकेश के पुत्र ही पहले लंका के वासी हुए। माल्यवान के वज्रमुष्टि, विरुपाक्ष दुर्मुख, सुप्तघ्न, यज्ञकोप,मत्त एवं उन्मत्त तथा अनला नाम की पुत्री हुई। सुमाली से प्रहस्त, अकम्पन, विकट, कलिकामुख, धूम्राक्ष, दंड, सुपार्श्व, संहादि, प्रघस तथा भासकर्ण पुत्र एवं राका, पुष्पोत्कटा, कैकसी और कुंभनसी नामक पुत्रियाँ हुईं। माली से अनल,अनिल, हर और सम्पाति हुए, जो बाद में विभीषण के मंत्री बने।

सुमाली ने अपनी पुत्री कैकसी का विवाह विश्रवा मुनि से कर दिया। कैकसी के गर्भ से विश्रवा के रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण नामक पुत्र और पुत्री सूर्पणखा हुई। रावण ने कुबेर को हरा कर लंका पर आधिपत्य कर लिया। महर्षि वाल्मीकि प्रचेता मुनि के दसवें पुत्र थे। इस प्रकार पौराणिक एवं रामायण, महाभारत आदि में पायी जाने वाली वंशावलियों से यह प्रमाणित होता है कि त्रेतायुग में जन्मे राम और रावण तथा महर्षि वाल्मीकि समकालीन थे। भगवान श्रीराम का तिथिवार जन्म, विवाह, वनवास, सेतुबंध, राम-रावण-युद्ध से लेकर रामराज्य आदि समस्त घटनाओं का आँखों देखा हाल हमें लोमश-रामायण आदि में प्राप्त होता है। तिथिवार घटनाक्रम इस प्रकार है :-

**पुरा त्रेतायुगे प्राप्ते पूर्णांशे रघुनंदनः।**
**सूर्यवंशे समुत्पन्नो रामो राजीवलोचनः ॥**

-लोमश रामायण ॥22॥

पहले त्रेता युग के समय सूर्यवंश में कमल के समान नेत्रों वाले रघुनंदन श्री राम पूर्ण ब्रह्म रूप में अवतरित हुए। पश्चात वनवास अवधि के तेरहवें वर्ष सूर्पणखा राक्षसी के नाक कान काट डाले। तब माघ मास की शुक्ल अष्टमी तिथि को वृंद मुहुर्त में श्रीराम-लक्ष्मण की अनुपस्थिति में दसकंधर रावण ने सीता जी को चुराया।

**ततो माघसिताष्टम्यां मुहुर्ते वृन्दसंज्ञके।**
**राघवाभ्यां विना सीतां जहार दशकंधरः ॥ 13 ॥**

मार्गशीर्ष की शुक्ला नवमी को सम्पाति ने रावण की लंका में बैठी सीता जी की (दस मास बीत जाने पर) सूचना वानरों को दी और एकादशी को हनुमान समुद्र पार कर गये, द्वादशी को शीशम वृक्ष की शाखाओं में छुपे बैठे हनुमान जी रावण और सीता जी का संवाद सुनने लगे -

**मार्गशुक्लनवम्यान्तु वसन्तीं रावणालये ।**
**सम्पातिर्दशमे मासे आचल्यौ वानरेषु ताम् । ।14 ।।**
**एकादश्यां महेन्द्राद्रेः पुल्लुवे शतयोजनम् ।**
**द्वादश्यां शिंशपावृक्षे हनुमान् पर्य्यवस्थितः ।। 15 ।।**

तत्पश्चात, मार्ग कृष्णा अष्टमी उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में मध्यान्ह के समय विजय मुहुर्त में श्रीराम ने विजयार्थ प्रस्थान किया (अमान्त मास गणना के अनुसार)

**अष्टम्युत्तर फाल्गुन्यां मुहुर्ते विजयाऽभिधे ।**
**मध्ये प्राप्ते सहस्रांशौ प्रस्थान राघवस्य च । 17।**

पौष शुक्ल प्रतिपदा से तृतीया तक समुद्र तट पर प्रतीक्षा की और चतुर्थी तिथि को विभीषण शरण में आ पहुँचे -

**पौषशुक्ल प्रतिपदस्तृतीया यावदम्बुधेः ।**
**विभीषणश्चतुर्थ्यान्तु रामेण सह संगतः ।। 18 ।।**

पौष शुक्ल दशमी को सेतु बाँधना आरम्भ हुआ और त्रयोदशी को वह पूर्ण हो गया। चतुर्दशी को सेना श्रीराम सहित सुवेल पर्वत पर जा पहुँची।

**ततो दशम्यामारम्भस्त्रयोदश्यां समापनम् ।**
**चतुर्दश्यां सुवेलाद्रौ रामः सैन्यं न्यवेशयत् ।।19।।**

माघ शुक्ल प्रतिपदा को अंगद दूत बनकर गया। माघ शुक्ल द्वितीय से राक्षसों और वानरों का घोर युद्ध प्रारम्भ हो गया -

**प्रययावंगदो दौत्यं माघ शुक्लाद्यवासरे ।**
**माघ द्वितीयादिदिनैर्युद्धमासीच्च संकुलम् ।।20।**

चैत्र शुक्ल नवमी को लक्ष्मण शक्ति लगने से मूर्च्छित हो गए। तब हनुमान जी ने लक्ष्मण जी के लिए द्रोणादि पर्वत को आनयन किया :-

**चैत्र शुक्लनवम्यान्तु सौमित्रेः शक्तिभेदनम् ।**
**द्रौणाद्रिरांजनेयेन लक्ष्मणार्थ मुपाहृतः ।। 24।**

पांच दिन युद्ध करने के पश्चात विख्यात बलवान मेघनाद् लक्ष्मण द्वारा मारे गए। इस पर, रावण ने कुपित होकर, चैत्र कृष्ण द्वादशी से लेकर (अमान्त मास गणना के अनुसार) चैत्र कृष्ण चतुर्दशी पर्यन्त अठारह दिन तक युद्ध किया। अन्त में राम रावण के इस द्वैरथ युद्ध में रावण मारा गया -

**कोपवानथ द्वादश्यां यावत् कृष्ण चतुर्दशी ।**
**अष्टादशदिनैः रामो रावणं द्वैरथेऽवधीत् ।25।**

वैशाख शुक्ल द्वितीया को विभीषण को लंका के राज्य पर अभिषिक्त किया गया और तृतीया को अग्नि परीक्षा द्वारा सीता जी की परीक्षा ली गई एवं देवताओं द्वारा वरदान दिये गये-

**अभिषिक्तो द्वितीयायां लङ्काराज्ये विभीषणः ।**
**सीताशुद्धिस्तृतीयायां देवेभ्यो वरलम्भनम् ॥ 26॥**

माघ शुक्ल द्वितीया से लेकर चैत्र कृष्ण चतुर्दशी पर्यन्त सत्तासी दिन तक संग्राम चलता रहा। जिसमें पन्द्रह दिन बीच-बीच में युद्ध बंद रहा। शेष बहत्तर दिन तक निरंतर युध्द होता रहा। बैशाख शुक्ल पंचमीको जिस दिन चौदह वर्ष पूर्ण हो रहे थे, श्री राम समस्त परिवार सहित भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँच गये थे। अयोध्या पहुँचने पर वैशाख शुक्ला सप्तमी को भगवान का राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ।

**माघशुक्ल द्वितीया याश्चैत्र कृष्ण-चतुर्दशीम् ।**
**सप्ताशीति दिनेष्वेव, मध्यं पंच दशाहकम् । 27।**
**युद्धावहारः संग्रामो द्वासप्ततिदिनान्यभूत् ।**
**पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां माघवस्य तु ॥ 28।**
**भरद्वाजाश्रमे रामः सगणः समुपाविशत् ।**
**सप्तम्याममभिषिक्तोऽसावयोध्यायां रघुद्वहः । 29।**

इस प्रकार भगवान राम ने बयालीस वर्ष की आयु में राज्य प्राप्त किया। राज्याभिषेक के समय जानकी जी की आयु तैंतीस वर्ष थी -

**द्विचत्वारिंशके वर्षे रामो राज्यमकारयत् ।**
**सीतायाश्च त्रयस्त्रिंशद् वत्सराश्च तदाभवन् ॥**
**-लोमश रामायण ॥31॥**

इस तिथि क्रम में हम अंत में भगवान श्रीराम, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के जन्म लग्न, तिथि आदि पर विचार कर उनके ग्रह योग देखें। यज्ञ समाप्ति के पश्चात् जब छः ऋतुएँ बीत गईं, तब बारहवें मास मेंचैत्र के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कौसल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त, सर्वलोक वंदित जगदीश्वर श्रीराम को जन्म दिया। उस समय सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र ये पाँच ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान में विद्यमान थे तथा लग्न में चंद्रमा के साथ बृहस्पति विराजमान थे -

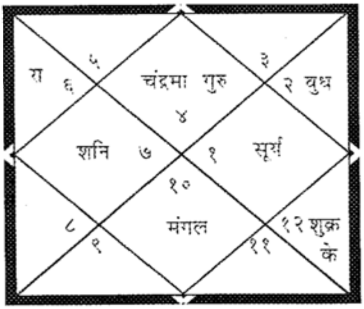
**ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः ।**
**ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ । 8॥**
**नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु ।**
**ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह ॥ 9॥**

इसी प्रकार भरत जी का जन्म पुष्य नक्षत्र तथा मीन लग्न में में हुआ था। सुमित्रा के दोनों पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न आश्लेषा नक्षत्र और कर्क लग्न में उत्पन्न हुए थे। उस समय सूर्य अपने उच्च स्थान में विराजमान थे-

**पुष्ये जातस्तु भरतो मीनलग्ने प्रसन्नधीः ।**
**सार्पे जातौ तु सौमित्रे कुलीरेऽभ्युदिते रवौ ॥ 15॥**

-वा. रा. ॥ बाल कां. -सर्ग 18 ॥

श्री राम का जन्म लग्न




[ नोट :- उत्तर भारत में प्रत्येक मास में कृष्ण पक्ष पहले होता है और शुक्ल पक्ष उसके बाद। इसलिए इसे पौर्णिमांत मास कहा जाता है। दूसरी ओर गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र आदि दक्षिणी प्रांतों में अमावस्या के बाद वाली प्रतिपदा से मास प्रारम्भ होता है। अतः इसे अमान्त मास कहते हैं। इस प्रकार उत्तर भारत में चैत्र कृष्ण पक्ष है, तो दक्षिण भारत में इसे ही फाल्गुन कृष्ण पक्ष माना जाएगा। इस तरह उत्तर और दक्षिण भारत के कृष्ण पक्ष में एक मास का अन्तर रहता है।]

इस प्रकार जब हम रामायण कालीन घटनाओं की तिथियों, ग्रह-नक्षत्रों की आकाशीय स्थितियों, खगोलीय घटनाओं, ऋतुओं एवं मौसम (जलवायु) आदि की ज्योतिषीय गणनाएँ करते हैं, तो श्रीराम का अवतरण लगभग 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व बैठता है। आज नासा (उपग्रह) आदि के चित्रों के विश्लेषण से भी वैज्ञानिक इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यह सेतु मानव-निर्मित है और लगभग 17 लाख 50 हजार वर्ष पुराना है। महर्षि वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड एवं लंकाकाण्ड में दी गई तिथियों एवं ग्रह-नक्षत्रों और जन्म-लग्न आदि की स्थितियों को जब कम्प्यूटर में डालकर देखा गया, तो प्लैनेटेरियम साफ्टवेयर के माध्यम से यह निर्धारित हुआ कि उस प्रकार की खगोलीय घटनाएं सबसे पहले आज से 5114 ई. पू. दोपहर के समय ग्रह-नक्षत्रादि की स्थितियाँ बिल्कुल वही थीं, जो महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम जन्म संबंधी वर्णन अपनी रामायण मे लिखा है। किन्तु उस काल मौसम और उस के तापक्रम में कुछ माह का अन्तर प्रतीत होता है। जैसा गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा कि उस समय न अधिक गर्मी थी और न अधिक शीत था -

**मध्यदिवस अति सीत न घामा**
**पावन काल लोक विश्रामा ।**

-रामचरित मा.।बाल कां.-॥190॥

इस तरह जब हम त्रेतायुग के उस काल की ज्योतिषीय गणना करते हैं, तो हमें वही ग्रह-नक्षत्र स्थितियाँ, ऋतु एवं जलवायु आदि अब से 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व यथावत प्राप्त होती हैं। अर्थात श्रीराम का अवतरण समय (जन्म) चैत्रमाह की नवमी तिथि को हुआ। अतएव राम सेतु का निर्माण काल अब से लगभग 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व निर्धारित होता है। भगवान श्रीराम सीता जी को अयोध्या लौटते समय पुष्पक विमान से सेतुबंध को दिखाते हुए कहते हैं कि विशाल लोचने ! खारे पानी के समुद्र में यह मेरा बँधवाया हुआ पुल है, जो नलसेतु के नाम से विख्यात हुआ। देवि ! तुम्हारे लिए ही यह अत्यंत दुष्कर सेतु बाँधा गया था -

**एष सेतुर्मया बद्ध सागरे लवणार्णवे ।**
**तब हेतोर्विशालाक्षि नलसेतुः सुदुष्करः ॥**

-वा.रा. ॥युद्ध काण्ड।सर्ग -123 श्लोक -161 ॥

इसी प्रकार श्री राम पुष्पक विमान से सीता जी को वह विशाल टापू, जहाँ लंका-चढ़ाई के लिए जाते समय सेना ने पड़ाव डाला था और जहाँ उन्होंने भगवान शिव की स्थापना की थी सेतुबंध, विभीषण शरण-स्थली आदि को भी दिखाते हैं।

यहाँ राम सेतु से संबंधित कुछ अन्तःसाक्ष्यों का परीक्षण परम अनिवार्य हो गया है। श्रीराम ने समुद्र से प्रार्थना एवं सत्याग्रह करने के पश्चात कुपित होकर एक ब्रह्मदण्ड के समान भयंकर बाण को ब्रह्मास्त्र से अभिमंत्रित करके अपने श्रेष्ठ धनुष पर चढ़ा लिया। फिर समुद्र के प्रगट होने पर श्रीराम ने पूछा-वरुणालय! मेरा यह विशाल बाण अमोघ है। बताओ इसे किस स्थान पर छोड़ा जाय। तब समुद्र ने कहा कि आप इस बाण को मेरे शत्रुओं के देश द्रुमकुल्य, जिसके निवासी रूप और कर्म में बड़े भयानक हैं, और सबके सब पापी और लुटेरे हैं, उन पर यह बाण छोड़िये। महामना समुद्र के दिखाए अनुसार उसी देश में श्रीराम ने वह प्रज्वलित बाण छोड़ दिया। वह वज्र और अशनि के समान तेजस्वी बाण जिस स्थान पर गिरा था, वह स्थान, उस बाण के कारण ही पृथ्वी में दुर्गम मरुभूमि के नाम से विख्यात हुआ।

उस बाण की चोट से जो वसुधा में छिद्र हुआ, उसमें होकर रसातल का जल ऊपर को उछलने लगा। वह छिद्र कुएँ के समान हो गया और व्रण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस कुएँ से सदा निकलता हुआ जल समुद्र के जल की भाँति ही दिखाई देता है। उसकी दाह से उस क्षेत्र के तालाब-पोखरें आदि का समस्त जल सूख गया। फिर श्रीराम के वरदान से उस भूमि में घी आदि चिकने पदार्थ (पेट्रोलियम पदार्थ आदि) का सुलभ होना प्रारम्भ हुआ।

**स बभूव तदा कूपो व्रण इत्येव विश्रुतः ।**
**सततं चोत्थितं तोयं समुद्रस्येव दृश्यते ॥**
**अवदारणशब्दश्च दारुणः समपद्यत ।**
**तस्मात् तद् बाणपातेन अपः कुक्षिष्वशोषयत् ॥**

-वा. रा. ॥ युद्ध काण्ड सर्ग 22, श्लोक 38-39 ॥

इस संबंध में वैज्ञानिकों का कथन है कि यह मरुस्थल अब से लगभग 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व बना और अद्भुत रूप से यहाँ सदा आणविक शस्त्र के प्रयोग से उत्पन्न हुई रेडियो धार्मिता देखी जाती है। इसी प्रकार हनुमान जी, श्री सीता-अन्वेषण के लिए समुद्रोल्लंघन करने के पश्चात जब वे लंका में रावण के भवन (हवेली) में, सीता जी की खोज करते हुए, सब ओर चक्कर लगाने लगे, ने राक्षसराज रावण का निजी निवास-स्थान देखा। चार दाँत व तीन दाँत वाले हाथी इस विस्तृत भवन को चारों ओर से घेरकर खड़े थे और हाथों में हथियार लिए बहुत से राक्षस उसकी रक्षा करते थे -

**चतुर्विषाणैर्द्विरदैस्त्रिविषाणैस्तथैव च ।**
**परिक्षिप्तमसम्बाधं रक्ष्यमाणमुदायुधैः ॥**

-वा.रा. । सुंदर कांड, नवम सर्ग, श्लोक 5 ॥

जब वैज्ञानिकों को तीन-चार दाँत वाले हाथियों के फासिल्स प्राप्त हुए और उनका इस धरती पर उपस्थिति काल निर्धारित किया गया, तो वह भी 17 लाख 50 हजार वर्ष के लगभग निर्धारित हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीरामसेतु के निर्माण का काल लगभग 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व ही युक्तिसंगत प्रमाणित होता है। वर्तमान में इस राम-सेतु की वर्तमान स्थिति और उसे तोड़कर नहर बनाने वाली सेतु-समुद्रम् परियोजना पर देश के साथ-साथ पूरे विश्व का मानस आंदोलित हो रहा है। इसलिए इसके द्वारा होने वाले गुणावगुण की विवेचना यहाँ अब आवश्यक हो गई है :-

यह रामसेतु 48 कि.मी. लम्बा, तीन किलोमीटर चौड़ा तथा 30 मीटर गहरा है। यह सेतु भारत के रामेश्वरम् से श्रीलंका की मन्नार खाड़ी के बीच है। यह समुद्र में 3 से 10 मीटर डूबा हुआ है। इस पुल की बनावट अभियांत्रिक जगत की अद्भुत कृति है। अब से लगभग 18,000 वर्ष पूर्व तक समुद्री सतह आज की समुद्री सतह से काफी नीचे थी। 18,000 वर्ष पूर्व हिमयुग का एक विराट दौर आया था। उस काल में पूरी पृथ्वी पर सर्वाधिक बर्फबारी हुई। विश्व के अनेक भागों में जल में डूबे शैल (कोरल) के अध्ययन से यह प्रक्रिया प्रमाणित हुई है। उस समय सागर की सतह वर्तमान सतह से 130 मीटर नीचे थी। यह भारत के पश्चिमी और पूर्वी सागर तटों के अध्ययन से भी स्पष्ट होता है, जहाँ सागर के एक से दो मीटर गहराई पर कोरल मिलते हैं, जो पूर्व कालीन सागर तटीय क्षेत्र स्तर के स्पष्ट संकेत देते हैं।

सन् 1480 में एक समुद्री तूफान पुनः आया। इस तूफान के कारण यह पुल 3 से 10 फीट की गहराई में डूब गया जो आज भी उसी प्रकार है। सन् 1860 में एक अंग्रेज की पनडुब्बी इस सेतु से टकराई थी। अतः अंग्रेजों ने उस नौसेना के अधिकारी के नाम पर इस रामसेतु का नाम एडम्स ब्रिज रख दिया।

सेतु समुद्रम् पोत परिवहन परियोजना पर कार्य करने का विचार सबसे पहले एक ब्रिटिश नौसैनिक कमाण्डर ए.डी. टेलर के दिमाग में आया। उस समय समुद्री जहाज आज की अपेक्षाकृत

बहुत ही छोटे हुआ करते थे। सन 1857 की क्रांति से सकपकाई ब्रिटिश सरकार ने गहन विचार-विमर्श करने के बाद, हिन्दू-आस्था पर किसी प्रकार की आँच न आए-इसे दृष्टिगत रखते हुए, अन्ततोगत्वा इस परियोजना को हाथ लगाना उचित नहीं समझा। विगत 150 वर्षों में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए। समुद्री जहाज अपेक्षाकृत कई गुना बड़े हो गये। अब आर्थिक रूप से जहाजों का आकार बड़ा, मार्ग छोटा करना व परिचालन समय पर अधिक जोर दिया जाता है।

सन् 1860 से लेकर आजादी के पूर्व तक गुप्त रूप से इस परियोजना के संदर्भ में ब्रिटिश सरकार ने नौ प्रस्तावों पर विचार किया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, इस सेतु समुद्रम परियोजना पर मुद्लियार कमेटी 1965, नागेन्द्र सिंह कमेटी रिपोर्ट 1967, सी.बी. वेंकटैश्वरन कमेटी रिपोर्ट 1968, लक्ष्मी नारायण कमेटी रिपोर्ट 1981, पल्लवन ट्रांसपोर्ट कन्सलटेन्सी सर्विसेज रिपोर्ट 1996 ने अपनी-अपनी रिपोर्ट सरकार के समक्ष प्रस्तुत कीं। किन्तु किसी भी समिति ने जहाजों के आने जाने के लिए श्री रामसेतु को तोड़ने का सुझाव नहीं दिया। इन सभी पूर्व गठित समितियों ने जहाजों के आवागमन के लिए अनेक वैकल्पिक मार्ग सुझाए। सभी समितियों ने रामसेतु के तोड़ने के विकल्प को देश के लिए घातक बताते हुए कई प्रकार की चेतावनियाँ देकर सरकार को सावधान भी किया है।

इसके बावजूद जिस काम को करने से अंग्रेज भी बचते रहे। उसे करने का दुस्साहस वर्तमान केन्द्रीय सरकार कर रही है। सभी विकल्पों का विचार किये बिना, जिस जल्दबाजी में इस परियोजना का उद्घाटन किया गया-उसे किसी भी दृष्टि से उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। भारत और श्रीलंका के बीच का समुद्र दोनों देशों की ऐतिहासिक विरासत भी है। जिसका विचार राष्ट्रहित में सर्वोपरि मानकर,हर कीमत पर किया जाना केन्द्रीय शासन की दूरदृष्टि का परिचायक होता।

भगवान श्रीराम द्वारा निर्मित रामसेतु यदि किसी अल्पसंख्यक समुदाय के प्रमुख महापुरुष के नाम के साथ जुड़ा होता, तो ये क्षुद्र वोटों के स्वार्थों में आकंठ डूबे राजनीतिक दल पंथ-निरपेक्षता का ढिंढोरा पीट-पीट कर इसे बचाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देते। अनेक सेक्यूलर बिरादरी के साहित्यकार एवं पर्यावरणविद तथा मानव-अधिकार का ढोंग करने वाले लोग पूरी निर्लज्जता से इस मोर्चे पर डटे हुए होते। हिन्दू समाज विकास का विरोधी नहीं है, पर यदि कोई भी विकास की आड़ में हिन्दू विरोधी और राष्ट्र विरोधी मानसिकता से षड़यन्त्र रचेगा, तो उसे हिन्दू-समाज के भयंकर और प्रलयंकर आक्रोश का सामना अवश्य ही करना पड़ेगा।

सेतु समुद्रम् पोत नहर परियोजना को क्रियान्वित करने वाली केन्द्रीय सरकार का कथन है कि अभी वर्तमान में कोलकाता बन्दरगाह से तूतीकोरन बन्दरगाह जाने हेतु मालवाहक जहाजों को अनावश्यक रूप से श्रीलंका का चक्कर लगाना पड़ता है। इस अनावश्यक चक्कर के कारण एक जहाज को 120 समुद्री मील अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ती है। यदि भारत सरकार और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि की सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना को मूर्त रूप दे दिया जाय, तो सरकार की समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाएँगी। इससे सरकार को धन का एक अजस्र स्रोत मिल जाएगा और केन्द्र सरकार और उसके केन्द्रीय जहाज रानी विभाग की गरीबी हमेशा के लिए दूर हो

जाएगी। आइए देखें कि उनकी इन मूल्यवान बातों और जनता द्वारा उनके बौद्धिक दिवालियापन के गलत मुद्दे उछालने के पीछे क्या सत्यता है :-

मालवाहक जहाजों द्वारा उक्त अतिरिक्त दूरी को समाप्त करने के लिए केन्द्र सरकार श्रीरामसेतु को तोड़कर 152 कि.मी. लम्बी एक नहर बनाना चाहती है, जो 12 मीटर गहरी और 300 मीटर चौड़ी होगी। इस नहर से होकर 32000 मैट्रिक टन वजन के लगभग 3055 जहाज प्रतिवर्ष निकला करेंगे। नहर की सुविधा देने की एवज में प्रति जहाज से कर रुप में छः लाख रुपए लिए जाएंगे। इस परियोजना पर 2427 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत आएगी।

इस परियोजना के क्रियान्वयन पर लगभग एक करोड़ क्यूबिक मीटर मलबे को इस नहर से कुछ दूरी पर फेंकने की व्यवस्था की गई है। इस क्षेत्र में चक्रवातों एवं तीव्र लहरों से पुनः रेत जमने (सिल्टिंग) की प्रक्रियाओं से हमेशा जूझते रहना पड़ेगा और इस रेत निकासी की व्यवस्था पर प्रतिवर्ष करोड़ों रूपया खर्च करते रहना-एक सतत प्रक्रिया का अंग होगा। यहाँ पर्यावरण का भी संतुलन खराब हो जाएगा। स्वेज और पनामा दोनों नहरें समुद्र में नहीं बनाई गई हैं। वे बल्कि दो अलग-अलग समुद्रों को जोड़ने के लिए, वहाँ की कठोर जमीन को खोदकर बनाई गई हैं। यदि यहाँ रेत समुद्री तूफानों के कारण बड़ी मात्रा में जम जाता है तो उसे तुरंत हटाने की कोई व्यवस्था संभव नहीं होगी। इसलिए आपके रेत निकासी तक जहाजों को किसी निकट के बन्दरगाह पर खड़ा रखना किसी भी मालिक या कम्पनी को घाटे का सौदा होगा।

इस प्रकार भारत के पूर्वीतट से पश्चिमी तट तक अर्थात कोलकाता से तूतीकोरिन, अथवा चेन्नई से तूतीकोरन के सीधे मार्ग की 152 कि.मी. की दूरी को पूरा करने में जहाजों को न तो समय की बचत होगी और न धन की। चूँकि इस नहर से जहाज निकालने के लिए उसकी गति को आधा कम करना होगा और साधारण चालक को बदलकर पायलट चालक नियुक्त करना होगा। जिस कारण श्रम और धन की बचत न होकर अतिरिक्त खतरा लुभाव में लेना होगा। तूतीकोरिन बंदरगाह तक जाने वाली नदी 25 कि.मी. लम्बी है तथा 32 हजार टन क्षमता वाले जहाज को छः लाख रुपये पायलट को भुगतान करना होगा। आज विश्व में इस क्षमता के जहाज मात्र 5 प्रतिशत हैं।

आज आर्थिक दृष्टि से ऐसे जहाजों की माँग अधिक है जो न्यूनतम परिवहन व्यय एवं कम समय में माल को ढोने में समर्थ हो सकें। इसलिए विश्व के 95 प्रतिशत जहाज 60हजार से 1 लाख 85 हजार मीटर वजन के बड़े जहाज विश्व-परिवहन में लगे हुए हैं, लेकिन इस परियोजना का ढिंढोरा पीटने वालों को राष्ट्र को यह बताना होगा कि इस नहर से जब 95 प्रतिशत परिवहन तो संभव ही नहीं होगा, तो शेष 5 प्रतिशत का भी क्या भरोसा किया जा सकता है। छोटे जहाजों को भी मात्र दो घंटे की समय-बचत के साथ लगभग 20 लाख रुपया अतिरिक्त खर्च आएगा। फिर इस परियोजना का उपयोग कोई क्यों करना चाहेगा ? यही कारण है कि केन्द्रीय सरकार के वित्तमंत्री की विश्व की शिपिंग कम्पनियों से की गई कारुणिक अपील पर भी आज तक विश्व की किसी भी कम्पनी ने इस परियोजना के तथाकथित अनंत लाभों को लेने की कोई पेशकश नहीं की है।

इसलिए बुद्धिमानी इस बात पर है कि इस परियोजना को लागू करना, विश्व में अपनी नाक

बचाने और अमेरिकन आकाओं को खुश रखना, यदि अनिवार्य है, तो साँप मरे ना लाठी टूटे वाली कहावत को सरकार को अपनाकर कुछ वैकल्पिक सुझावों पर क्रियान्वयन करना ही समय को देखते हुए उचित होगा। रामेश्वरम् से तीन कि.मी. दूर धनुष कोटि से यह नहर निकाली जा सकती है और श्रीराम सेतु का भी इससे बचाव हो सकता है। इससे श्रीलंका में आतंक का पर्याय बने लिट्टे से भी परिवहन को कोई संभावित दुष्परिणाम नहीं झेलना पड़ेगा।

एक यह भी विकल्प है कि तूतीकोरियन से कोलकाता तक दोहरी रेल्वे लाईन बिछाकर कन्टेनरों से परिवहन की सुविधा दी जाए। इससे थोरियम के डियागो गार्सिया की ओर प्रवाह करने की संभावना समाप्त हो जाएगी और अमेरिका का तमाम षड़यंत्र धरा का धरा रह जाएगा। इससे करुणानिधि जैसे व्यक्तियों को विश्व के 60 देशों के 200 करोड़ों लोगों के आराध्य, भगवान श्रीराम की आलोचना और अपने पर्यटन विभाग के माध्यम से पर्यटन लाभ कमाने के दोगले चरित्र से भी मुक्ति मिल जाएगी। केन्द्रीय सरकार के अन्तरिक्ष (स्पेस) मंत्रालय द्वारा भी सन 2006 में इसी प्रकार का दो पृष्ठ का एक सरकारी प्रकाशन कर श्रीराम सेतु को मानव निर्मित बताया गया था।

रामेश्वरम् से 666 कि.मी. दूर चेन्नई में एल एण्ड टी रामबोल नामक एक सलाहकार संस्था है। यह संस्था इस परियोजना की रिपोर्ट तैयार करने वाली इंजीनियरिंग सलाहकार संस्था है। इस परियोजना के महारथियों के साथ जुड़े इस संस्था के अध्यक्ष श्री टी. श्रीनिवासन से जब यह पूछा गया कि क्या वास्तव में इस परियोजना से ज़हाजों के आवागमन से किसी प्रकार से भी समय और धन की बचत हो पायेगी, तो इन प्रश्नों का वे कोई तर्कयुक्त उत्तर या समाधान नहीं दे पाए। कन्याकुमारी एवं तूतीकोरन से चलने वाले जहाजों के समय व धन की बचत के अनुमान उन्होंने अनावश्यक रूप से बढ़ा-चढ़ाकर लगाए हैं। उनके इन तमाम अनुमानों का तर्क संगत खण्डन प्रसिद्ध इन्फ्रास्ट्रक्चर अर्थशास्त्री श्री जैकब जोन ने करके इन अनुमानों को असत्य प्रमाणित किया है।

श्री जैकब के अनुसार यूरोप व अफ्रीका से आने वाले जहाज कभी इन बंदरगाहों पर नहीं जाते। इसलिए इनके समय बचने की बात एकदम मिथ्या एवं कपोल-कल्पना है। यह पक्ष इस परियोजना का एक अंधेरा पक्ष है, जो राष्ट्र की आँखों में धूल झोंक कर एक राष्ट्र-द्रोह तो है ही, देश के साथ धोखाधड़ी एवं बेईमानी भी है। चूँकि इस परियोजना के मूल्यांकन में कुल खर्च का 60 प्रतिशत से अधिक भाग इन्हीं विदेशी समुद्री जहाजों से मिलने का झूठा अनुमान प्रस्तुत किया गया है।

सेतुसमुद्रम् कारपोरेशन लिमिटेड के वरिष्ठ अभियंता श्री मैनिक्कम और मैसर्स ड्रैजिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया के चेयरमैन भी इन प्रश्नों के कोई समाधान कारक उत्तर नहीं दे सके। समुद्री मामलों के अर्थशास्त्री एवं रिसर्च एण्ड इन्फोरमेशन फोर डवलपिंग कन्ट्रीज के एसोसिएट फैलो श्री प्रवीर डे भी इस परियोजना द्वारा बचने वाले समय एवं धन के अनुमानों का वास्तविकता से दूर-दूर का रिश्ता न होना मानते हैं। सेवा निवृत्त नौ सेना कैप्टेन एच. बाला कृष्णन का भी यही कथन है कि विश्व के 95 प्रतिशत जहाज (बड़े) इस नहर से नहीं जा सकेंगे। सेन्ट्रल वाटर एण्ड पावर रिसर्च स्टेशन के अधीक्षक श्री वी. एम बैन्द्रे (पुणे) का कथन है कि इस परियोजना को प्रारम्भ करने के लिए परम आवश्यक हाइड्रोलिक मॉडल्स आदि के टैस्ट ही नहीं किये गये हैं। इसलिए इसकी

असफलता की अधिक सम्भावनाएँ हैं।

आखिर इस परियोजना से सरकार क्या हासिल करना चाहती है-यह समझ से परे है। क्योंकि जहाज उद्योग को तो इससे कुछ मिलने वाला नहीं है। इससे न तो समय, न तेल और न धन की बचत होगी। भला कोई क्यों गली कूचों में जहाज चलाना चाहेगा, जब उसे छः लेन का एक्सप्रेस हाइवे उपलब्ध है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह सिर्फ विश्व की कुटिल राजनीति है, जो भारत को रामसेतु तोड़ने के लिए विवश कर रही है। और भारत की केन्द्रीय सरकार विश्व की इन कुटिल शक्तियों के कूटनीतिक जाल में फँस गयी है। ढाई हजार करोड़ की इस परियोजना में निजी क्षेत्र कोई रुचि नहीं ले रहा है। अब तो ऐसा लगता है कि इस नहर से केवल विशेष व्यक्ति की शिपिंग कम्पनी के जहाज और लिट्टे के आतंकवादी जहाजों के अतिरिक्त अन्य कोई जहाज नहीं आएगा और आएंगी तो केवल सुनामी की विनाशकारी लहरें ही इस नहर से आकर केरल और तमिलनाडु के तटवर्ती क्षेत्रों में भयंकर तबाही मचा देंगी।

सेतु समुद्रम् परियोजना के संदर्भ में यह कहना भी आवश्यक है कि श्रीरामसेतु के मानव द्वारा निर्मित होने के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। भूगर्भीय एवं भू-भौतिकीय सर्वेक्षण से यह पता चला है कि रामसेतु एक भौगोलिक निर्माण है। इससे यह भी प्रमाण मिलता है कि इस सेतु के उत्तर में पाल्क-बे की ओर यह निर्माण नीचे की ओर विस्तृत होता गया है और यह सेतु-प्रक्षिप्त निर्माण के रूप में ऊपर उठता हुआ दिखाई देता है। ट्रिंकोमाली तक किये गये इस निर्माण में कहीं-कहीं सौ मीटर चौड़ाई में लघु-दबाव दिखते हैं। इसके साथ ही जलीय लहरों के अंतरघात से निर्मित रेतीले द्वीप भी दिखाई देते हैं। यह दबाव और द्वीप टेक्टॉनिक रचनाएं प्रतीत होती हैं, जिनके परिणाम स्वरूप बार्थीमेट्री में भी परिवर्तन आए हैं।

इस सेतु निर्माण में नल द्वारा प्रयुक्त किए गये तैरने वाले पत्थरों की उपस्थिति इसे मानवनिर्मित सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। चूँकि इन पत्थरों की संरचना यह सिद्ध करती है कि इनका निर्माण समुद्री जल में संभव ही नहीं है। इसलिए ये पत्थर निश्चित रूप से बाहर से लाकर इस सेतु में लगाए गये हैं। ऐसा एक पत्थर प्रदर्शन के लिए श्री दूधाधारी मठ, रायपुर (छत्तीसगढ़) में भी रखा गया है।

पूर्व केन्द्रीय विधि मंत्री एवं जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी और हिन्दु मुन्नानी के संरक्षक और दक्षिण भारत के प्रख्यात हिन्दु नेता श्री रामगोपालन ने चेन्नई उच्च न्यायालय में श्रीरामसेतु के ध्वंस के विरुद्ध एक याचिका दायर की। याचिका की सुनवाई करते हुए 18 और 19 जून 2007 को माननीय उच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार से पूछा है कि वह यह बताए कि किस आधार पर वह कहती है कि यह सेतु मानव निर्मित नहीं है। यदि यह मानव निर्मित नहीं भी है, और यदि उसे कोई प्राचीन दुर्लभ प्राकृतिक अवशेष ही माना जाए, तो भी क्या उसे सुरक्षित रखकर सेतु समुद्रम् परियोजना पूरी नहीं की जा सकती। माननीय न्यायालय ने सरकार से उन तमाम विकल्पों के बारे में भी पूछा है जो अब तक की सभी पिछली समितियों ने सरकार को सुझाए थे। माननीय न्यायालय ने सरकार को एक माह का समय देते हुए निर्माण कार्य पर तब तक के लिए रोक

लगा दी। गत दिनों जब डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी को यह ज्ञात हुआ कि केन्द्र सरकार राम-सेतु को जगह-जगह पर डायनामाइट और आरडीएक्स जैसे विस्फोटकों से इस योजना पर अचानक काम करने जा रही है, तो उन्होंने तत्काल माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष पूरे मामले में हस्तक्षेप करने के लिए याचिका प्रस्तुत की। सम्प्रति सर्वोच्च न्यायालय ने तत्काल राहत देने के साथ ही केन्द्रीय सरकार को उत्तर प्रस्तुत करने का निर्देश दिया।

केन्द्रीय सरकार ने इसके प्रत्युत्तर में जो जवाब दाखिल किया है, उस शपथ पत्र में सरकार ने करोड़ों हिन्दुओं की आस्था एवं विश्वास पर आघात करते हुए कहा है कि राम और रावण केवल मिथक मात्र हैं। उनके बीच कभी कोई युद्ध हुआ ही नहीं। इसलिए रामसेतु के अस्तित्व का तो कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता।

उसी प्रकार संसद में भी केन्द्रीय जहाज रानी और परिवहन मंत्री ने अपने असत्य भरे वक्तव्य एवं आचरण से न केवल भारत की सर्वोच्च संस्था की गरिमा गिराई अपितु करोड़ों हिन्दुओं के प्रति अपमान जनक आचरण प्रदर्शित किया। इन जैसे लोगों को श्रीलंका और इंडोनेशिया जैसे सैकड़ों देशों से सबक लेना चाहिए।

श्रीलंका की सरकार ने अपने यहाँ श्रीराम-सीता संबंधित 34 ऐतिहासिक स्थलों को विकसित कर और उन्हें पर्यटन की हर सेवा से जोड़कर अपनी महान सांस्कृतिक धरोहरों को सुरक्षित रखने एवं विश्व के सामने देखने योग्य (दर्शनीय) स्थलों को गौरव के साथ प्रदर्शित एवं प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। वही इंडोनेशिया जैसे देश ने इस्लामिक देश होने के बावजूद, अपनी महान संस्कृति को अद्‌भुत रूप से सुरक्षित कर विश्व के समक्ष एक अनुकरण योग्य उदाहरण प्रस्तुत किया है। इंडोनेशिया ने अपनी मुद्रा पर गणेश जी का चित्र प्रकाशित किया है। उसने अपनी विमान सेवा का नामकरण गरुड़-एयर लाइन्स रखा है। यह सब देखकर भी हमारी सरकार किस प्रकार का व्यवहार कर रही है। इसे बड़ा ही आश्चर्यजनक निंदनीय आचरण कहा जा सकता है।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि जन-आस्था यदि प्राकृतिक देन भी है, तो भी उसे तोड़ा नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए जम्मू-कश्मीर स्थित अमरनाथ की पवित्र गुफा में प्राकृतिक रूप से शिवलिंग का निर्माण हिमशिवलिंग के रूप में होता है। क्या उसे इस आधार पर तोड़ दिया जाए कि वह मानव निर्मित न होने के कारण स्वीकार किये जाने योग्य नहीं है। इस संदर्भ में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का 1958 का वह प्रसिद्ध न्याय-दृष्टांत है, जिसमें ई. रामास्वामी नायकर को एक बाजार से ही खरीदी गई गणेश की मूर्ति को तोड़ने के अपराध में तीन वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी। उसी प्रकार माननीय उच्च न्यायालय पंजाब एवं हरियाणा ने 1993 के अपने प्रसिद्ध न्याय-दृष्टांत में ब्रह्मसरोवर के अस्तित्व एवं आस्था को सुरक्षित रखने के लिए एक भवन-निर्माता के दावे को निरस्त कर दिया था। इसलिए रामसेतु तो एक महान कृति है - आपका किसी आस्था के एक पत्थर को तोड़ने का दुराग्रह भी आपको अपराधी सिद्ध कर जेल के सींखचो के पीछे धकेल देने के लिए पर्याप्त कारण बन सकता है।

उन्हें यह सत्य आज नहीं तो कल स्वीकार करना होगा कि हमारी और हमारी संस्कृति की पहचान केवल श्रीराम से है-रावण से नहीं। इसलिए इन रावणवादी व्यक्तियों एवं विचारधाराओं के विरुद्ध जन-चेतना को जगाकर एक सशक्त आंदोलन चलाए जाने की समय की माँग है, ताकि इनके नापाक इरादों और मन्सूबों को समय रहते ध्वस्त कर दिया जाए- उन्हें नेस्तनाबूद कर दिया जाए। जन आस्था की यह छोटी सी चिंगारी एक दिन दावानल बन सकती है।

भारत वर्ष के पूर्व दक्षिण और पश्चिममें जो समुद्र है, जिसे हिन्द महासागर या इण्डियन ओशन कहा जाता है, उसमें दो खाड़ियाँ हैं। एक है बंगाल की खाड़ी, जो भारत के पूर्व में और बंगाल के दक्षिण में है। दूसरी है मन्नार की खाड़ी जो श्री लंका के उत्तर-पश्चिम में हैं। इन दोनों के बीच में है पाल्क जलडमरु। इसी प्रकार भारत के दक्षिण तट पर एक स्थल है रामनकोईल। इसी रामनकोईल से श्रीलंका के समुद्री तट पर स्थित तलईमन्नार को जोड़ने वाले सेतु को हनुमान जी और वानर सेना ने नल की अगुवाई में लंका पर चढाई करने के लिए तैयार किया था। यही सेतु रामार-सेतु या रामसेतु के नाम से प्रसिद्ध है। इसी दक्षिण तट पर तूतीकोरिन बंदरगाह है।

यदि पानी के मालवाहक जहाज को तूतीकोरिन बंदरगाह से कोलकता बंदरगाह पर जाना हो. तो इस श्रीरामसेतु के कारण वह सीधे नहीं जा सकता। इसलिए इसे श्रीलंका का चक्कर लगाकर अपना मार्ग तय करना पड़ता है। जिस कारण उसे 120 समुद्र मील के लगभग अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ती है और उसी अनुपात में उसे अधिक समय भी लगता है।

अब यदि तूतीकोरिन बंदरगाह अथवा कोलकाता को सीधे जोड़ना हो तो इस परियोजना में रामसेतु को तोड़कर ही यह विकल्प क्यों सुझाया गया है ? जब सीधे मार्ग के लिए अन्य विकल्प भी हैं। अब से पूर्व सेतुसमुद्रम नहर परियोजना के लिए अन्य समितियों ने इस सेतु को बिना छेड़-छाड़ या ध्वंस किए भी कुछ विकल्प सुझाए हैं। किन्तु करूणानिधि एवं केन्द्रीय जहाजरानी और सड़क परिवहन मंत्री के पूर्वाग्रहों के कारण और उनके दबाव में केन्द्र सरकार तथा मकपा की मिली भगत से अमेरिका के कूटनीतिक जाल में फंसे ये लोग और सरकारें, केवल रामसेतु को ध्वस्त करने वाले विकल्प पर ही क्यों आमादा हो गई हैं ? अमेरिका के दबाव में केन्द्रीय सरकार की हड़बड़ाहट और उतावलापन क्या ही इस पूरी प्रकिया में दृष्टिगोचर नहीं होता है ?

तूतीकोरिन बंदरगाह ट्रस्ट को प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा 8 मार्च 2005 को इस परियोजना पर अपना स्पष्टीकरण देने के लिए 16 आपत्तियों वाला एक पत्र भेजा जाता है। तूतीकोरिन बंदरगाह ट्रस्ट के बुध्दिमान अध्यक्ष रघुपति जी उन 16 आपत्तियों का उत्तर 30 जून 2005 को भेजते हैं और इस प्रकार बिना कोई गहराई से छानबीन किये और केवल और केवल एक दिन में ही अंतिम स्वीकृति होना, तथा तमाम निमंत्रण पत्रों का छपना, बंटना और प्रधानमंत्री का दौरा आदि का निश्चित हो जाना तथा दूसरे दिन शुभ-महूर्त में केन्द्रीय सरकार एवं तमिलनाडु सरकार ने अपने पूरे दल बल के साथ 2 जुलाई 2005 को उक्त रामसेतु विध्वंसक परियोजना का विधिवत उद्घाटन कर दिया। उन्होंने इस स्वर्णिम दुर्लभ अवसर पर गदगद होते हुए विश्व विजयी मुद्रा में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री को भरपूर आश्वासन देते हुए घोषणा की कि केन्द्रीय सरकार इस परियोजना को हर प्रकार से

भरपूर सहायता देगी और इस मद में उसे धन की कोई कमी नहीं होने दी जाऐगी। इस प्रकार उनके करकमलों द्वारा विश्व कल्याण के लिए दिए गए उनके अशीर्वचनों के साथ गाजे-बाजे और हर्ष ध्वनियों के साथ उक्त परियोजना का शुभ उद्घाटन संपन्न हुआ।

यहाँ यह घटना क्रम भी दृष्टि में रखना युक्तियुक्त होगा कि 10 अक्टूबर2004 को नासा द्वारा रामसेतु के चित्रों एवं तथ्यों को प्रसारित करने के पश्चात अमेरिका ने अपनी कुटिल चालों से इस सेतु पर तेजी से षडयंत्रों का ताना-बाना बुनना शुरु किया। उसकी नौ सेना ने भारत श्रीलंका के बीच की जल संधि को अमान्य करने और उसे अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में लाने का संकेत 23 जून 2005 को अपना मंतव्य देकर प्रकट कर दिया। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि किस प्रकार केन्द्र सरकार अमेरिका के कुटिल दबाव में उक्त परियोजना के क्रियान्वयन मे लग गई है।

संसार का कोई भी स्वाभिमानी देश इसप्रकार अपने राष्ट्र के स्वाभिमान और सामरिक आदि हितों की अनदेखी करके, किसी देश के समक्ष घुटने टेकने के लिए उतावला नहीं होगा। आखिर यह समझ में नहीं आता कि तमाम विश्व विख्यात वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों की उपयोगी सलाह और सुझावों को केन्द्र सरकार अनदेखा और अनसुना करके, रामसेतु के विध्वंस करने में अपना कौन-सा सौभाग्य मानकर धन्यता अनुभव कर रही है ?

अमेरिका द्वारा डियागो-गार्शिया में स्थापित सैनिक अड्डा और चीन द्वारा कोको द्वीप पर सैनिक अड्डा तथा पाकिस्तान के ग्वादल बंदरगाह पर नियंत्रण के पश्चात भी श्रीराम सेतु का विध्वंस क्या भविष्य के संकटों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने के लिए पर्याप्त कारण नहीं हैं। भाभा परमाणु शोध केन्द्र में थोरियम से चलने वाले परमाणु रिएक्टर के विकास में लगे भारत के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री व्ही. जगन्नाथन और उनकी टीम के उत्साहवर्धक कदमों की जानकारी उक्त केन्द्र द्वारा 9 से 14 जून 2005 को इस्तांबुल में हुई अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेस में एक शोध-पत्र द्वारा दिए जाने पर- क्या अमेरिका अपनी सामरिक नीति के अंतर्गत इस सेतु के ध्वंस में गहरी रुचि नहीं लेने लगा है ? क्या इसी नीति के अंतर्गत वह भारत की इस महत्वाकांक्षी योजना को विफल करने के लिए रामसेतु को शीघ्रातिशीघ्र तोड़ने के लिए भारत सरकार को बाध्य नहीं कर रहा है ? क्या अमेरिका भारत के साथ अपनी परमाणु-संधि के लिए इसी कारण तो उतावला नहीं है ?

उक्त सभी एवं अन्य ऐसे कारण और प्रश्न हैं, जिन पर भारत के बौध्दिक समुदाय को गंभीर चिंतन करना राष्ट्र के व्यापक हित में परम आवश्यक हो गया है। केन्द्र की सत्तासीन सरकार राष्ट्र के इन ज्वलतं मुद्दों पर क्यों मौन है ? इसका जवाब उन्हें संसद, न्यायालय और जनता को शीघ्र देना होगा। कहीं ऐसा न हो कि फिर इनती देर हो जाए कि केन्द्र के पास पुनर्विचार करके भूल सुधार करने के लिए समय ही न बचे। इसी राष्ट्रघाती कदम को रोकना आज हम सबकी प्राथमिव जवाबदारी है।

भगवान श्री राम ने भविष्य की इन कुटिल चालों को सर्वव्यापी एवं सर्वकालिक दृष्टि से लाखों वर्ष पूर्व ही जान लिया था कि उनकी इस प्यारी मातृभूमि के ऊपर किस प्रकार विदेशी राष्ट्र गिद्ध दृष्टि लगाए रहेंगे। इसलिए इन संकटों से सावधान करते हुए उन्होंने आगे आने वाले समय के

राजाओं से प्रार्थना की थी कि आने वाले अपने- अपने राज्य काल में वे इस सेतु कीअपनी पूरी शक्ति और मनोयोग से रक्षा करें। इसी में वे राष्ट्र रक्षा का सूत्र हमें प्रत्यक्ष रूप से दे गए हैं। यदि भगवान श्रीराम की इस प्रार्थना को केन्द्र सरकार उनका कल्याणकारी आदेश एवं आशीर्वाद मानकर चलती, तो इससे राष्ट्र का गौरव हजार गुना और बढ जाता।

अन्त में हम सब वैदिक संस्कृति एवं श्रीराम सेतु के संरक्षक हनुमान जी से मिल कर यही प्रार्थना करें कि वे भारत सरकार को सद्बुद्धि दें कि वह राष्ट्र के व्यापक हित में इस सेतु का ध्वंस रोककर उसे सुरक्षित रखे। ताकि वैश्विक नीतियों को दृष्टिगत रखते हुएऔर सामरिक,वैज्ञानिक, आणविक, प्राकृतिक (आपदा एवं पर्यावरणादि), धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, पुरातात्विक,आर्थिक(ऊर्जा एवं पर्यटन) आदि नीतियों को भी केंद्र सरकार इन्हें भी ध्यान में रखकर पुनः रामसेतु को न तोड़ने का निर्णय ले सके। हम उनसे यह भी प्रार्थना करें कि वे कृपया व्यक्तिगत रुचि लेकर और इसे भी रामकाज मानकर, श्रीराम सेतु की रक्षा करें।

दासों में दास हैं, अनन्य रामचंद्र जी के,
दूतों में दूत वे, चतुर अनन्त हैं।
विद्या बुद्धि बल के निधान गुण, खान हैं वे,
दीनों के हेतु सदा, बने दयावंत हैं।
रामबाण से प्रसिद्ध लोक में विख्यात हुए,
शांतिप्रद संतों में, सच्चे शुचि संत हैं।
दानियों में दानी,त्यों ही ध्यानियों में ध्यानी महा,
रक्षा रामसेतु हेतु, वीर हनुमंत हैं॥

●

# रामसेतु राष्ट्रीय धरोहर रहा है और रहेगा

## गौतम पटेल

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का अभिमत है कि वह विज्ञान और तकनीक के आधार पर ही उत्खनन के माध्यम से देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा करता है। जिस व्यक्ति, वंश, साम्राज्य और संस्कृति के अवशेष खुदाई में न मिलें उसके अस्तित्व को नहीं माना जा सकता। इसी को कहा गया है 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा'। ''दूसरे शब्दों में अंधा राजा, बहरा मंत्री, गूंगा विभागाध्यक्ष और लंगड़ी प्रजा। जो न दिखाई दे उसकी खुदाई करे तो बात समझ में आती है। जब व्यक्ति, वंश, साम्राज्य और संस्कृति में से कोई एक के नहीं, अपितु इन सबके प्रत्यक्ष प्रमाण आज भी विद्यमान हैं। तब फिर प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता ?

रामसीय का स्वर्ण सिक्का ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में, रामसीय का रजत सिक्का काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संग्रहालय भारत कला भवन में और एक ओर राम दरबार तथा एक ओर हनुमान जी का पीतल सिक्का जो मुझ स्वयं के पास भी विद्यमान है। सर्वविदित है कि श्रीराम सूर्यवंशीय, अयोध्या साम्राज्य के चक्रवर्ती सम्राट और आर्य संस्कृति के पोषक रहे हैं। आज भी इस देश में लगभग 60 वर्षीय, कम से कम 25 लाख लोग इस बात के गवाह हैं कि वे अपने जीवन काल में उक्त हनुमान वाले पैसे को व्यवहार में लाये हैं। सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय रामराज्य के संस्थापक राम, राम परिवार और रामायण के पात्रों के अस्तित्व को नकारना निरी मूर्खतापूर्ण बात है। राष्ट्रीय अस्मिता के साथ छलावा है। राष्ट्रीय मुद्रा कोष का अपमान है। आज राष्ट्रपिता महात्मा मोहन दास करम चन्द गाँधी का चित्र रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के लगभग प्रत्येक नोट में छपा हुआ है। इसके बाद भी यदि कोई यह कहे कि महात्मा गांधी से संबंधित पात्रों का कोई अस्तित्व नहीं, तब फिर इसे राष्ट्रभक्त क्या कहेंगे ?

वस्तुतः भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का कोई अस्तित्व नहीं है। उपकार माने सुप्रीम कोर्ट के माननीय न्यायमूर्तियों का जिन्होंने हलफनामा वापस नहीं लेने की अनुमति दे दी। यदि दूसरे हलफनामा प्रस्तुत करने के बाद इस हलफनामा को वापस ले जाने विषयक आदेश जारी कर देते तो निश्चित रूप से दोनों शपथपत्र न्यायालय के पास होते। इस स्थिति में निर्विवाद रूप से इनमें से कोई एक हलफनामा झूठा होता और झूठा हलफनामा प्रस्तुत करने के लिए क्या सजा देते ? यद्यपि यह न्यायाधिपतियों के विवेक के ऊपर निर्भर करता है, तथापि इसमें कोई संदेह नहीं कि यह प्रकरण कानून के दायरे में तो आता ही आता। कानून विशेषज्ञ अथवा अधिवक्तागण इससे सहमत होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं।

हलफनामे (अब पूर्व) के पैरा सात में लिखा है... ''भारतीय पुरातत्व विभाग या भारत सरकार के सामने प्रथम दृष्ट्या ऐसा कोई अवसर नहीं आया, जिसमें कथित सेतु को 'प्राचीन

स्मारक' समझकर, नियमानुसार उसके संरक्षण की बात उठे और इसलिए भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा इस संदर्भ में कोई अध्ययन नहीं किया गया है।'' इसी पूर्व हलफनामे के पैरा 32 में लिखा है... ''वैज्ञानिक अध्ययन के प्रकाश में कथित संरचना को मानव निर्मित नहीं कहा जा सकता। वह संरचना केवल बालू और कोरल से संगठित है, जिसे ऐतिहासिक/पुरातात्विक अथवा महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता।''...... यह विभाग एक पैरा में लिखता है 'कोई अध्ययन नहीं किया गया है।' आगे एक दूसरे पैरा में लिखता है 'वैज्ञानिक अध्ययन के प्रकाश में....।' ऐसा द्विअर्थी शपथपत्र, दोहरे भावार्थ शब्दविन्यास वाले शपथपत्र को यदि देश का सर्वोच्च न्याय मंदिर मान्यता दे दे तो फिर एकार्थी न्याय के पुजारी किसके दरबार में जाकर माथा झुकाएंगे ?

चलिए कुछ समय के लिए हम यहाँ दोनों को मान लेते हैं कि यदि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा इस संदर्भ में कोई अध्ययन नहीं किया गया है तो पूर्णतः अध्ययन-अध्यापन, शिक्षण-प्रशिक्षण, सर्वेक्षण-परीक्षण उपरान्त यथाशक्ति ठोक -बजाकर जवाब दे ; कि स्वयं द्वारा उल्लिखित 'बालू' यक्ष प्रश्न की भाँति पत्रकारिता प्रश्न छः ककार- कब, क्यों, कहाँ, किससे, किसने और क्या है ? यदि वह मंत्रालयीन गलियारे का 'बालू' है अथवा सांस्कृतिक गलियारे का ? यदि वह समुद्र की उपज है तो फिर अन्य समुद्रों में क्यों नहीं उपजा ? यदि वह सोवियत उपज है तो फिर पूर्वी और दक्षिण-पश्चिम मुहानों/डेलटाओं में क्यों नहीं उपजा ? वह बालू मंत्रालयीन चोटी से गिराया गया या फिर गिलहरी पूँछ के बाल से ? और यदि पुरातत्व विभाग को वैज्ञानिक अध्ययन के प्रकाश में कथित कथन पर आस्था है तो फिर उन्हीं वैज्ञानिकों से पूछे कि रामसेतु के पत्थरों को दाँतों के मसाले से जोड़ा गया है या टाइल्स मसाले या फिर कोई और ? इस सेतु में किस सीमेंट अथवा मिट्टी का प्रयोग किया गया है ? अम्बुजा, टाटा, बिड़ला अथवा दोमट, कन्हार, कछार या फिर बलुवा ?

भारतीय भू-गर्भ सर्वेक्षण विभाग के पूर्व निदेशक बद्रीनारायण का मानना है कि रामसेतु प्राकृतिक संरचना नहीं है। उनके अनुसार राष्ट्रीय समुद्र तकनीकी संस्थान के सहयोग से रामेश्वरम् और अंतर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र में एक पंक्ति में दस स्थानों पर खुदाई की गई थी। इन सभी जगह ऊपरी छः मीटर के हिस्से में समुद्री रेत, फिर कोरल्स, सैण्ड स्टोन तथा निर्माण में प्रयुक्त किये गये बड़े पत्थर मिले।' इसके बाद के क्रमशः 5-5 मीटर में बिखरी हुई बालू और इसके बाद ठोस संरचना दिखाई दी। बालू के ऊपर उपलब्ध पत्थर नदियों तथा मैदानों में मिलने वाले पत्थरों के समान थे। वे पत्थर निश्चित रूप से समुद्र निर्मित नहीं हैं। इसका सीधा-सादा अभिप्राय है कि वे पत्थर अनिवार्यतः मानव निर्मित है।

वैज्ञानिकों ने इस बात की पुष्टि की है कि 2004 में आए सुनामी लहर से तूतीकोरिन तथा दक्षिणी केरल तटों की सुरक्षा इसी रामसेतु के कारण हो पाई थी। श्रीलंका ने भारत की विवादित सेतु समुद्रम परियोजना को देश के तटवर्ती क्षेत्रों तथा समुद्री जनजीवन के लिए घातक बताते हुए इसके क्रियान्वयन पर चिंता प्रकट की है। भारत-श्रीलंका और मध्य बंगाल की खाड़ी में जलयानों के लिए समुद्री गलियारे के निर्माण संबंधी इस परियोजना के प्रभावों का अध्ययन कर रहे श्रीलंका हाईड्रालिक इंस्टीट्युट की रिपोर्ट में इनके खतरों के प्रति सचेत किया गया है। संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मालित मेंडिस ने 30 सितम्बर 2007 को बताया कि अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस परियोजना से न केवल समुद्री लहरों की गति पर प्रभाव पड़ेगा, अपितु इससे समुद्री जीवन भी प्रभावित हो सकता है। मेंडिस के अनुसार श्रीलंका सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी इस सेतु समुद्रम परियोजना से जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रति चिंता प्रकट की है।

यूनेस्को के 1972 के घोषणापत्र में कहा गया है कि... उससे लोगों की आस्था जुड़ी हुई है तो वह धरोहर घोषित किया जा सकता है। पुरातत्व स्थल अस्तित्व अधिनियम-1958 के अनुच्छेद-2 (जे) के अनुसार ऐसा कोई भी स्थल, अवशेष, जिसमें ऐतिहासिक, पुरातात्विक महत्व समाविष्ट हो और जो सौ वर्षों से अधिक प्राचीन हो तो उसे राष्ट्रीय धरोहर मानना चाहिए। रामसेतु से लोगों की आस्था जुड़ी हुई है। इस स्थल तथा इसके अवशेष दोनों में ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व समाविष्ट है और यह सौ वर्षों से अधिक प्राचीन है। अतएव रामसेतु को राष्ट्रीय धरोहर घोषित करना न्यायोचित है। वैसे भी रामसेतु किसी शासकीय आदेश का मोहताज नहीं। सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय मन-मस्तिष्क में सदा-सर्वदा रामसेतु राष्ट्रीय धरोहर रहा है और रहेगा।

●

# प्रथम सेतुपति गुह

- गौतम पटेल

वृषभ-सूर्य, कन्या-चन्द्रमा, ज्येष्ठ-मास, शुक्ल-पक्ष, दशमी-तिथि, बुध-वार, हस्त-नक्षत्र, गर-करण, व्यतीपात-योग तथा आनंद-आनंदादि योग ; इस प्रकार परम पुण्यमय दस योगों की संयुक्त उपस्थिति में यजमान सीताराम ने आचार्य संग मुनियों सहित मंत्रोच्चारण के साथ सीता निर्मित बालू के शिवलिङ्ग की प्राण-प्रतिष्ठा की; जो रामेश्वर/राम महेश्वर/राम महेश लिङ्ग ईश्वर/रामलिङ्गेश्वर/राम का ईश्वर/रामनाथ/राम का नाथ/रामास्वामी/ राम का स्वामी/रामनाथस्वामी इत्यादि नामों से आज भी प्रसिद्ध है। केवल युद्ध पूर्व अथवा युद्ध पश्चात् ही नहीं, अपितु आजीवन सीतारमण रामेश्वरम का अनुष्ठान, प्रतिष्ठान तथा प्रबंध-व्यवस्थान करते रहे।

श्री रामचन्द्र जी ने 'गुह' को रामनाथपुरम का प्रथम 'सेतुपति' (अधिपति/स्वामी/राजा) बनाकर उसका राज्याभिषेक किया था। उस राज्याभिषेक के समय 'गुह' जिस चट्टान पर बैठे थे वह रामनाथपुरम के 'रामलिङ्ग विलास महल' में आज भी सुरक्षित है। तत्समय ही समीपस्थ समस्त राजाओं ने समुद्री तथा तटवर्ती सभी स्थलों पर, सम्पूर्ण अधिकार इस सेतुपति को सौंप दिया था। राजा 'गुह' स्वयं तथा उनके वंशज तब से अब तक 'रामेश्वरम' से गहरा सम्पर्क रखते रहे हैं। आज भी रामनाथपुरम के सेतुपति अथवा राजा के वंशज (सन् 1970 में श्री एस. रामनाथ सेतुपति) श्री रामेश्वरम देवस्थानम संचालक मंडल के अध्यक्ष रहे हैं।

रामेश्वरम् एक टापू का नाम है। इस टापू में सबसे मुख्य दर्शनीय स्थल है- 'रामेश्वरम', 'रामलिङ्गेश्वर' अथवा 'रामनाथस्वामी' का मंदिर। रामेश्वरम टापू के पूर्वी सागर तट पर स्थित यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। मंदिर की शिल्पकला देखने लायक है। स्तम्भों पर की गई बारीक कारीगरी भी दर्शनीय है। इस मंदिर का सबसे विख्यात वास्तु है भारत का सबसे बड़ा परकोटा। यह पूर्व से पश्चिम 197 मीटर और उत्तर से दक्षिण 133 मीटर लम्बा है। परकोटे की चौड़ाई 6 मीटर और ऊँचाई 9 मीटर है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर 38.4 मीटर ऊँचा टावर (गोपुरम) है। लगभग 6 हैक्टेयर में बने इस मंदिर में 22 कुएँ हैं। मछुआरों को छोड़कर इस द्वीप के लगभग सभी निवासियों का जीवन-निर्वाह दर्शनार्थियों पर ही निर्भर है।

रामेश्वर मंदिर में विशालाक्षी जी के बगल में जो ज्योतिर्लिङ्ग है वह लंकापति विभीषण द्वारा स्थापित है। मूल लिङ्ग वाले गर्भगृह तथा अम्बा देवी के मंदिर का निर्माण बारहवीं शताब्दि में श्रीलंका के राजा पराक्रमबाहु ने किया था। पंद्रहवीं शताब्दि में रामनाथपुरम के राजा 'उडैयान सेतुपति' और नागपट्टिणम के निकटस्थ नागूर निवासी एक वैश्य ने संयुक्त रूप से 78 फीट गोपुर तथा परकोटों का निर्माण कराया था। सोलहवीं शताब्दि में मंदिर के दक्षिण भाग की द्वितीय-परकोटा-दीवाल का निर्माण 'तिरूमलै सेतुपति' नामक राजा ने करवाया था। देवी मंदिर के द्वार पर

उनकी तथा उनके पुत्र 'रघुनाथ सेतुपति' की मूर्तियाँ बनी हुईं हैं। आज भी प्रत्येक शुक्रवार की रात इन्हें माला पहनाकर सम्मानित किया जाता है। इसी शताब्दि में मदुरै के राजा विश्वनाथ नायक के अधीनस्थ एक राजा 'चिन्न उडैयान सेतुपति कट्टत्तेवर' ने नन्दीमण्डप तथा अन्य कुछ निर्माण कार्य संपन्न किया था। इस नंदी का आकार 22 फीट लम्बा, 12 फीट चौड़ा और 17 फीट ऊँचा है।

सत्रहवीं शताब्दि में 'दलवाय सेतुपति' ने पूर्व दिशा के गोपुर का एक अंश बनवाया। अठारहवीं शताब्दि के प्रारंभ में 'रविविजय रघुनाथ सेतुपति' नामक राजा ने देवी-देवता के शयनगृह तथा देवी के गर्भगृह के सामने एक मण्डप का निर्माण कराया। इसी शताब्दि में 'मुत्तुरामलिङ्ग सेतुपति' ने बाहरी परकोटा का निर्माण कार्य पूर्ण कराया। उनकी तथा उनके दो मंत्रियों की शिलामूर्तियाँ पूर्वी परकोटा के उत्तरी द्वार पर आज भी देखी जा सकती हैं। उन्नीसवीं शताब्दि के अंतिम और बीसवीं शताब्दि के प्रारंभिक चरण- सन् 1897-1904 मध्य देवकोट्टै के 'ॐ अरू. वंश' वालों ने अपने कुटुम्ब-परिवार की धार्मिक निधि से धनराशि निकालकर नौ द्वार वाले 126 फीट ऊँचे पूर्व के गोपुर का निर्माण कराया। 1907-1925 मध्य इन्हीं के कुटुम्ब-परिवार वालों ने गर्भगृह की मरम्मत करवाई। साधारण पत्थरों के परकोटों को काले पत्थरों के परकोटों में नवीन ढंग से परिवर्तन करवाया। सभी स्थलों पर शुद्ध वायु और प्रकाश व्यवस्था भी निर्मित की। इन सबके अतिरिक्त 27 -2-1947 को सम्पूर्ण मंदिर का अष्टबंधन महाकुम्भाभिषेक भी करवाया।

इस प्रकार रामनाथ स्वामी का यह मंदिर रामायण काल से अब तक कई लोगों के द्वारा शनैः-शनैः निर्मित होते हुए, आज इस भव्यता तक पहुँचा है। लेकिन फिर भी रामनाथपुरम रियासत के सेतुपतियों अथवा राजाओं का स्थान इन लोगों में प्रथम रहा है। मंदिर के पश्चिमी परकोटे तथा पश्चिमी गोपुरद्वार से सेतुमाधव मंदिर जाने वाले मार्ग जहाँ मिलते हैं, वह स्थान शतरंज पट्टी के समान दिखाई देने के कारण वह 'चतुरङ्ग मण्डपम्' अथवा 'शतरंजी मण्डप' कहलाता है। 'वसन्तोत्सव' के शुभ अवसर पर इसी मण्डप में मंदिर की मूर्तियों को अलंकृत कर दर्शनार्थ रखा जाता है। रामनाथपुरम के सेतुपतियों/राजाओं की ओर से आषाढ़ और माघ महिनों में छठवें दिन का उत्सव आज भी यहीं पर कराया जाता है। रामनाथपुरम जिला मुख्यालय, तहसील मुख्यालय तथा विकासखण्ड मुख्यालय आज भी है।

# सेतु बंध प्रकरण

[ डॉ. रामकुमार बेहार ]

राम-कथा के विविध आयामों में सेतु-बंध अर्थात् समुद्र तट पर पुल बांधने का प्रसंग सदियों से राम भक्तों को आल्हादित करते आया है। अवतारी पुरुष को ऐसे कार्य करने होते हैं, जो साधारण मनुष्य नहीं कर सकते। राम ने भी सेतु बाँध कर ऐसा ही कार्य किया, जो भूतो न भविष्यति था। राम से पूर्व किसी ने महासागर को बाँधा हो, ऐसा कोई प्रसंग नहीं मिलता। राम के पश्चात् भी कोई दूसरा इस असंभव कार्य को संभव नहीं कर सका।

भारत और श्रीलंका के मध्य पाक-जल डमरू मध्य का जलक्षेत्र है, इसी क्षेत्र में आज से लगभग 17 लाख वर्ष पूर्व श्री राम ने सेतु बनाया था। मानव निर्मित अद्‌भुत एवं रहस्यपूर्ण पुल आज भी कौतूहल का विषय बना हुआ है। सबसे पुराना होने के नाते इस पुल को आदिम पुल, आदम-पुल भी कहा जाता है। चूँकि श्री राम ने इसका निर्माण करवाया था, इसलिए यह रामक्षेत्र के नाम से भी चर्चित है। इस पुल के मुख्य इंजीनियर नल के नाम पर इसे नल सेतु भी कहा जाता है। वाल्मीकि रचित रामायण के बालकांड में वर्णन है-

**दर्शयामास चात्मानं समुद्रः सरितां पतिः**
**समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुकारयत्**

अर्थात् नल ने नदीपति समुद्र पर अपने कौशल से एक पुल का निर्माण किया था। नल के बारे में वाल्मीकि रामायण से ही हमें यह जानकारी प्राप्त होती है कि अग्नि के समान तेजस्वी श्रीमान नल साक्षात अग्निदेव के ही पुत्र थे। पराक्रमी वानर, तेज, यश, और बलवीर्य में सबसे बढ़कर थे। महाभारत में भी इस सेतु के बारे में विवरण मिलता है कि दिग्विजय के लिए निकले घटोत्कच ने समुद्र तट पर से इस सेतु को देखा।

भगवान श्रीराम के द्वारा बनवाए हुए पुल को देखकर घटोत्कच को भगवान के पराक्रम का चिंतन हो आया और इस सेतु तीर्थ रामसेतु को प्रणाम करके उसने समुद्र तट के दक्षिण तट की ओर दृष्टिपात किया। महाभारत का यह विवरण यह दर्शाता है कि त्रेतायुग में निर्मित सेतु, द्वापर युग के समापन काल तक अच्छी स्थिति में था। वह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था।

अमेरिकी अंतरिक्ष अध्ययन विभाग नासा ने कुछ माह पूर्व उपग्रहों के माध्यम से इस पुल का फोटो लिया था और विभिन्न समाचार पत्रों में इसे प्रकाशित किया था। राम की ऐतिहासिकता या राम-कथा की सत्यता का यह दर्शनीय प्रमाण है। नासा ने इस पुल का जो काल निर्धारण किया, वह 17 लाख वर्ष पूर्व का बना बताया गया, यह हिंदू परंपरा से पूरी तरह मेल खाता है। हिंदू गणना के अनुसार 17 लाख वर्ष पूर्व त्रेता युग था। राम की पत्नी का राक्षसराज रावण द्वारा हरण कर लिए जाने और अंजनी पुत्र हनुमान द्वारा सीता जी का पता लगा लेने के पश्चात यह निश्चित किया गया कि लंका पर आक्रमण कर सीता जी को मुक्त करवाया जाय। सुग्रीव ने श्री राम को सुझाव दिया -

**समुद्र लंङ्घयित्वा तु महानक्रसभाकुलम् ।**
**लंकामारोहयिष्यामो हनिष्यामश्च ते रिपुम् ॥**

बड़े-बड़े नक्रों के द्वारा भरे हुए समुद्र को लांघकर हम लोग लंका पर चढ़ाई करेंगे और आपके शत्रु को नष्ट कर डालेंगे । नदियों के स्वामी समुद्र को पार करने के लिए क्या उपाय किया जाय, इस विषय में मिल बैठकर विचार करें । यदि हमारे सैनिक समुद्र को लांघ गए, तो यह निश्चित मानिए कि विजय हमारी होगी ।

राम का उत्तर प्रशंसनीय था, उन्होंने कहा कि मैं तपस्या से पुल बांधकर और समुद्र को सुखाकर सब प्रकार से महासागर लांघ जाने में समर्थ हूँ । सलाह मशविरे के बाद तय हुआ कि पहले समुद्र की उपासना कर उससे मार्ग माँगा जाय । श्रीराम तदानुसार तीन दिनों तक घटना स्थल पर बैठे रहे, फिर भी समुद्र के द्वारा मार्ग न दिए जाने पर क्रोधित हो गये और श्रीराम ने समुद्र को सुखाने के लिए शर-संधान किया । समुद्र स्वयं मूर्तिमान होकर प्रकट हुए और भगवान से निवेदन किया कि मैं अति अगाध और दुस्तर हूँ, मेरा स्वभाव है कि कोई मेरे पार नहीं जा सकता । आप पुल बनवा कर पार हो जाइये, मैं सभी प्रकार से आपकी सहायता करूंगा । समुद्र ने श्री राम को बताया-

**अयं सौम्य नलो नाम तनयो विश्वकर्मण:।**

आपकी सेना में नल नामक कान्तिवान वानर है, वह साक्षात विश्वकर्मा का पुत्र है, शिल्पकला में वह सिद्धहस्त है । वह आपके लिए पुल का निर्माण कर देगा।

समुद्र द्वारा रहस्य खोलने पर नल ने कहा - मैं पिता की दी हुई शक्ति से सेतु का निर्माण करूँगा। पुल बांधने की अनुमति दीजिए । श्री राम की अनुमति से पुल निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ । पहले दिन चौदह योजन लंबा पुल बांधा गया, दूसरे दिन 20 योजन, तीसरे दिन 21 योजन, चौथे दिन 22 योजन, पांचवे दिन 23 योजन इस प्रकार 100 योजन लंबा पुल तैयार हो गया ।

**दशयोजन विस्तीर्ण शतयोजनमायतम् ।**
**ददृशुर्देव गन्धर्वा नलसेतुं सुदुष्करम् ॥**

नल के बनाए 100 योजन लंबे और 10 योजन चौड़े इस पुल को देवताओं और गंधर्वों के लिए भी बनाना बहुत ही कठिन काम था । पुल बनाते हुए राम की पूरी सेना लंका तक पहुँच गई । राम ने रावण से युद्ध किया और विजय प्राप्त की । रावण पर विजय तो महत्वपूर्ण कार्य था ही, समुद्र पर पुल का निर्माण भी अभूतपूर्व कार्य था । राम के द्वारा किए गए आश्चर्य जनक कार्यों में से यह सेतु-बंध प्रमुख था । वाल्मीकि रामायण में कहीं भी यह उल्लेख नहीं मिलता कि नल-नील द्वारा स्पर्श किए पत्थर समुद्र पर तैरते थे । वाल्मीकि ने केवल पिता से प्राप्त वरदान का उल्लेख किया है, जिसके अनुसार नल को पिता तुल्य अच्छा इंजीनियर बनने की बात कही गई है ।

महाभारत में उल्लेख मिलता है कि नल द्वारा फेंका गया कोई पदार्थ जल में नहीं डूबता था । रामचरित मानस में भी नल-नील दोनों के वर-प्राप्ति का उल्लेख है । राम द्वारा नल-नील से बनवाया गया सेतु वर्तमान समय में समुद्र सतह से ऊपर दिखलाई नहीं पड़ता। इस संदर्भ में भी आध्यात्मिक ग्रंथों का सहारा लेकर खोज कार्य संपन्न किया गया है, जो जानकारी मिलती है, वह निम्नानुसार है-

1. खेतानी रामायण में विवरण है कि सेतु को पार करने के पश्चात् ही उसे नष्ट कर दिया गया, जिससे श्रीराम सेना का कोई भी योद्धा युद्ध छोड़कर भाग न सके। यह कारण हृदयंगम नहीं होता, क्योंकि श्रीराम के सैनिक कोई वेतन भोगी कर्मचारी नहीं थे, जो राम काज को छोड़ कर भाग जाते। वे तो स्वेच्छा से राम काज कर रहे थे।

2. सेतु महात्म्य में विवरण मिलता है कि जब भगवान राम ने विभीषण को लंका का राजा बनाया, तब विभीषण ने सुरक्षागत कारणों से राम से अनुरोध कर सेतुभंग कराया। रंगनाथ रामायण तथा तत्व संग्रह रामायण में यही विवरण मिलता है। यह कारण तथ्य परक लगता है।

3. स्कन्द पुराण और पद्म पुराण में भी उल्लेख मिलता है कि विभीषण ने श्रीराम से कहा कि सेतु के माध्यम से लोग लंका जायेंगे और वहाँ के राक्षस मनुष्यों को खा जायेंगे।

4. कृतिवास रामायण में उल्लेख मिलता है कि सागर ने स्वयं भगवान राम से अनुरोध किया कि मेरा बंधन अब तोड़ दिया जाय।

5. सेतु बांध तोड़ने का एक कारण यह भी बतलाया जाता है कि लोग लंका का सोना चुरा कर न ले जाएँ।

संपूर्ण प्रकरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सेतु का निर्माण लंका पर चढ़ाई के लिए हुआ था और श्रीराम सेतु का अस्तित्व त्रेतायुग से आजतक प्रमाणित होता है।

●

# श्री रामसेतु का तत्वबोध

[आचार्य सरयूकान्त झा]

कभी रामसेतु भारत को श्रीलंका से जोड़ने का ऐसा माध्यम रहा हो, जिसने आर्यों को अनार्यों से जोड़ा हो और श्रीराम की वानरी सेना को रावण-विजय के लिए सामुद्रिक मार्ग दिया हो, पर आज वह त्रेतायुग को आज के कलियुग से जोड़ता है अथवा कहें कि श्रीराम से हम सबको प्रत्यक्ष रूप से जोड़ता है। हम उस सेतुमार्ग से श्रीराम तक पहुँच जाते हैं। श्रीरामनाम के गारे से जुड़े पाषाणखण्डों से निर्मित उस सेतु को श्रीराम ने नहीं, नल-नील के साथ करोड़ों वानर-भालुओं ने बनाया था। रामायण को मानें तो उसे श्रीराम ने नहीं बनाया था। यदि दन्तकथाओं का सहारा लें तो श्रीराम के हाथ का पत्थर उस सेतु में लगा ही नहीं, नीचे जल में गिर गया। तब वह रामसेतु कैसे हुआ? उसे तो नल-नील के नाम से नामांकित होना चाहिए, पर हमारे यहाँ की परम्परा इंजीनियर को नहीं, उसके प्रेरणास्रोत को मान्यता देती है। नल-नील ही नहीं, सारी वानरी सेना ही श्रीराम को समर्पित थी। उनके लिए ही पुल बनाया गया था। उस पर से सारी सेना लंका पहुँची थी। बिना पुल के भारत की मुख्य भूमि से लंका नहीं पहुँचा जा सकता था।

इस पुल के बनने के पहिले हनुमानजी तो लँका पहुँचे ही थे। रावण भी रोज कहीं-न-कहीं भ्रमण और आक्रमण करने आया-जाया ही करता था। तब उस सेतु के निर्माण के लिए इतनी हाय-तौबा क्यों हुई थी? श्रीराम तीन दिन, तीन रात बिना खाये-पिये समुद्रतट पर चुप-चाप बैठे रहे। फिर उन्हें धनुष उठाने के लिए बाध्य होना पड़ा। समुद्र को सुखाने के एवज में सेतु बनाने का निवेदन और तरीका समुद्र का ही बताया हुआ था। वह राम के कोप को देखकर घबड़ा गया था और स्वयं उसने विश्वकर्मा के पुत्र नल के द्वारा अपने ऊपर ही एक सेतु बनाने के लिए श्रीराम को प्रेरित किया था। ऐसी दशा में इस सेतु के मूल आधार में समुद्र की प्रार्थना भी रही है। बाद के युग में कभी उफनती यमुना को ही श्री वसुदेव ने श्रीकृष्ण को मथुरा से गोकुल पहुँचाने के लिए पार किया था। उस समय भी यमुना नदी ने अपनी धारा को रोककर श्री वसुदेव को रास्ता दिखा दिया था।

श्रीराम की कथा हजारों रूपों में सारे विश्व में फैली हुई है और हर जगह श्रीरामसेतु के निर्माण की चर्चा है। सब जगह रामकथा को मान्यता मिली हुई है, भले ही वे देश हिन्दू धर्म को न मानते हों। ऐसी दशा में श्रीराम के अवतार धारण की सत्यता अपने-आप प्रमाणित होती है। सारा संसार जिस बात में एकमत है, उसे भारतवर्ष में ही मिथ्या कहना एक विडम्बना ही नहीं, लज्जाजनक भी है। हमारे लिए तो स्वस्थदृष्टि यही होगी कि श्रीराम और उनकी कथा को सत्य-अवधारणा के रूप में स्थापित करने वाले आधारबिन्दुओं को सम्हालकर रखें। चीन ने अपनी टूटी-फूटी दीवार को सम्हालकर रखा है जिसका आज कोई उपयोग नहीं है और हम उससे भी पुराने रामसेतु के आधार

को नष्ट करने की सोचें, वह भी अंतर्राष्ट्रीय समुद्री मार्ग खोलने के लिए, यह बात वदतोव्याघात है- बोलने में ही पाप है। श्रीरामसेतु के साथ भारत की ही नहीं, बल्कि अन्य राष्ट्रों की जनभावनाओं का आधार जुड़ा हुआ है जिसे तोड़ना भारत को ही तोड़ना होगा। हमारा नेतृत्ववर्ग इस बात को जितनी जल्द समझ ले उतना ही अच्छा होगा।

सबसे बड़ा तर्क है कि सुग्रीव एक राजा था। वह सर्वविजयी बालि का भाई ही नहीं, उसका उत्तराधिकारी भी था। वह लंकायुद्ध का महानायक भी था। उसे लंका-विजय के लिए वे सारे साजोसामान चाहिए थे जो किसी महायुद्ध के लिए आवश्यक होते हैं। उन्हें समुद्रपार पहुँचाना जरूरी था। रावण जैसे बली दुश्मन को हराना था। युद्ध के लिए राशन और हथियारों को ले जाना था। श्री हनुमान ने समुद्र पार किया था पर कथा कहती है कि श्रीराम की दी हुई मुद्रिका को समुद्र पार करते समय कई तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ा था। एक छोटी-सी मुद्रिका को ले जाने में जब इतनी कठिनाई हुई, तब युद्ध-सामग्री और विशालदल को लंका कैसे पहुँचाया जा सकता था? इन सबके समाधान की खोज करनी पड़ी थी। इस समस्या का हल पुल ही था। श्रीराम क्या अपनी अवतारी शक्ति द्वारा अपनी दैवी शक्ति के बल से सबको उस पार नहीं पहुँचा सकते थे ? तब युद्ध की क्या जरूरत थी ? रावण को मसलने के लिए उन्हें पुल बनाने की भी जरूरत नहीं पड़ती। इतनी सारी लीलाएं करने की क्या जरूरत थी ? रावण रोज सागर पार आता था पुष्पकविमान पर। बाद में उस विमान में वानरों की सारी भीड़ अयोध्या गई भी थी। निष्कर्ष यही निकला कि ऐसी दशा में एक महापुल की बड़ी आवश्यकता थी। वह श्रीराम के आदेश से बना, इसीलिए वह रामसेतु कहा गया। उसे अंगरेजों ने एडम्स ब्रिज भी कहा लेकिन वह नाम नहीं चला, बल्कि इसी के कारण रामेश्वर का नाम सेतुबन्ध रामेश्वर पड़ा। ऐसी दशा में उस सेतु से श्रीराम का नाम जोड़ने पर ही राम के भक्तों को शांति मिलनी थी। इसलिए वह रामसेतु नाम ही सार्थक हुआ और है जो भारत में इसी नाम से सर्वपूजित भी है।

श्रीराम रामसेतु के निर्माण का यह महत्कार्य देखते हुए एक शिलाखण्ड पर बैठे थे। एक छोटे से जीव को समुद्र में डुबकी लगाते, तत्परता से आते-जाते देख रहे थे। वह एक गिलहरी थी। वह अपने भीगे शरीर को तट की रेतराशि में खूब लोटती-पोलटती थी और सेतु के ऊपर छिड़ककर पुनः समुद्रतट की ओर दौड़ जाती थी। उसके अथक-अनवरत परिश्रम को देखकर श्रीराम को बड़ा आनंद आया। जब उस महान सेतु के निर्माण में योगदान देने की बात उठी तो श्रीराम ने उस गिलहरी को अपने पास बुलाया और अपनी तीन उंगलियाँ (तर्जनी, मध्यमा और अनामिका) उसकी पीठ पर फेरीं। हमारी यह लौकिक दंतकथा भी रामसेतु के निर्माण को सार्थकता देती है।

साहित्य में वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, पुराण, रामायण आदि में श्रीराम की महिमा और स्वीकृति का गान है। भारत का पूरा गौरव हमारे पुराण-इतिहास में समाया हुआ है। जब तक वह सजीव बनकर हमें प्रेरणा देता रहेगा तब तक भारत जिंदा रहेगा। हिन्दी साहित्य का

स्वर्णकाल मुस्लिमकाल ही रहा जिसमें भक्ति और रीति काव्य का सृजन पनपा और जिसने भाव और अभिव्यक्ति के शिखर का स्पर्श किया। हिन्दी साहित्य का गौरव जिस महाकाव्य-रामचरित मानस-पर आश्रित है उसने उसी की गाथा गायी है। उन गाथाओं को सजीव बनाये रखनेवाले उपकरण सदैव हमारे सामने दिखाई पड़ते रहें। जिन्होंने अंगरेजों के काल में रघुपति राघव राजा राम गीत गाकर हमारे पुरुषार्थ को जगाये रखा और रामायण का एक गुटका अपने साथ मारीशस ले जाने वाले भारतीय मजदूरों ने अपने-आपको टूटकर बिखरने नहीं दिया। ऐसा हमारा दृढ़ समाज था, पर अब वोट की राजनीति में वही भारत एक विशेष समुदाय को प्रसन्न करने के लिए और हिन्दुओं को तोड़ने के लिए श्रीराम के अवतार पर ही प्रश्नचिन्ह लगाकर आघात करता है। जीवन की सारी गतिविधियाँ वोट की राजनीति में केन्द्रित हैं। अपने यहाँ के अल्पसंख्यक समुदाय को प्रसन्न कर उनके वोट की पुलिया पर सत्ता के राजपथ को पाना चाह रहे हैं। हमारा शीर्ष नेतृत्व बुद्धि से भी पंगु है। वह ऐसे हथकंडे अपनाया करता है जो भारत को ही नुकसान पहुँचानेवाला हुआ करता है। सत्तापक्ष की अंबिका सोनी करोड़ों हजार रूपये उस सेतु को तोड़कर 'विशेष पथ' बनाने के पक्ष में है तो प्रमुख विरोधी पक्ष सुषमा स्वराज के नेतृत्व में विरोध प्रगट कर इस प्रस्ताव को आमूलचूल ध्वस्त करने के प्रयास में है। वहाँ भी वोट की राजनीति ही चल रही है, वह भी इसे तोड़कर दूसरे पक्ष को लाभ नहीं पहुँचाना चाहेगा। इसलिए घमासान तो होगा ही। दोनों का मूलमंत्र राजनीति है, श्रीराम की भावना से उनका कोई संबंध नहीं दिखाई पड़ता। जहाँ तक सर्वसाधारण जनता का पक्ष है, वह यथास्थिति में ही रहना सीख गई है। रामसेतु उसके लिए पूज्य भावना का प्रतीक है और वह प्रतीक किसी भी हालत में तोड़ा नहीं जा सकता है। उनकी भावना कभी भी तोड़ी नहीं जा सकती, चाहे पक्ष-विपक्ष कितना ही विष घोलने का प्रयत्न करे।

कुछ विदेशी ताकतें नयी-नयी योजनाएं बनाकर भारत के 2020 के विश्वगुरू बनने के सपने को पूर्णतया नेस्तनाबूद करने पर तुली हुई हैं। इसीलिए वे अंतर्राष्ट्रीय जहाजी मार्ग के निर्माण के लिए रास्ता साफ करने के लिए रामसेतु को तोड़ना चाहती हैं। जब बड़े-बड़े दैत्याकार वायुयान आकाशमार्ग से हजारों टन सामग्री लम्बी दूरियों पर ले जा रहे हैं, तब महीनों जहाज से सामान ढोने का उपक्रम निरर्थक है, बुद्धिमानी नहीं है। इस युग में जलमार्ग की खोज की कवायद निरर्थक है, कोई मायने नहीं रखती। इसलिए श्रीरामसेतु को अपने सम्पूर्ण गौरव के साथ विद्यमान रहने का पूरा अधिकार मिलता है, उसके साथ किसी प्रकार की भी छेड़खानी नहीं सही जा सकती।

●

# रामसेतु तथा राम के युग की प्रामाणिकता

[ सरोज बाला ]

हम भारतीय विश्व की प्राचीनतम सभ्यता के वारिस हैं तथा हमें अपने गौरवशाली इतिहास तथा उत्कृष्ट प्राचीन संस्कृति पर गर्व होना चाहिये। किन्तु दीर्घकाल की परतंत्रता ने हमारे गौरव को इतना गहरा आघात पहुँचाया कि हम अपनी प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति के बारे में खोज करने की तथा उसको समझने की इच्छा ही छोड़ बैठे। परन्तु स्वतंत्र भारत में पले तथा पढ़े-लिखे युवक-युवतियाँ सत्य की खोज करने में समर्थ हैं तथा छानबीन के आधार पर निर्धारित तथ्यों तथा जीवन मूल्यों को विश्व के आगे गर्वपूर्वक रखने का साहस भी रखते हैं।

श्रीराम द्वारा स्थापित आदर्श हमारी प्राचीन परम्पराओं तथा जीवन मूल्यों के अभिन्न अंग हैं। वास्तव में श्रीराम भारतीयों के रोम-रोम में बसे हैं। परन्तु प्रश्न पैदा होता है कि श्रीराम कौन थे ? कहाँ पैदा हुए ? क्या उन्होंने अयोध्या से रामेश्वरम तक, जंगलों तथा पर्वतों की वास्तव में यात्रा की थी ? आओ! हम इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयत्न करें :-

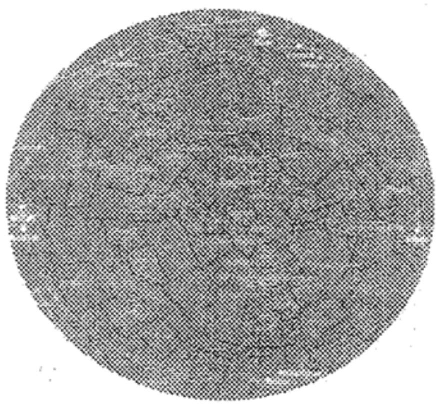
श्रीराम की कहानी प्रथम बार महर्षि वाल्मीकि ने लिखी थी। वाल्मीकि रामायण श्रीराम के अयोध्या में सिंहासनारूढ़ होने के बाद लिखी गई। महर्षि वाल्मीकि एक महान खगोलविद् थे। उन्होंने राम के जीवन में घटित घटनाओं से संबंधित तत्कालीन ग्रह, नक्षत्र और राशियों की स्थिति का वर्णन किया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ग्रहों, नक्षत्रों तथा राशियों की उसी स्थिति की पुनरावृत्ति हजारों सालों में भी नहीं होती। इन खगोलीय स्थितियों की वास्तविक तिथियाँ प्लैनेटेरियम साफ्टवेयर के माध्यम से जानी जा सकती हैं। भारतीय राजस्व सेवा में कार्यरत् श्री पुष्कर भटनागर ने अमेरिका से 'प्लैनेटेरियम गोल्ड' (फॉगवेयर पब्लिशिंग का) नामक साफ्टवेयर प्राप्त किया जिससे सूर्य/चंद्रमा के ग्रहण की तिथियाँ तथा अन्य ग्रहों की स्थिति तथा पृथ्वी से उनकी दूरी वैज्ञानिक तथा खगोलीय पद्धति से जानी जा सकती है। इसके द्वारा उन्होंने महर्षि वाल्मीकि द्वारा वर्णित खगोलीय स्थितियों के आधार पर आधुनिक अंग्रेजी कैलेण्डर की तारीखें निकाली हैं। इस प्रकार उन्होंने श्रीराम के जन्म से लेकर 14 वर्ष के वनवास के बाद वापस अयोध्या पहुंचने तक की घटनाओं की तिथियों का पता लगाया है। इन सबका अत्यन्त रोचक एवं विश्वसनीय वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक 'Dating the Era of Lord Ram" - By Rupa and Company' में किया है जिसमें से कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण यहाँ भी प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

श्रीराम के जन्म की तिथि

महर्षि वाल्मीकि ने बाल काण्ड के सर्ग 18 के श्लोक नम्बर 8 और 9 (1/18/89) में वर्णन किया है कि श्रीराम का जन्म चैत्रमास की नवमी तिथि को हुआ, उस समय ग्रहों, नक्षत्रों तथा राशियों की स्थिति इस प्रकार थी-

1. सूर्य मेष में 2. शनि तुला में
3. बृहस्पति कर्क में 4. शुक्र मीन में
5. मंगल मकर में 6. चैत्र माह, शुक्ल पक्ष
7. चंद्रमा पुनर्वसु के निकट 8. कर्क राशि
9. नवमी की दोपहर 10. समय लगभग 12 बजे

जब उपर्युक्त खगोलीय स्थिति को कम्प्यूटर में एन्टर किया गया तो 'प्लैनेटेरियम गोल्ड साफ्टवेयर' के माध्यम से यह निर्धारित किया गया कि 10 जनवरी, 5114 ई.पू. दोपहर के समय अयोध्या के लेटीच्यूड तथा लांगीच्यूड (25N81E) से ग्रहों, नक्षत्रों तथा राशियों की स्थिति बिल्कुल वही थी, जो महर्षि वाल्मीकि ने वर्णित की है। इस प्रकार श्रीराम का जन्म 10 जनवरी सन् 5114 ई. पू. (7117 वर्ष पूर्व) हुआ जोकि भारतीय कैलेण्डर के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि है और समय 12 बजे से 1 बजे के बीच का है। सारे भारत में आजतक ठीक इसी दिन इसी समय राम जन्म महोत्सव मनाया जाता है। (उस दिन के आकाश का चित्र संलग्न किया गया है।)



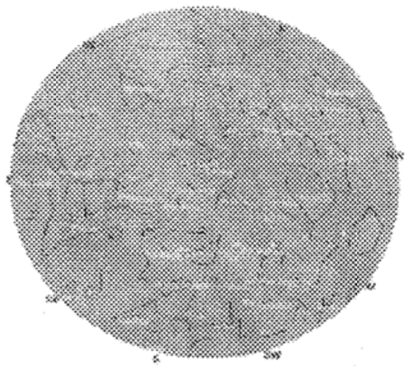
**10 जनवरी 5114 ईसापूर्व प्लैनेटरी स्थिति- चैत्र माह की नवमी**
25$^0$N81$^0$E Jan 10, -5114 12.30

श्रीराम के वनवास की तिथि

वाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड (2/4/18) के अनुसार महाराजा दशरथ श्री राम का राज्याभिषेक करना चाहते थे क्योंकि उस समय उनका नक्षत्र सूर्य, मंगल और राहु से घिरा हुआ था। ऐसी खगोलीय स्थिति में या तो राजा मारा जाता है या वह किसी षड्यंत्र का शिकार हो जाता है। राजा दशरथ मीन राशि के थे और उनका नक्षत्र रेवती था यह सभी तथ्य कम्प्यूटर में डालें तो पाया कि 5 जनवरी वर्ष 5089 ई.पू. के दिन सूर्य, मंगल और राहु तीनों मीन राशि के रेवती नक्षत्र पर स्थित थे। यह सर्वविदित है कि राज्यतिलक वाले दिन ही राम को वनवास जाना पड़ा था। इस प्रकार यह वही दिन था

जब श्रीराम को अयोध्या छोड़कर 14 वर्ष के लिए वन में जाना पड़ा। उस समय श्री राम की आयु 25 वर्ष (5114-5089) की निकलती है तथा वाल्मीकि रामायण में अनेक श्लोक यह इंगित करते हैं कि जब श्रीराम ने 14 वर्ष के लिए अयोध्या से वनवास को प्रस्थान किया तब वे 25 वर्ष के थे।

## खरदूषण के साथ युद्ध के समय सूर्यग्रहण

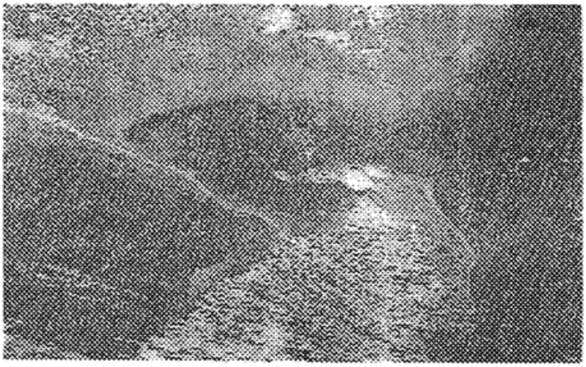


वाल्मीकि रामायण के अनुसार वनवास के 13वें साल के मध्य में श्रीराम का खरदूषण से युद्ध हुआ तथा उस समय सूर्यग्रहण लगा था और मंगल ग्रहों के मध्य में था। जब इस तारीख के बारे में कम्प्यूटर साफ्टवेयर के माध्यम से जांच की गई तो पता चला कि यह तिथि 5 अक्टूबर 5077 ई.पू. ; अमावस्या थी। इस दिन सूर्य ग्रहण हुआ जो पंचवटी ($20^0$N$73^0$E) से देखा जा सकता था। उस दिन ग्रहों की स्थिति बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी वाल्मीकि जी ने वर्णित की- मंगल ग्रह बीच में था-एक दिशा में शुक्र और बुध तथा दूसरी दिशा में सूर्य तथा शनि थे। खर-दूषण के साथ युद्ध के दौरान 7 अक्टूबर 5077 ईसापूर्व सूर्य ग्रहण हुआ था।

अन्य महत्वपूर्ण तिथियाँ-

किसी एक समय पर बारह में से छह राशियों को ही आकाश में देखा जा सकता है। वाल्मीकि रामायण (5/57/1,2,3) में हनुमानजी के लंका से वापस समुद्र पार आने के समय आठ राशियों, ग्रहों तथा नक्षत्रों के दृश्य को अत्यन्त रोचक ढंग से वर्णित किया गया है। ये खगोलीय स्थिति श्री भटनागर द्वारा प्लैनेटेरियम के माध्यम से प्रिन्ट किये हुए 14 सितम्बर 5076 की सुबह 6:30 बजे से सुबह 11 बजे तक के आकाश से बिल्कुल मिलती हैं। इसी प्रकार अन्य अध्यायों में वाल्मीकि द्वारा वर्णित ग्रहों की स्थिति के अनुसार कई बार दूसरी घटनाओं की तिथियाँ भी साफ्टवेयर के माध्यम से निकाली गईं जैसे श्रीराम ने अपने 14 वर्ष के वनवास की यात्रा 2 जनवरी 5075 ई.पू. को पूर्ण की और ये दिन चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की नवमी ही था। इस प्रकार जब श्रीराम अयोध्या लौटे तो वे 39 वर्ष के थे। (5114- 5075)।

## रामसेतु के उपग्रह चित्र



वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम की सेना ने रामेश्वरम से श्रीलंका तक समुद्र के ऊपर पुल बनाया। इसी पुल को पार कर श्रीराम ने राक्षस राजा रावण को मार कर सीता को आजाद करवाया। हाल ही में नासा ने इंटरनेट पर एक सेतु के वे अवशेष दिखाये हैं, जो पॉक स्ट्रेट में समुद्र के भीतर रामेश्वरम (धंनुषकोटि) से लंका में तलाई मन्नार तक 30 किलोमीटर लम्बे रास्ते में पड़े हैं।

वास्तव में वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि विश्वकर्मा की तरह नल एक महान शिल्पकार थे जिनके मार्गदर्शन में पुल का निर्माण करवाया गया। यह निर्माण वानर सेना द्वारा यंत्रों के उपयोग से समुद्र तट पर लाई गई शिलाओं, चट्टानों, पेड़ों तथा लकड़ियों के उपयोग से किया गया। महान शिल्पकार नल के निर्देशानुसार महाबली वानर बड़ी-बड़ी शिलाओं तथा चट्टानों को उखाड़कर यंत्रों द्वारा समुद्र तट पर ले आते थे। साथ ही वे बहुत से बड़े-बड़े वृक्षों को, जिनमें ताड़, नारियल, बकुल, आम और अशोक आदि शामिल थे, समुद्र तट पर पहुंचाते थे। नल ने कई वानरों को बहुत लम्बी रस्सियाँ दे दोनों तरफ खड़ा कर दिया था। इन रस्सियों के बीचोबीच पत्थर, चट्टानें, वृक्ष तथा लताएँ डालकर वानर सेतु बांध रहे थे। इसे बांधने में 5 दिन का समय लगा। (6/22/45 से 73) (चित्र संलग्न हैं)

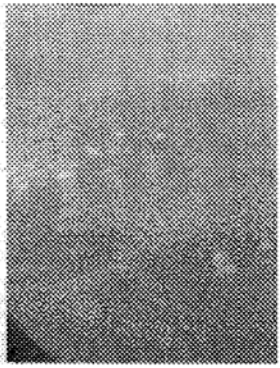
रामेश्वरम और मन्नार, श्रीलंका के बीच पाक स्ट्रेट में 30 कि.मी. लम्बे रामसेतु का नासा द्वारा लिया गया चित्र.

यह पुल श्रीराम द्वारा तीन दिन की खोजबीन के बाद चुने हुए समुद्र के उस भाग पर बनवाया गया जहाँ पानी बहुत कम गहरा था तथा जलमग्न भूमार्ग पहले से ही उपलब्ध था। इसलिए यह विवाद व्यर्थ है कि रामसेतु मानव निर्मित है या नहीं, क्योंकि यह पुल जलमग्न द्वीपों, पर्वतों तथा बरेतीयों वाले प्राकृतिक मार्गों को जोड़कर उनके ऊपर ही बनवाया गया था। इस तथ्य के अनेकों प्रमाण हैं कि पिछले हजारों वर्षों में रामसेतु का प्रयोग भारत और श्रीलंका के बीच में भूमार्ग के तौर

पर किया जाता था।

बौद्ध धर्म के इतिहास में भी इस बात का जिक्र है कि महाराजा अशोक के बौद्ध धर्म अपनाने के बाद उनकी पुत्री संघमित्रा व पुत्र महेन्द्र इसी पुल के रास्ते आज से लगभग 2300 वर्ष पूर्व भारत में श्रीलंका बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए पहुंचे थे। कवि कालीदास द्वारा रचित रघुवंशम में रामसेतु का वर्णन नासा द्वारा दिए गए चित्रों से बिल्कुल मिलता है (सर्ग 13)। महाभारत, विष्णु पुराण तथा अग्नि पुराण में भी इस पुल के बारे में लिखा गया है। दक्षिण भारत तथा श्रीलंका के अत्यंत प्राचीन सिक्कों पर भी इस रामसेतु पुल के चित्र उपलब्ध हैं।





प्राकृत साहित्य में 7वीं से 12वीं सदी के बीच (मुगल राज्य विस्तार के समय) इस रामसेतु को ''सेतुबन्ध'' का नाम दिया गया था। रामसेतु का नाम ''एडम्स ब्रिज'' सोलहवीं शताब्दी में यूरोप वासियों के भारत आने के बाद पड़ा। मुस्लिम लोग भी विश्वास रखते हैं कि इसी पुल के ऊपर से एडम, श्रीलंका के एडम पर्वत तक पश्चाताप करने के लिए गए थे। 16वीं तथा 17वीं शताब्दी में बने दो डच मानचित्र तथा एक फ्रेन्च मानचित्र में एडम्स ब्रिज अर्थात् रामसेतु को रामेश्वरम (भारत) तथा तलाईमन्नार (श्रीलंका) के बीच क्रियात्मक भूमार्ग दर्शाया गया है (सरस्वती महल लायब्रेरी तन्जावुर में उपलब्ध)। सन् 1803 के मद्रास प्रेसिडेन्सी के अंग्रेजी सरकार द्वारा जारी किए गजट में लिखा गया है कि 15वीं शताब्दी के मध्य तक रामसेतु का प्रयोग तमिलनाडु से श्रीलंका जाने के लिए किया जाता था, परन्तु बाद में एक भयंकर तूफान से इस पुल का बड़ा भाग समुद्र में डूब गया।

*गुगल अर्थ से ली गई ये तस्वीरें दर्शाती हैं कि रामसेतु प्राकृतिक होने के साथ-साथ मानव निर्मित भी हैं।*

इस जलमग्न प्राकृतिक द्वीपों, चट्टानों और बरेतियों को जोड़कर सेतु बनाने में मानवीय प्रयास का कितना हाथ था यह तो खोजबीन का विषय है, जिसके लिए एक ऐसी अनुसंधान टीम का गठन किया जाए जिसमें शामिल हों- पुरातत्वविद्, भूवैज्ञानिक, इकोलॉजिस्ट इत्यादि। श्रीलंका सरकार डूबे हुए सेतु (धनुषकोटि से मन्नार) पर भूमार्ग बनाना चाहती है, जबकि भारत सरकार इसे विस्फोट से उड़ाकर जहाजरानी मार्ग बनाना चाहती है, इस प्रकल्प को सेतुसमुद्रम का नाम दिया

गया है। श्रीलंका के ऊर्जा मंत्री श्री जय सूर्या ने नवंबर 2002 में इस जल मग्न रामसेतु के ऊपर भूमार्ग बनाने का प्रस्ताव रखा ताकि भारत और श्रीलंका के बीच पर्यटक तथा व्यापारिक संबंध बढ़ सकें।

14 वर्ष के वनवास में श्री राम ने जिन स्थानों की यात्रा की उनका क्रमिक विवरण

अनुसंधानकारों ने (विशेषकर श्री राम अवतार ने) अयोध्या से लेकर रामेश्वरम तक उन स्थानों की यात्रा की, जहाँ वनवास की अवधि में श्री राम गये थे और पाया कि 195 स्थानों पर आज भी तत्संबंधी स्मारक स्थल विद्यमान हैं। वाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड से युद्ध काण्ड (अध्याय 2 से 6) में श्रीराम द्वारा वनवास के समय गमन किए गए स्थानों का विवरण मिलता है, जिनमें कई नदियों तथा सरोवरों के किनारे स्थित ऋषि आश्रमों का भी उल्लेख है। इनमें से कई स्थानों में अभी भी स्मारक स्थल हैं तथा वहाँ के स्थानीय लोग यह मानते हैं कि प्रभु राम वास्तव में उन जगहों पर आये थे। इनमें से कई स्थान मैंने स्वयं भी देखे हैं। श्री राम के वन गमन स्थलों की इस यात्रा को 5 चरणों में बाँटा जा सकता है। (मानचित्र संलग्न) ;

## प्रथम चरण-गंगा क्षेत्र



राम, लक्ष्मण व सीता जी कई स्थानों पर गये जिनमें शामिल हैं- तमसा नदी तल (मंदाह)- अयोध्या से 20 कि.मी. दूर। तत्पश्चात् गोमती नदी पार करने के बाद गंगा तट पर पहुंचे और श्रृंगवेरपुर (सिंगरौर) गये, जो निशादराज गुह का राज्य था तथा केवट प्रसंग के लिए प्रसिद्ध है तथा इलाहाबाद से 20 कि.मी. दूर स्थित है (मानचित्र-11)। फिर उन्होंने गंगा नदी पार की और भारद्वाज आश्रम पहुँचे। उसके बाद उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश की सीमा पर चित्रकूट पहुँचने के पहले संगम के समीप यमुना को पार किया। स्मारकों में वाल्मिकी आश्रम, माण्डव्य आश्रम, भरतकूप इत्यादि शामिल हैं (मानचित्र 26 से 30)। भरत मिलाप के बाद उन्होंने चित्रकूट छोड़ दिया और सतना (मध्य प्रदेश) स्थित अत्री आश्रम गए। (मानचित्र-34)

## द्वितीय चरण-दंडक वन क्षेत्र

श्रीराम, लक्ष्मण व सीता ने इस क्षेत्र में घने जंगलों, नदी-नालों एवं अन्य जल समूहों के

आसपास भ्रमण किया तथा आज भी अनेक स्थानों पर स्मारक स्थित है। मध्य प्रदेश में दंडक अरण्य क्षेत्र तथा सतना में शरभंग एवं सुतीक्ष्ण मुनि आश्रमों का दौरा (मानचित्र 36-11) किया। मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्रों में नर्मदा व महानदी नदियों के किनारे दस वर्षों तक कई ऋषि आश्रमों का भ्रमण किया। बाद में सुतीक्ष्ण आश्रम वापस आए। पन्ना, रायपुर, बस्तर और जगदलपुर में वनगमन स्थलों के कई स्मारक विद्यमान हैं, उदाहरणतः मांडव्य आश्रम, श्रृंगी आश्रम, राम लक्ष्मण मंदिर आदि। कई नदियों, तालाबों, पर्वतों और वनों को पार करने के पश्चात् वे नासिक में अगस्त्य आश्रम गए- श्रीराम को अग्नि शाला में बनाए गए शस्त्र अगस्त्य मुनि ने यहाँ भेंट किये।

## तीसरा चरण- गोदावरी के साथ-साथ भ्रमण

अगस्त्य आश्रम से वे पंचवटी रहने के लिए गए, जो नासिक में गोदावरी के तट पर पांच वटवृक्षों का स्थान कहा जाता है। पंचवटी क्षेत्र में शूर्पणखा की नाक कटी तथा खर और दूषण के साथ युद्ध हुआ- इनके स्मारक मौजूद हैं, जिनमें 'जनस्थान' भी शामिल है। मारीच वध-स्थल पर भी स्मारक अस्तित्व में हैं, जिनमें शामिल हैं मृगव्याधेश्वर और बनेश्वर (मानचित्र-126 से 129) । नासिक क्षेत्र सीता सरोवर, रामकुंड, त्रयम्बकेश्वर जैसे स्मृति चिन्हों से भरा पड़ा है। रावण ने सीता हरण के बाद जटायु का वध किया जिसकी यादगार नासिक से 56 कि.मी. ताकेड गांव में 'सर्वतीर्थ' स्थान पर है।

चतुर्थ चरण-तुंगभद्रा तथा कावेरी नदियों के क्षेत्र

श्रीराम तथा लक्ष्मण सीता जी की खोज में तुंगभद्रा एवं कावेरी नदी क्षेत्रों में अनेक स्थलों पर गये। जटायु और कबंध से मिलने के पश्चात ऋष्यमूक पर्वत पहुंचने के लिए वे दक्षिण की तरफ गये। मार्ग में, पम्पासर क्षेत्र में शबरी आश्रम गये- जिसे आजकल बेलगांव में सुलेवान कहा जाता है जो बेर के वृक्षों के लिए अभी भी प्रसिद्ध है। मलय पर्वत और चंदन के जंगलों को पार करते हुए वे ऋष्यमूक की तरफ गए। यहाँ उन्होंने हनुमान जी और सुग्रीवजी से भेंट की। सीता के आभूषणों को देखा और श्रीराम ने बाली का वध किया। ऋष्यमूक तथा किष्किंधा, कर्नाटक के हम्पी, जिला बल्लारी में स्थित हैं।

पंचम चरण-समुद्र तट

मलय पर्वत, चंदनवन, कई नदियों और झरनों तथा वन वाटिकाओं को पार करके श्रीराम और उनकी सेना ने समुद्र की ओर प्रस्थान किया। पहले श्रीराम ने सेना को कोडीकरई में एकत्रित किया परन्तु सर्वेक्षण के बाद इस स्थान को पुल बनाने के लिए उचित नहीं समझा गया। इसीलिए सारी सेना को रामेश्वरम ले जाया गया। वाल्मिकी के अनुसार तीन दिन की खोजबीन के बाद श्रीराम ने समुद्र में वह मार्ग ढूंढ निकाला जिसके ऊपर से लंका पहुँचने के लिए पुल का निर्माण किया जा सकता था। छेदुकराई तथा रामेश्वरम के इर्दगिर्द अनेकों स्मृतिचिन्ह अभी भी मौजूद हैं। धनुषकोटि, रामेश्वरम से नाविक पारदर्शी स्थल वाली नौकाओं पर यात्रियों को सेतु के अवशेषों को दिखाने ले जाते हैं किन्तु इसे एडम्स ब्रिज कहना अधिक धर्मनिरपेक्ष माना जाता है।

## श्री राम के पूर्वज

इतिहासकारों ने यह सिद्ध किया है कि श्री राम सूर्यवंशी थे और वे इस वंश के 64वें राजा थे। पूर्व 63 राजाओं के नाम तथा विवरण 'अयोध्या का इतिहास' नामक पुस्तक में लिखे हुए हैं। यह पुस्तक लगभग 80 साल पूर्व राय बहादुर सीताराम जी द्वारा लिखी गई थी। लुजियाना यूनीवर्सिटी, अमेरिका के प्रो. सुभाष काक ने अपनी पुस्तक 'द एस्ट्रोनोमिकल कोड ऑफ ऋग्वेद' में श्रीराम के उन 63 पूर्वजों का वर्णन किया है जिन्होंने अयोध्या पर राज्य किया। रामजी के पूर्वजों का विवरण इस प्रकार है :-

श्रीराम, सुपुत्र दशरथ, सुपुत्र अज, सुपुत्र रघु, सुपुत्र दीर्घबाहु, सुपुत्र दिलीप द्वितीय... आदि (सभी 63 नाम दिये गये हैं) श्री सगर (चालीसवें राजा) श्री भागीरथ (37वें राजा) तथा सत्यवादी हरिशचन्द्र (32वें राजा)...

| | |
|---|---|
| 1. मनु | 2. इक्ष्वाकु |
| 3. शशाद | 4. ककुत्स्थ |
| 5. अनेनस | 6. पृथु |
| 7. विश्वगाश्व | 8. आर्द्र |
| 9. युवनाश्व-प्रथम | 10. श्रावस्त |
| 11. वृहदश्व | 12. कुवलयाश्व |
| 13. दृढाश्व | 14. प्रमोद |
| 15. हर्यश्व-प्रथम | 16. निकुंभ |
| 17. संहताश्व | 18. कृशाश्व |
| 19. प्रसेनजित | 20. युवनाश्व-द्वितीय |
| 21. मांधाता | 22. पुरूकुत्स |
| 23. त्रसदस्यु | 24. संभूत |
| 25. अनरण्य | 26. पृषदश्व |
| 27. हर्यश्व द्वितीय | 28. वसुमनस |
| 29. वृधन्वन | 30. त्रैयारूण |
| 31. त्रिशंकु | 32. हरिश्चंद्र |
| 33. रोहित | 34. हरित |
| 35. चंचु | 36. विजय |
| 37. रूरूक | 38. वृक |
| 39. वाहु | 40. सगर |
| 41. असमंजस | 42. अंशुमान |
| 43. दिलीप प्रथम | 44. भगीरथ |
| 45. श्रुत | 46. नाभाग |
| 47. अंबरीष | 48. सिंधुद्वीप |

| | |
|---|---|
| 49. अयुतायुस | 50. ऋतुपर्ण |
| 51. सर्वकाम | 52. सुदास |
| 53. कल्माषपाद | 54. अश्मक |
| 55. मूलक | 56. वृद्धशर्मन |
| 57. विश्वसह प्रथम | 58. दिलीप प्रथम |
| 59. दिलीप द्वितीय | 60. दीर्घबाहु |
| 61. रघु | 62. अज |
| 63. दशरथ | 64. रामचंद्र |
| 65. कुश | 66. अतिथि |
| 67. निषध | 68. नल |
| 69. नभस | 70. पुंडरीक |
| 71. क्षेमधन्वन | 72. देवानीक |
| 73. अहीनगु | 74. पारिपात्र |
| 75. दल | 76. शल |
| 77. उकथ | 78. वज्रनाभ |
| 79. शंखन | 80. व्युषिताश्व |
| 81. विश्वसह द्वितीय | 82. हिरण्यनाभ |
| 83. पुष्य | 84. ध्रुवसंधि |
| 85. सुदर्शन | 86. शीघ्र |
| 87. मरू | 88. प्रथुश्रुत |
| 89. सुसंधि | 90. अमर्ष |
| 91. महाश्वत | 92. विश्रुतवत |
| 93. वृहद्बल | |

वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि कैकेय प्रदेश से अयोध्या आते समय भरत (श्रीराम के भाई) ने सरस्वती नदी को पार किया। परन्तु वैज्ञानिकों द्वारा किये गये पुरातात्विक, भूतात्विक तथा खगोलीय अनुसंधानों से पता चला है कि सरस्वती नदी वास्तव में हिमालय के रूपिन-सुपिन ग्लेशियरों से निकल कर पंजाब, हरियाणा, राजस्थान तथा गुजरात से होती हुई अरब सागर तक बहती थी और आज से लगभग 4500 वर्ष पहले सूख गयी।

कश्मीर से कन्या कुमारी तथा बंगाल से गुजरात तक, सभी जगह लोगों का यह विश्वास है कि श्री राम की कहानी वास्तविक है। विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा उत्तर पूर्व राज्यों में बसी अनुसूचित जनजातियों/वनवासी जातियों के अधिकांश उत्सव श्रीराम तथा, श्रीकृष्ण के जीवन की घटनाओं से संबंध रखते हैं।

ऊपर लिखे गये तथ्य हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए मजबूर करते हैं कि श्री सीताराम जी के जीवन से संबंधित स्थान तथा घटनाएं हमारी वास्तविक सांस्कृतिक तथा सामाजिक

धरोधर हैं और प्रत्येक भारतीय को जाति, पंथ से ऊपर उठ कर इनके बारे में गर्व अनुभव करना चाहिए। श्री राम उस काल से संबंधित हैं जब मोहम्मद साहब और ईसा मसीह साहिब पैदा भी नहीं हुए थे तथा मुस्लिम और ईसाई पंथ से विश्व अनभिज्ञ था। हिन्दू तथा भारतीय शब्द समानान्तर थे तथा भारत देश आर्यावर्त या हिन्दुस्तान के नामों से भी जाना जाता था। इसको इंडिया नाम तो अंग्रेजों ने दिया।

राम राज्य में जाति व्यवस्था की बुराईयां नहीं थी। महर्षि वाल्मीकि कथित रूप से शूद्र थे, किन्तु श्रीराम द्वारा निर्वासित सीता जी उनकी गोद ली हुई पुत्री की तरह उनके आश्रम में रही। श्री राम के सुपुत्र लव-कुश भी वाल्मीकि जी के शिष्य थे। हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि महर्षि वाल्मीकि प्रथम महान खगोलविद् थे। ग्रह नक्षत्रों की स्थिति का उनका ज्ञान हजारों वर्षों के बाद भी सत्य सिद्ध हुआ है और कम्प्यूटर तथा साफ्टवेयर के अविष्कारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ग्रहों की स्थिति के आंकलन में उन्होंने नाम मात्र की भी त्रुटि नहीं की। शबरी वनवासी भील जनजाति की थी तथा श्रीराम की सेना जिसने रावण को परास्त किया, उसमें मध्य और दक्षिण भारत के वनवासी जातियों तथा जनजातियों के योद्धा शामिल थे। इस प्रकार श्रीराम के जीवन से संबंधित सभी तथ्य और घटनाएं हम सभी भारतीयों, चाहे वे किसी भी जाति अथवा पंथ के हों, की सामूहिक धरोहर हैं।

मोहम्मद साहब 1400 वर्ष पहले पैदा हुए, ईसा मसीह 2000 वर्ष पूर्व पैदा हुए, गौतम बुद्ध 26 00 वर्ष पहले पैदा हुए तथा श्री राम 7000 वर्ष पूर्व पैदा हुए। इसलिए श्रीराम के जीवन से संबंधित घटनाओं तथा स्थलों की खोज सर्वाधिक कठिन कार्य हैं क्योंकि बाढ़, भूकम्पों तथा आक्रमणों ने बहुत प्रमाण नष्ट कर दिये हैं। लेकिन क्या हम इस बात से हताश होकर अपनी महान सांस्कृतिक परम्परा की खोज करना छोड़ सकते हैं ?

हम भारतीयों को गर्व अनुभव करना चाहिए कि भारतीय सभ्यता पृथ्वी पर सर्वाधिक पुरानी सभ्यता है और निश्चित रूप से 10,000 वर्ष से भी अधिक पुरानी है। इसलिए यह कहना कि भारतीय सभ्यता ईसा से 1500 वर्ष पूर्व मध्य यूरोप से आए हुए लोगों से आरंभ हुई सर्वथा असत्य है। हमें इस सिद्धांत को नकारना ही होगा क्योंकि मैक्समूलर स्वयं भी इसे नकार चुके हैं। अब हमें यह स्वीकार करना ही होगा कि ब्रिटिश शासन में हमारी शिक्षा उस मैकाले के सिद्धांतों पर आधारित थी, जिसको यह विश्वास था कि सम्पूर्ण भारतीय साहित्य इंग्लैंड की एक पुस्तक अलमारी के बराबर भी नहीं हैं और भारतीय निम्न स्तरीय हैं। भारतीय और मध्य यूरोप के निवासियों के चेहरों में यदि कोई समानता पाई जाती है तो केवल इसी से यह सिद्धांत सत्य सिद्ध नहीं हो जाता है कि मध्य यूरोप के आर्यों ने भारत में आकर इस देश को बसाया। भाषामूलक इतिहासकारों को भारतीय इतिहास को काल्पनिक सिद्ध करने का प्रयास छोड़कर गहन जांच पड़ताल, विश्लेषण तथा खोज करके सच्चाई सामने लानी चाहिए।

यह बड़े खेद की बात है कि स्वतंत्रता के 60 वर्ष बाद तक भी भारतीय पुरातत्व विभाग ने रामसेतु के बारे में खोजबीन हेतु समुद्री पुरातत्व विज्ञान केन्द्र की स्थापना नहीं की। जब कोई खोजबीन की ही नहीं गई तो इस बात का सत्यापन कैसे किया जा सकता है कि रामसेतु एक कल्पनामात्र है और इसका निर्माण हुआ ही नहीं था। यह तो सर्वविदित है कि जब इस तरह की टीम

द्वारका के पास खोजबीन के लिए गठित की गई तो महाभारत में वर्णित द्वारका नगरी को समुद्र में डूबा पाया गया, आधुनिक द्वारका नगरी से एक किलोमीटर दूर। कार्बन डेटिंग के माध्यम से यह सुनिश्चित किया गया कि यह नगरी ईसापूर्व 1443 में समुद्र में डूब गई थी। इसीलिए यह अति आवश्यक है कि एक समुद्री पुरातत्व अनुसंधान टीम का गठन किया जाए जिसमें पुरातत्वविद, भूवैज्ञानिक तथा इकोलॉजिस्ट शामिल हों और यह टीम रामसेतु के बारे में खोजबीन करे। दूसरी तरफ यह भी आवश्यक है कि राम के युग की प्रमाणिकता के बारे में जानने के लिए भाषामूलक इतिहास को छोड़ वैज्ञानिक अनुसंधान के आधार पर ऐतिहासिक तथ्यों की जाँच पड़ताल की जाए। विज्ञान के आधुनिक अविष्कारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि केवल भारत का ही नहीं अपितु पूरे विश्व का इतिहास नए सिरे से लिखना होगा क्योंकि विभिन्न सभ्यताएँ भाषामूलक इतिहासकारों के अनुमानों से कहीं अधिक पुरानी हैं। इसीलिए जरूरी है कि नई हिस्ट्री काउंसिल का गठन किया जाए जिसमें किसी भी विचारधारा का कोई भी भाषामूलक इतिहासकार न हो अपितु इसके सदस्य संस्कृत तथा साहित्य के विद्वान, खगोलविद, अंतरिक्ष वैज्ञानिक, पुरातत्वविद तथा इकोलॉजिस्ट होने चाहिए जो केवल वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर प्राचीनतम घटनाओं की प्रमाणिकता तथा तिथियों का निर्धारण करें।

समाचार पत्र पत्रिकाओं, दूरदर्शन तथा अन्य चैनलों को ये बात ध्यान में रखनी होगी कि वे ऐसा वातावरण तैयार करें जिससे हमारे आधुनिक व शिक्षित युवक तथा युवतियाँ प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर शोध कार्य करें, नये तथ्यों को उद्घाटित करें तथा निर्भय होकर गर्व के साथ अपने शोध कार्य के परिणामों को विश्व के समक्ष रखे सके।

## संदर्भ


1. 'श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण' - गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित.
2. 'डेटिंग दी ईरा ऑफ लॉर्ड राम' द्वारा पुष्कर भटनागर, रूपा एंड कम्पनी द्वारा प्रकाशित.
3. 'दी एस्ट्रोनॉमिकल कोड ऑफ द ऋग्वेद' प्रोफेसर सुभाष काक लुसियाना यूनिवर्सिटी, सुएसए मुंशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित.
4. 'अयोध्या का इतिहास' द्वारा राय बहादुर लाला सीता राम 1932. प्रकाशक- आर्य बुक डेपो. करोलबाग, नई दिल्ली.
5. 'श्रीराम वन गमन स्थल' द्वारा डॉ. राम अवतार. श्री राम सांस्कृतिक शोध संस्थान ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित.
6. राम सेतु - रामेश्वरम रामसेतु प्रोटेक्शन मूवमेन्ट, चैन्नई द्वारा प्रकाशित (मई 2007).


●

# विश्व की प्राचीनतम धरोहर : रामसेतु

[इंजी. सूर्यकांत त्यागी ]

भारत सरकार का कहना है कि इस रामसेतु के कारण जहाजों को सैकड़ों मील की अतिरिक्त यात्रा करनी पड़ती है। साढ़े चार सौ से साढ़े आठ सौ मील के आसपास के गन्तव्य स्थान के हिसाब से और उसी अनुपात में दो से तीन दिनों का अतिरिक्त समय भी लगाना पड़ता है। इस अतिरिक्त समय और दूरी बचाने के लिए यदि बंगाल और श्रीलंका की मन्नार खाड़ियों के बीच के समुद्र को ही गहरा कर दिया जाए तो पूरे श्रीलंका द्वीप से घूमकर आने के बजाय जहाज कन्याकुमारी होते हुए भारत के दक्षिणों तटों पर आ-जा सकेंगे। सेतुसमुद्रम नहर इन्हीं दो खाड़ियों के बीच के समुद्र को गहरा करने की परियोजना का नाम है।

**जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं ।**
**ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥**

- गो. तुलसीदास जी

**अस्ति रामेश्वरं नाम रामसेतौ पवित्रितम् ।**
**क्षेत्राणामपि सर्वेषां तीर्थानामपि चोत्तमम् ॥**
**दृष्टमात्रे रामसेतौ मुक्तिः संसार सागरात् ॥**

-(स्कन्दपुराण, ब्राह्म., सेतुमहात्म्य)

अर्थात् भगवान श्रीराम द्वारा बंधाए हुए सेतु से जो परम पवित्र हो गया है, वह रामेश्वर-तीर्थ सभी तीर्थों तथा क्षेत्रों में उत्तम है। उस सेतु के दर्शनमात्र से संसार-सागर से मुक्ति हो जाती है।

कुछ वर्षों पूर्व विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक एजेन्सी- 'नासा' के द्वारा उपग्रह के माध्यम से प्राप्त चित्रों और सामग्रियों से यह ज्ञात हुआ कि श्रीलंका और श्रीरामेश्वरम् के बीच 30 मील (48 कि.मी.) लम्बा तथा सवा मील (2 कि.मी.) चौड़ा सेतु पानी में डूबा पड़ा है। इस सेतु के ऊपर 3 से 30 फुट तक जलस्तर है। यह रेत और पत्थर से मानवनिर्मित है तथा 17 लाख 50 हजार वर्ष पुराना है। यह काल लगभग त्रेतायुग का ही काल था। इस प्रकार यह बात प्रमाणित होती है कि यह वही सेतु है, जो लंका विजय के पूर्व भगवान श्रीराम के द्वारा निर्मित हुआ था।

इस सेतु को तोड़ने से भारत और श्रीलंका के बीच समुद्री परिवहन में चार सौ नॉटिकल मील की दूरी तथा सोलह घंटे की बचत होगी, परन्तु विशेषज्ञों के अनुसार रामसेतु को तोड़े बिना भी समुद्री रास्ता बनाया जा सकता है। रामेश्वरम् और धनुष्कोटि के बीच मण्डपम् गांव के निकट फैले रेत के टीलों को हटाकर नया समुद्री रास्ता बनाया जा सकता है। इससे न केवल वर्तमान परियोजना

से भी कम समय में परिवहन संभव हो सकेगा, बल्कि रामसेतु जैसी कालजयी धरोहर की भी रक्षा हो सकेगी।

श्रीराम ने भारत की दक्षिण दिशा से इसकी रक्षा का महत्व सेतु के बांधने के समय समझ लिया था। अपने पश्चात् भी इसकी रक्षा होती रहे, इसकी आपको चिंता थी। इसीलिए अपने भावी राजाओं से इस धर्मसेतु की रक्षा के लिए उन्होंने सविनय मार्मिक प्रार्थना की थी। उनका कहना था कि मेरे द्वारा जिस धर्म की, जिस मर्यादा की स्थापना की गई है, उसका पूर्णतया परिपालन समय-समय पर आनेवाले इस धर्मप्राण भारत के शासकों को अवश्य ही करना चाहिए। एकमात्र श्रीराम की यह महानता है कि अपने आदेश को भी वे बार-बार प्रणाम करके याचना के रूप में ज्ञापित करते हैं।

श्रीरामजी ने कहा था कि अपने उत्तराधिकार के रूप में भविष्य में होने वाले भारत के शासकों से मैं यही चाहता हूँ कि वे वेदशास्त्र के सिद्धान्तों की रक्षा तथा मर्यादा जिस प्रकार मैंने की है, वैसे ही आप सब भी सदा करते रहें, इसी में सबका कल्याण है-

**भूयो भूयो भाविनो भूमिपाला**
**नत्वा नत्वा याचते रामचन्द्रः।**
**सामान्योऽयं धर्मसेतुर्नराणां।**
**काले काले पालनीयो भवद्भिः॥**

-(स्कन्दपुराण, ब्रह्म., धर्मा. 34/40)

हे भविष्य में होने वाले राजाओं ! यह रामचन्द्र आप लोगों से अत्यंत विनम्रतापूर्वक बारंबार प्रणाम कर याचना करता है कि आप लोग मेरे द्वारा बांधे हुए धर्मसेतु की सुरक्षा सदा-सदा करते रहें।

भगवान श्रीराम के इस आदेश का पालन यदि भारत सरकार करती है तो इससे निश्चय ही भारत की दक्षिणी सीमा हर प्रकार से सुरक्षित रहेगी और इससे करोड़ों लोगों की आस्था का भी सम्मान होगा।

सेतुसमुद्रम परियोजना से 440 मील की दूरी कम हो जाएगी। नौसेना कप्तान बालकृष्णन ने बताया है कि खुले समुद्र में जहाज 12 समुद्री मील प्रति घंटे की रफ्तार से चलता है, वहीं नहर से गुजरने पर उसकी गति 9 (नौ) समुद्री मील प्रति घंटे होगी। दुर्घटना से बचने के लिए इसके आगे टोही पायलट जहाज भी चलाना होगा। नहर में सिर्फ 82 हजार टन के छोटे जहाज चल सकते हैं। खर्च भी ज्यादा कम नहीं होगा। जबकि इस परियोजना से तमिलनाडु के पांच जिलों के 16 लाख मछुआरों की आजीविका प्रभावित होगी।

भारतीय मूल के विदेशी नागरिक अशोक कैंथ ने श्रीलंका के पर्यटन मंडल के सहयोग से एक परियोजना के अंतर्गत रामायण में वर्णित लगभग 50 पौराणिक स्थलों को खोज निकाला है। इसी खोज को लेकर भारतीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चैनलों में 'फिर मिल गए राम', 'रावण के

एयरपोर्ट', 'रावण वैज्ञानिक था , 'लंका में हनुमान' 'रावण की गौशाला' 'मेघनाद का मंदिर' 'सीता फूल' 'पितर कुंड'जैसे शीर्षकों से उन सभी स्थलों की बहुत ही स्पष्ट झांकियां प्रस्तुत की हैं। जी न्यूज चैनल पर दिखाई गई झांकी में रेगल क्षेत्र में एक गुफा में एक 17 फुट लम्बा और चार फुट चौड़ा ताबूत का वर्णन किया गया है जिसमें रावण की ममी (शव) सुरक्षित होने की संभावना व्यक्त की गई है। श्रीलंका में एक किंवदंती प्रचलित है कि नाग जाति के लोग रावण के मारे जाने पर उसके शव को उठाकर ले गए।

इन चैनलों में दिखाया गया है कि लगभग 8 हजार फुट की ऊंची बलियापोरा की पहाड़ियों पर रावण की 5 हवाई पट्टियों को खोज निकाला है, जहाँ उसके पुष्पक विमान सहित अन्य वायुयान उतरते और उड़ते थे। उन्होंने बौद्ध कालीन साहित्य से पुष्पक विमान और राक्षसों के चित्र भी खोज निकाले हैं। उन्होंने सीता वाटिका, लंका-दहन के स्थानों को तथा द्रोणागिरि पर्वत को भी खोज निकाला है।

आज कुछ पुरातत्व-वेत्ता श्री रामसेतु को महज समुद्री उथल-पुथल का कारण बताने में जरा-सी भी लज्जा का अनुभव नहीं करते। ऐसा लगता है कि मानों उनकी पूरी अस्मिता और बुद्धि-विवेक जैसे सत्ता के हाथों बिक गए हों- वे नीलाम हो गएहों। क्या उन्हें 30 मार्च 2007 के भारत सरकार को लिखे डॉ. एस.आर. राव के पत्र के विषय में कोई जानकारी नहीं है ? क्या उनके पत्र का खंडन करने का साहस उन पुरावेत्ताओं को है ? डॉ. एस.आर. राव भारतीय सामुद्रिक पुरातत्व समाज (आर्कियोलाजी सोसायटी ऑफ इंडिया) के संस्थापक एवं समुद्री पुरातत्व के अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विशेषज्ञ हैं। उन्होंने 30 मार्च 2007 को केन्द्रीय मंत्री को संबोधित अपने पत्र में आग्रह करते हुए उस सत्य का उद्घाटन भी किया है। उन्होंने लिखा है कि "रामसेतु समुद्री पुरातत्व की एक महान संरचना है और यह विश्व-विरासत घोषित किए जाने योग्य है। आप कृपया भारत की इस महान धरोहर को न तोड़ें।"

इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने 16 नवंबर 1972 को पेरिस (फ्रांस) में आयोजित अपने सत्रहवें अधिवेशन में विश्व सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विरासत के संरक्षण का जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया था- क्या उसकी भारत सरकार अनदेखी नहीं कर रही है। इस प्रस्ताव की धारा- 1, 2, 3 एवं 4 में स्पष्ट उल्लेख है कि इतिहास, कला और विज्ञान की दृष्टि से जिन पुरातात्विक संरचनाओं, वस्तुओं और स्मारकों का महत्व है- वे विश्व-विरासत हैं। धारा-3 व 4 में संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य देशों को पुरातात्विक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक महत्व की विरासत के संरक्षण का निर्देश दिया गया है।

इस अधिवेशन में इस तथ्य को भी विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है कि पुरातात्विक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विरासत पर केवल परम्परागत खतरे ही नहीं मंडरा रहे हैं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों से भी हमारी वे विरासत खतरे में पड़ गई हैं। इसलिए अधिवेशन वैश्विक महत्व के स्मारकों, सांस्कृतिक और प्राकृतिक संरचनाओं की विरासत को सुरक्षित रखने

के लिए स्थायी, वैज्ञानिक एवं आधुनिक उपायों के सामूहिक व्यवहार को आवश्यक मानता है। अधिवेशन सदस्य देशों से इस दिशा में एकजुट होकर सामूहिक अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों की अपेक्षा करता है। यहां यह मानने के लिए कोई कारण नहीं है कि यूनेस्को की इस पेरिस उद्घोषणा की जानकारी भारत सरकार, उसके मंत्रियों या अधिकारियों को नहीं है।

इस सिलसिले में भारतीय संविधान की धारा-49 के अनुसार राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों, स्थानों, वस्तुओं सहित ऐतिहासिक महत्व से जुड़े प्रत्येक स्थल, स्मारक या वस्तु को संरक्षित रखने के लिए राज्य बाध्य है। इसी प्रकार संविधान की धारा-5 (ए) के अनुसार रामसेतु हमारी राष्ट्रीय विरासत होने के कारण उसकी रक्षा करने का कर्त्तव्य एवं अधिकार देश के प्रत्येक नागरिक को है।

विश्वप्रसिद्ध इंजीनियर मेल्कोम पी.आर. लाइट ने रामसेतु को अभियांत्रिकीय जगत की सर्वश्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में व्याख्यायित किया है। उन्होंने यह भी अपील की है कि इसे विश्व-विरासत के रूप में हर कीमत पर संरक्षित किया जाना चाहिए। उन्होंने इसका महत्व बताते हुए कहा कि पिछले लगभग बीस लाख वर्ष से यह सेतु भारतीय समुद्री तट-क्षेत्रों की रक्षा करता आ रहा है।

इस संदर्भ में अमेरिका की विश्वप्रसिद्ध एजेन्सी 'नासा' की खोजों को रेखांकित करना आवश्यक हो गया है। सर्वप्रथम नासा के जेमिनी-II नामक अंतरिक्ष उपग्रह ने रामसेतु के चित्र खींचकर सन् 1966 में अपने केन्द्र को भेजे। पुनः नासा ने 1983 से लेकर 1994 तक अपने अंतरिक्ष अभियान में रामसेतु के अनेक चित्र पृथ्वी पर भेजे। सन् 1993 में दिल्ली के प्रगति मैदान में लगी राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र की प्रदर्शनी में सर्वप्रथम इन चित्रों का प्रदर्शन आम लोगों के लिए किया गया। इस प्रकार नासा ने रामसेतु से संबंधित अपने पास उपलब्ध समस्त चित्रों के 75 प्रतिशत चित्रों को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया, जो नासा के जानसन स्पेस के भूविज्ञान चित्र विश्लेषक विभाग के पास सुरक्षित थे। नासा द्वारा रामसेतु संबंधी चित्रों को सार्वजनिक करने पर, विश्व के तमाम समाचार-पत्रों ने इन्हें प्रकशित करने में प्रमुखता प्रदान की।

इसी प्रकार भारतीय अनुसंधान संगठन (इसरो) ने भी 26 अक्टूबर 2003 को रामसेतु संबंधित चित्रों की एक श्रृंखला आम जनता के लिए प्रसारित की। इंटरनेट की गूगल-अर्थ पर भी रामसेतु के चित्र उपलब्ध हैं। इन सब ठोस तथ्यों के बावजूद भी भारत सरकार के सिवाय विश्व के किसी भी देश की सरकार अपनी प्राचीन धरोहर को विकास के नाम पर तोड़ने का साहस नहीं कर सकती। क्योंकि इस प्रकार की प्राचीन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक एवं पुरातात्विक धरोहर किसी राष्ट्र के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण होती है कि उसके नागरिक उससे अपनी अस्मिता और जीवनी-शक्ति ग्रहण करते हैं।

एक ओर यह सरकार 27% हिन्दू मंदिरों को तोड़कर उनकी सामग्रियों से लगभग 800 वर्ष पूर्व बनाई गई कुतुबमीनार को बचाने के लिए, दिल्ली मेट्रो रेल्वे मार्ग को परिवर्तित करने के लिए

जनता के सार्वजनिक कोष से करोड़ों रूपये फूंक डालने में कोई हिचक महसूस नहीं करती। वहीं इसके संग्रहालयों में रखे प्राचीन मिट्टी के टूटे बर्तनों और आभूषणों के संरक्षण में करोड़ों रूपए व्यय करती है। वहीं इसके पुरातत्व विभाग को, भारत की पहचान देने वाली इस विलक्षण धरोहर की, जरा भी परवाह नहीं होना इस बात का जीता-जागता सबूत है कि वह राष्ट्रीय हितों तथा हिन्दु-हितों के प्रति संवेदनशील नहीं है।

श्री गुरूनानक देव जी की वाणी में भी हमें रामसेतु के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। त्रेतायुग के रामसेतु को तोड़ना हमारी संस्कृति और सद्गुरूओं की अमृतवाणी का घोर अपमान है और यह उनके प्रति जघन्य अपराध भी है। आइए हम देखें कि श्रीगुरू नानकदेव जी ने रामसेतु के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति प्रगट करते हुए क्या कहा है :-

**बंदर की सेना ने बनाया 'रामसेतु'।**
**राम झुरै दल तेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥**
**बंदर की सेना सेवीए मनि तनि जुझु अपारू ।**
**सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥**
**नानक करता करणहारू करि वेखै थापि उथापि ॥25॥**
**मन महि झूरै रामचंदु सीता लक्ष्मण जोगु ।**
**हणवंतरू आराधिया आइआ करि संजोगु ॥**
**भूला दैतु न समझई तिनि प्रभु कीए काम ।**
**नानक बेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥26॥**

**(सलोक बारां ते अधिक महला-1 पृष्ठ 1412)**

अर्थात् भगवान श्रीराम ने अपने भीतर बल-अधिकार होते हुए भी ऋक्ष-वानर सेना की सेवाएँ प्राप्त कीं, क्योंकि मन और तन से युद्ध करने का आधार दशानन रावण द्वारा सीता हरण हुआ तथा नारादादि शाप से लक्ष्मण को मूर्छा आई। श्री गुरूनानक देव जी कहते हैं कि श्रीराम करणहार होते हुए भी समस्त परिवर्तन देख रहे हैं। फिर हनुमान जी ने सीता की खोज की तथा लक्ष्मण की मूर्छा दूर करने के लिए संजीवनी बूटी आदि लाने का कठिन कार्य किया और इस प्रकार श्रीराम का सीता और लक्ष्मण से पुनः संयोग हुआ। परन्तु रावण यह न जान सका कि हनुमान आदि ने भक्ति-श्रद्धा से काम क्यों किए ? श्रीराम सर्वशक्तिमान थे, परन्तु उन्होंने कर्मफल के सिद्धांत को बताया और लोक मर्यादा स्थापित की। इसलिए वे यही बताना चाहते थे कि मनुष्य को बहुत सोच-विचार कर शुभ कर्मों को ही करना चाहिए।

**गुरूमुखि बांधिओ सेतु बिधातै ।**
**गुरूमुखि बांधिओ सेतु बिधातै ॥**
**लंका लूटी दैत संतापै ।**
**रामचंदि मारिओ अहिरावणु ॥**

**भेदु बभीसण गुरमुखि परचाइण ।**
**गुरमुखि साइरि पाहण तारे ॥**
**गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥40॥**

**(सिंघ गोसटि-रामकली महला-1 पृष्ठ 942)**

अर्थात् विधाता, हरि, विष्णु देव जी के अवतार गुरमुखि श्री रामचन्द्र जी ने सेतु बांधा। श्रीराम ने लंका लूटी और राक्षसों को संताप दिया। श्रीराम ने अहिरावण को भी मार दिया। रावण को मारने का भेद विभीषण ने श्रीराम को बताया, जिसके फलस्वरूप रावण मारा गया। श्रीराम ने समुद्र पर पत्थर तैरा दिए। श्रीराम ने तैंतीस करोड़ देवों का उद्धार किया।

इसी प्रकार भाई गुरूदास जी कहते हैं -

**रामचंद निरमल पुरखु, धरमहुँ साइर पत्थर तरणा।**
**वरिआई अहुं रावन गया कालका टिक्का परत्रिय हरणा ॥**
**रामाइण जुग-जुग अटल से उघरे जो आए सरणा ॥18॥**

अर्थात् श्रीरामचन्द्र जी धर्मात्मा पुरुष हैं, जिनके नाम से समुद्र पर पत्थर तैर गए। परन्तु रावण ने परस्त्री का अपहरण करके अपने मस्तक पर कलंक का टीका लगा लिया। रामायण अर्थात् श्रीराम की कथा युग-युग से अटल चली आ रही है और चलती रहेगी। जो मनुष्य राम की शरण में आ जाते हैं, उनका उद्धार हो जाता है।

**राम कथा जुग-जुग अटल सम कोई भाखत नेत।**
**सुरग बास रघुबर करा सगरी पुरी समेत ॥858॥**

(गुरू गोविंद सिंह जी, रचना-रामावतार-श्री दशमग्रंथ)

अर्थात् गुरू गोविंद जी अपनी अमृत वाणी में कहते हैं कि श्री रामचन्द्रजी की कथा युग-युगांतर में अटल रहने वाली है। इस कथा का स्वाध्याय प्रत्येक मनुष्य नित्य करता है। देखो, श्रीरामचंद्र जी का यह कैसा बड़प्पन है कि उन्होंने स्वयं तो स्वर्ग में वास किया, साथ ही सारी अयोध्या नगरी को भी ले गए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रामसेतु की चर्चा युगों-युगों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती आ रही है, जो यह प्रमाणित करती है कि लंका विजय के लिए श्रीराम द्वारा वानर-भालुओं के सहयोग से समुद्र पर त्रेतायुग में यह सेतु बांधा गया था और ये वर्णन इसकी सत्यता को सिद्ध करते हैं। रामसेतु का तोड़ा जाना सद्गुरूओं की दिव्य और अमृत वाणी का अपमान भी है।

इसी प्रकार इस देश की धर्मप्राण जनता के शीर्ष जगद्गुरू शंकराचार्यों ने भी श्रीरामसेतु को तोड़ा जाना भारत की वैदिक एवं सनातन संस्कृति एवं धर्मसेतु का अपमान कहा है और समस्त भारतीय जनता से अपना प्रबल विरोध व्यक्त करने की अपील की है। रायपुर(मठपुरैना) छत्तीसगढ

में सर्वप्रथम श्रीरामसेतु रक्षार्थ 6 दिसम्बर 2007 को 13 दिवसीय महायज्ञ का आयोजन किया। जिसकी पूर्णाहुति 18 दिसंबर को विशाल जन-जागरण के साथ हुई। फिर शारदापीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्दजी सरस्वती महाराज ने रामसेतु महायज्ञ का प्रचार रथ 15 दिसंबर 2007 को रायपुर से प्रदेश भर की यात्रा पर जन-जागरण हेतु रवाना किया गया और दिनांक 28दिसंबर07 से 05 जनवरी 08 तक रायपुर (छत्तीसगढ़) में श्रीरामसेतु रक्षार्थ महायज्ञ का आयोजन कर धर्म-प्राण जनता में आंदोलन का सूत्रपात किया।

गोवर्धनपीठ पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द जी सरस्वती महाराज ने श्री रामसेतु के विखण्डन की योजना को विदेशी शक्तियों का षड्यंत्र कहा है। उनका कहना है कि अमेरिका एवं ईसाई शक्तियां जो भारत का ईसाईकरण करना चाहती हैं, वे श्रीरामसेतु के अस्तित्व को समाप्त करने की योजना बना रही हैं। इस राक्षसी षड्यंत्र का पता जब उन्हें कुंभ मेले में हिन्दु सम्मेलन के दिन 21 जनवरी 2006 को प्रथम बार मिला तो उन्होंने इसका भारी विरोध किया। उन्होंने इस मुद्दे पर समस्त राष्ट्रवादी जनता और हिन्दु मानस को जगाते हुए अपने अनेक उद्बोधन एवं आशीर्वचनों में जो उद्गार व्यक्त किए वे सार रूप में इस प्रकार हैं :-

गोवर्धनपीठ के शंकराचार्य कहते हैं कि अब इस राक्षसी षड्यंत्र के तहत इस पवित्र सेतु के कुछ हिस्सों को तोड़ा जा रहा है। वहां क्या घट रहा है इसकी सही जानकारी नहीं मिल पा रही है। क्योंकि रामेश्वरम् धनुष्कोटि से 25 किलोमीटर दूर लोगों की आबादी बसती है। उसमें धींवर नोलिया सम्प्रदाय के लोग रहते हैं। ये लोग निरक्षर हैं। इस कारण समुद्र के अंदर मशीन के जरिए क्या किया जा रहा है, इसकी जानकारी उन्हें नहीं है। उन्हें डरा कर भी रखा गया है। समुद्र के अंदर क्या हो रहा है, इसकी जानकारी विशेषज्ञों को भी नहीं हो पा रही है। अमेरिका के दबाव में विदेशी शक्तियों की प्रेरणा से और विदेशी यंत्रों को मंगाकर इस कार्य को अंजाम दिया जा रहा है। इसके उद्घाटन के बाद से हमने आम जनता को सजग किया है। इसे डायनामाइट के जरिए तोड़ने पर भी विचार हो रहा है।

पूज्य शंकराचार्य जी आगे कहते हैं कि नासा द्वारा भेजे गए चित्र श्रीरामसेतु के अस्तित्व को दर्शाते हैं। सन् 1470 ई. तक यह सेतु स्पष्ट दिखाई दे रहा था। इस पर लोग पैदल चल कर भी जाते थे। पर तूफान आने के कारण यह पानी के अंदर डूब गया। आज भी इसके ऊपर बालू और पानी है। पानी कम होने एवं समुद्र की लहरें शांत होने पर यह दिखाई देता है। छः मीटर पानी के नीचे यह सेतु विद्यमान है। इसका प्रमाण स्वयं नासा के वैज्ञानिकों ने दिया है। विश्व की एक दुर्लभ और प्राचीनतम धरोहर भारत के पास है। इसका निर्माण लाखों वर्ष पूर्व स्वयं भगवान श्रीराम ने किया था। इस बात को अमेरिका और यूरोप सहन नहीं कर पा रहा है। सारी दुनिया को सभ्यता का पाठ स्वयं द्वारा पढ़ाए जाने का अहम पाले हुए अमेरिका और यूरोप के विद्वान, इतिहासकार, पुरावेत्ता आदि नासा द्वारा उद्घाटित इस सत्य को जानकर भयभीत हो गए हैं। इसलिए वे इसे स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। अमेरिका भारत के पास थोरियम के विशाल भण्डार को भी नष्ट कर देना चाहता है। यहां के पाखण्डी राजनेताओं और कुर्सी के दलालों ने शत्रु के लिए दरवाजा खोल दिया है। इस देश के नेताओं ने

देशद्रोह का परिचय दिया है जो दुर्भाग्यजनक है।

वे इस षड्यंत्र की गहराई से जांच-पड़ताल करते हुए, उसे इस प्रकार व्याख्यायित करते हैं कि जब-जब पोप जॉन पाल-पाल भारत के दौरे पर आए तो दोनों समय उन्होंने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताते हुए यही कहा कि मेरी यात्रा का उद्देश्य सम्पूर्ण एशिया को ईसाई बनाने के लिए है और मेरा पहला लक्ष्य भारत है। दोनों समय हमारे राजनेता चुप रहे। आश्चर्य की बात यह है कि पोप श्रीलंका और चीन का दौरा भी उस समय करना चाहते थे। लेकिन दोनों देशों ने पोप का स्वागत करना तो दूर उन्हें अपने देश में आने की अनुमति भी नहीं दी। वहीं भारत की दुर्दशा देखें कि एक सोची-समझी रणनीति के तहत एक अपात्र व्यक्ति को शंकराचार्य बताकर पोप से उनका हाथ मिलवाया गया और पोप के आसन से तीन फुट नीचे उन्हें बैठाया गया। उस वक्त यह दिखाने की कोशिश की गई कि देश का शासन ही नहीं बल्कि राष्ट्र की व्यास गद्दी तथा शंकराचार्य भी पोप के नीचे आते हैं। अब तो वर्तमान के पोप यह कदापि नहीं चाहते हैं कि भारत पुनः विश्वगुरू बने। नेपाल जैसे हिन्दु राष्ट्र को समाप्त करने के लिए पोप के निर्देश से ईसाईयों ने वामपंथियों के साथ हाथ मिलाया। पोप का एकमात्र लक्ष्य सम्पूर्ण विश्व से हिन्दुत्व को समाप्त करना है। अतः अमेरिका और पोप यहां के कमजोर शासन-तंत्र को देखते हुए हमारी भारतीय अस्मिता एवं धर्म के प्रतीक इस श्रीरामसेतु को तोड़ने में लगे हुए हैं।

पूज्य शंकराचार्य जी आगे प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि यह अत्यंत गौरव की बात है कि कुछ हिन्दु जाग रहे हैं। लेकिन इसके साथ दुख की बात यह भी है कि हिन्दु पैसे और भौतिक सुख को प्राप्त करने के पीछे भाग रहे हैं। देश की संस्कृति की उन्हें कतई चिंता नहीं है और सत्तालोलुप राजनेता भी यही चाहते हैं कि हिन्दु संगठित न हों।

अन्यथा क्या कारण है कि सन् 1861 में टाउनसेंड द्वारा सेतु समुद्रम परियोजना (नहर) के लिए प्रस्तावित मार्ग को, सन् 1863 में सर विलियम द्वारा प्रस्तावित एवं सन् 1998 में संचालन समिति द्वारा प्रस्तावित और सन् 2004 में नीरी द्वारा प्रस्तावित मार्ग, जो श्रीरामसेतु को बचाकर परिवहन-नहर के लिए सुझाए गए सर्वमान्य मार्ग थे, को छोड़कर सन् 2004 में डी.पी.आर. की रिपोर्ट पर, जो एकमात्र ऐसा विकल्प है जो श्रीरामसेतु को काटता है, क्यों इसी मार्ग को स्वीकार करते हुए इसे क्रियान्वित किया जा रहा है। इन प्रस्तावित 5 (पांच) मार्गों में अंतिम मार्ग चुनने के पीछे जो षड्यंत्र है- वह स्पष्ट दिखाई देता है।

यहां एक तथ्य ध्यान देने योग्य है कि पहले नासा ने श्रीरामसेतु को मानव द्वारा बनाया गया बताया था, पर अब वह अपनी बात बदल रहा है। यह सब अमेरिकी सरकार के इशारे पर अवश्य हुआ है लेकिन इससे नासा अपनी विश्वसनीयता खो रहा है। नासा के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. शिवा सुब्रमण्यम ने कहा है कि इस बात के पर्याप्त प्रमाण उनके पास हैं कि यह सेतु मानव निर्मित है और यह प्रकृति द्वारा किसी भी प्रकार से निर्मित नहीं हुआ है। यहाँ एक प्रश्न उठता है कि क्या प्रकृति द्वारा भी निर्मित किसी महत्वपूर्ण चीजों को नष्ट करने का अधिकार किसी सरकार को है। जैसे गंगा,

हिमालय, अमरनाथ की पवित्र गुफा में बनने वाला हिमशिवलिंग आदि प्राकृतिक हैं अर्थात् प्रकृति द्वारा निर्मित हैं। क्या ये मानव निर्मित नहीं हैं, इसलिए कोई भी सरकार इन्हें तोड़ने का इरादा कर सकती है। फिर श्रीरामसेतु यदि प्राकृतिक है, तो भी इस महत्वपूर्ण रचना को सरकार तोड़ने का प्रपंच क्यों रच रही है ? प्राकृतिक चीजों को नष्ट करने का अधिकार सरकार को किसने दिया है ? क्या यह राष्ट्रदोह नहीं है ?

इस संदर्भ में एक और तथ्य ध्यान देने योग्य है कि पश्चिमी विद्वानों द्वारा स्थापित विज्ञान का यही सिद्धांत कि ब्रह्मांड की आयु लगभग 200 करोड़ वर्ष है- सन् 1982-83 तक विज्ञान के विद्यार्थियों को यही पढ़ाया जाता रहा है। जबकि भारतीय काल गणना और यजुर्वेद और विष्णु पुराण के सिद्धांतों के अनुसार इस पृथ्वी की आयु 432 करोड़ वर्ष निर्धारित की गई है, उसे ही अब विज्ञान सत्य मान रहा है।

लेकिन नोबल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक श्री एस. चंद्रशेखर जो भारतीय मूल के अनिवासी वैज्ञानिक, और सर सी.वी. रमन के नाती (ल्ब्यस्ल्व) हैं, ने अपने द्वारा स्थापित बिग बैंग (भस्थ्र भीध्र्श्र) सिद्धांत से यह सिद्ध कर दिया है कि इस पृथ्वी की आयु लगभग 400 करोड़ वर्ष है। इस महत्वपूर्ण खोज के 18 वर्ष पश्चात्, यू.एस.ए. के वैज्ञानिकों ने भी इस पृथ्वी की आयु को 400 करोड़ वर्ष मान लिया है और यह भी सम्भावना जताई है कि इसमें 30 से 54 करोड़ वर्ष और जोड़े जा सकते हैं। अर्थात् आधुनिक विज्ञान के विद्यार्थी पृथ्वी की वही काल गणना आज पढ़ रहे हैं जिसे यजुर्वेद ने आदिकाल से मान्यता दी है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि उसी ज्ञान को वैज्ञानिक 2000 वर्षों तक व्यायाम करके पाने में समर्थ हुए, जिसे यजुर्वेद आदिकाल से कहता आ रहा है। इसका अर्थ यह हुआ कि ऋषियों के ज्ञान को समझने में पश्चिमी विद्वानों को 2000 वर्ष का समय लगा।

इस प्रकार ऋषियों की काल गणना ही सर्वश्रेष्ठ एवं सत्य है। उनके अनुसार कालक्रम में चार युग- सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग-होते हैं। कलियुग 4.32 लाख वर्ष, द्वापर युग 8.64 लाख वर्ष, त्रेता 12.96 लाख वर्ष और सतयुग 17.28 लाख वर्ष की अवधि का होता है। यह पूरा एक कालचक्र चतुर्युगी कहलाता है, जिसकी अवधि 43.20 लाख वर्ष होती है। 1000 चतुर्युगी का एक सृष्टिक्रम होता है जिसे कल्प कहते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि नोबल पुरस्कार प्राप्त भारतीय मूल के वैज्ञानिक श्री एस. चंद्रशेखर द्वारा स्थापित बिग बैंग के सिद्धांतानुसार पृथ्वी की वही आयु निर्धारित होती है, जिसे भारतीय ऋषियों ने मानव जाति के आदिकाल में निर्धारित कर दिया था। उसी प्रकार नासा द्वारा श्रीराम सेतु के निर्माण की जो 17 लाख 50 हजार वर्ष पूर्व काल गणना की है, तो वही त्रेतायुग में श्रीराम का अवतरण-काल है।

भले ही आज भारत सरकार राम के अस्तित्व को स्वीकार न करे लेकिन भारत के मूल संविधान ने बड़े आदर और सम्मान के साथ श्रीराम और श्रीकृष्ण के चित्रों को अपने साथ समाहित कर, उन्हें भारतीय अस्मिता का प्रतीक घोषित किया है। यहां इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत के समस्त शासकों ने रामराज्य को ही अपना आदर्श घोषित किया है और यह भी

सत्य है कि विश्व के लगभग 200 करोड़ हिन्दुओं की इस आस्था को, किसी भी सरकार की मान्यता या उसके शपथ-पत्रों से झुठलाया नहीं जा सकता।

अंग्रेजों द्वारा, सन् 1860 में श्रीरामसेतु तोड़ने या न तोड़ने पर विचार करने के पश्चात, इस परियोजना पर विराम लगा दिया गया था। स्वतंत्र भारत में 1956 से द्रमुक ने इसे आगे बढ़ाने के प्रयास किए। तो द्रमुक की कुटिल चाल में न फंसकर तत्कालीन सरकार ने चींटी की चाल से इस परियोजना को इस प्रकार धीरे-धीरे चलाया ताकि आने वाली भविष्य की सरकारें जन-आक्रोश को झेलें। आज भारत की जनता यह जानना चाहती है कि विकास में इस योजना की क्या प्राथमिकता है ? इससे सरकार को क्या आय होगी ? इससे व्यापार वाणिज्य कितना बढ़ेगा ? इससे कितना विकास होगा ? तथा इससे क्या-क्या हानियां होंगी ?

विशेषज्ञों का मत है कि विदेशी कम्पनियों तथा भारतीय कम्पनियों के अधिकांश जहाज, जो यूरोप, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, चीन, जापान आदि देशों के चक्कर लगाते रहते हैं, वे इस नहर का उपयोग निम्न कारणों से नहीं करेंगे :-

(1) भारतीय नौसेना के अवकाश प्राप्त कप्तान श्री एच. बालकृष्णन का कथन है कि ये जहाज 60,000 टन (डी.डब्ल्यू.टी.) से अधिक वजन लेकर चलते हैं, जबकि इस नहर का उपयोग केवल वे जहाज कर सकेंगे जो 32000 टन (डी.डब्ल्यू.टी.) तक भार लेकर चलते हैं। अतः बड़े जहाज इस नहर से नहीं जा सकेंगे।

(2) जो जहाज अफ्रीका का चक्कर लगाकर आते हैं, उन्हें इस नहर का उपयोग करने के लिए और लम्बा चक्कर लगाना पड़ेगा, जिनसे उनकी यात्रा लागत तथा समय घटने के स्थान पर बढ़ जाएगा। इससे ये जहाज भी इस मार्ग का उपयोग नहीं कर पाएंगे।

(3) जो जहाज भूमध्य सागर तथा स्वेज नहर से आते हैं, वे यात्रा का जरा सा कोण बदलकर आसानी से श्रीलंका का चक्कर लगा लेते हैं। उन्हें नहर पर जाने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। स्पष्ट है कि इन जहाजों से न तो भारत सरकार की आय बढ़ेगी और न ही व्यापार-वाणिज्य पर कोई प्रभाव पड़ेगा। इस प्रकार एल.टी. रामबोल रपट का मत असत्य सिद्ध होता है कि इससे सरकार की 60% आय बढ़ जाएगी।

(4) जहाजों को नहर तक पहुंचने के लिए बहुत पहले से अपनी गति धीमी करनी पड़ेगी, जिससे व्यय तथा यात्रा के घंटों पर बहुत कम प्रभाव पड़ेगा।

(5) 300 मीटर चौड़ी इस नहर से, पनामा नहर की तरह, एक समय में केवल एक जहाज ही गुजर सकेगा। इससे नहर के दोनों ओर जहाजों की कतारें लग जाएंगी। इससे ईंधन का व्यय बढ़ जाएगा तथा समय की बचत भी कम हो जाएगी।

(6) यह नहर बहुत कम चौड़ी तथा गहरी होगी। इसलिए जहाजों को निकलने में कठिनाई

होगी। अतः स्थानीय पायलटों की सहायता से ये जहाज इस नहर से निकाले जा सकेंगे। इन पायलटों को बहुत भुगतान करना पड़ेगा।

अतः कहा जा सकता है कि जो जहाज इस नहर का प्रयोग करेंगे, उन्हें भी कोई विशेष लाभ नहीं होगा। इससे व्यापार-वाणिज्य तथा सरकार की आय में भी कोई विशेष वृद्धि नहीं होगी। अनुमान है कि लगभग 2000 जहाज इस नहर का प्रयोग करेंगे, जिनसे आर्थिक लाभ नगण्य होंगे और नहर-मार्ग पर रख-रखाव के खर्च अधिक होंगे।

गोपाल कृष्णन, पूर्व निदेशक, ज्योलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया का मत है कि इस रामसेतु के पश्चिम में पाल्क स्ट्रीट है तथा पूर्व में मन्नार की खाड़ी है। नहर बन जाने से दोनों ओर के समुद्रों में भारी उथल-पुथल होगी, जिससे भूचाल आने के खतरे बढ़ जाएंगे तथा बड़े पैमाने पर भारी विपत्तियां आ सकती हैं और जन-धन की हानि हो सकती है।

इसी प्रकार पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. अरूणाचलन का भी मत है कि रामसेतु को तोड़ने से पर्यावरण प्रणाली में उथल-पुथल होगी तथा हिन्द महासागर में चक्रवात आएंगे तथा इससे मानसून चक्र प्रभावित होगा। परिणामस्वरूप दक्षिण में कभी बाढ़ आएगी और कभी सूखा पड़ेगा।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह सेतु समुद्रम परियोजना एक लाभप्रद योजना नहीं है। इससे न तो सरकार की आय बढ़ेगी और न देश का व्यापार-वाणिज्य बढ़ेगा और न कोई विकास हो पाएगा। आज देश की 40 प्रतिशत जनता गरीबी रेखा के नीचे जी रही है। इतनी बड़ी आबादी को न तो रोजगार उपलब्ध है और न खाने-कमाने के कोई और साधन। इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि सेतु-समुद्रम परियोजना का प्राथमिकता में कोई स्थान नहीं है।

●

# कालजयी धरोहर : सेतुबंध रामेश्वरम्

[ डॉ. गीता शर्मा ]

करोड़ों हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र भगवान श्रीराम हैं। लाखों करोड़ों वर्षों से हम भारतीय अपनी आत्मा में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को परमात्मा के रूप में स्थापित किये हुए हैं। उनकी पूजा आराधना करते आ रहे हैं। श्री राम ऐसे महामानव हैं, जिन्होंने सांसारिक ऐश्वर्य त्याग कर सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए देश के समस्त दुखी जनों को उनके संकट से मुक्ति दिलाई। वेद, उपनिषद, शास्त्र उन्हें परब्रह्म परमेश्वर का अवतार मानते हैं। भारत में ऐसी कोई भी संत परम्परा और ऐसी कोई भाषा नहीं, जिसमें श्री राम ईश्वर एवं महापुरुष के रूप में स्वीकृत न हुए हों, इसलिए ही उन्हें मर्यादा पुरषोत्तम कहा गया है। श्रीराम का चरित्र मानव जाति के लिए आज भी सर्वथा अनुकरणीय है।

भारत में धर्म की जड़ें काफी गहरी हैं। प्रत्येक देश किसी न किसी आदर्श (धर्म) पर टिका होता है। उसका प्रयास अपने लोक जीवन में आदर्श को स्थापित करना है। भारतीय लोक मर्यादा के आदर्श श्रीराम हैं। सम्पूर्ण भारत वर्ष में यत्र-तत्र-सर्वत्र राम जन्म के लगभग 200, 250 स्मृति चिन्ह विद्यमान हैं, यथा श्री रामेश्वर मंदिर, चित्रकूट, पंचवटी, शबरी-आश्रम, भारद्वाज-आश्रम, अत्रि आश्रम, रामसेतु आदि।

वर्तमान समय में सेतुबंध जो कि श्रीराम का स्मृति चिन्ह व भारत की धरोहर है, उसे तोड़ा जा रहा है। अमेरिका ने 23 जून 2005 को कहा था कि वह दक्षिण के वर्तमान समुद्री मार्ग पर भारत के ऐतिहासिक प्राचीन धरोहरों तथा अवशेष खण्डों की सुरक्षा करना और इनकी सुरक्षा के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च भी करना चाहता है, परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि भगवान श्रीराम द्वारा निर्मित इस प्राचीनतम सेतु को भारत एवं श्रीलंका के मध्य अवरोध मानकर सेतुसमुद्रम् शिपिंग केनाल प्रोजेक्ट को भारत सरकार ने 25 सौ करोड़ रुपये के कांट्रेक्ट पर तोड़ने की जिम्मेदारी सौंपी है। यह कार्य प्रारंभ भी हो गया है। विदेशी ड्रेजर समुद्र में उतर चुके हैं। सेतु को तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

हम आपको बताना चाहते हैं कि भगवान श्रीराम द्वारा निर्मित सेतु की महिमा का वर्णन वेदव्यास जी ने इस प्रकार किया :-

**अस्ति रामेश्वरं नाम रामसेतौ पवित्रितम् ।**
**क्षेत्राणामपि सर्वेषां तीर्थानामपि च उत्तमम् ।**
**दृष्टमात्रे रामसेतौ मुकित्तः संसारसागरात् ॥**

(स्कंदपुराण ब्रह्मा, सेतु महात्म्य)

अर्थात भगवान श्री राम द्वारा बँधाये हुए सेतु से जो परम पवित्र हो गया, यह रामेश्वर तीर्थ सभी तीर्थों तथा क्षेत्रों में उत्तम है। उस सेतु के दर्शनमात्र से संसार सागर से मुक्ति हो जाती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं :-

**जे रामेश्वर दरसनु करिहहिं ।**
**ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥**

आज भी सेतुबंध रामेश्वरम् भारतीय सनातन परम्परा में आस्था का प्रतीक धाम है। भारतीय इसका दर्शन करने आदर व श्रद्धा विश्वास के तहत ही जाते हैं। हमारे शास्त्र पुराणों में इसकी मान्यता एक धाम के रूप में स्थापित है। रामायण, इतिहास, पुराणों में सेतु का वर्णन तथा महत्व बहुत-बहुत विस्तार से लिखा है। करोड़ों वर्षों से समुद्र में डूबे पड़े इस सेतु को किसी ने नहीं देखा था। अंग्रेजों के शासन काल में उनकी एक सैनिक नाविक टुकड़ी को सन 1860 ई. में श्रीलंका और रामेश्वरम् के मध्य समुद्र में डूबा एक अवरोध मिला था। इसे हटाने के लिए 147 वर्षों में अनेक समितियाँ बनी, जो समुद्री यात्रा में अवरोध मानकर उसे उखाड़ने का प्रयास करती रही, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। कुछ वर्षों पूर्व विश्व प्रसिद्ध एक वैज्ञानिक एजेंसी-नासा के द्वारा उपग्रह के माध्यम से प्राप्त चित्रों और तथ्यों से यह ज्ञात हुआ कि श्रीलंका और श्री रामेश्वरम् के बीच 30 मील लम्बा तथा सवा मील चौड़ा सेतु पानी में डूबा पड़ा है। इस सेतु के ऊपर 5 से 30 फुट तक जल स्तर है। नासा एजेन्सी के अनुसार यह रेत और पत्थर से मानव निर्मित सेतु है तथा लगभग साढ़े सत्रह लाख वर्ष पुराना है, परन्तु हम यह बताना चाहते हैं कि 24 वें त्रेतायुग में श्री राम अवतार सिद्ध होता है।

**चतुर्विंशे युगे रामो वसिष्ठेन पुराधसा ।**
**सप्तमो रावणस्यार्थे जज्ञे दशरथात्मज :॥**

(वायु महापुराण 98/72)

यदि हम चतुयुर्गों की गणना करते हुए वर्तमान में 28वें चतुर्युग के कलयुग 5109 विक्रम संवत 2064 गणना करते हैं। भगवान श्रीराम का जन्म आज से ठीक 1 करोड़ 81 लाख 29 हजार 109 वर्ष पूर्व हुआ था। राम द्वारा निर्मित सेतुबंध कितना पुरातन है। इसका आप सहज अनुमान लगा सकते हैं। यह काल त्रेतायुग-द्वापर युग का संधिकाल था। यह सेतु वही है, जो लंका विजय के पूर्व भगवान श्रीराम के द्वारा निर्मित हुआ था। भगवान श्रीराम ने श्री हनुमान जी, नल-नील तथा सुग्रीव की विशाल वानरसेना के माध्यम से समुद्रतट पर सेतु का निर्माण कराया था।

आज इस सेतु को तोड़ा जा रहा है। श्रीराम द्वारा स्थापित इस सेतु की अस्मिता तथा श्रीराम की धरोहर नष्ट होने जा रही है। यह घोर अपराध है। यह पाप है। यदि इस कार्य को रोका न गया, तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। प्रकृति स्वयं अपना बदला लेती है, यह सर्वविदित है।

हम आपको बता दें कि लोक कल्याण के लिए ही श्रीराम ने अवतार लिया था और अपने जीवन काल में ही बड़े प्रयत्न से अधर्म में धर्म की जय हेतु इस धर्मरूपी सेतु को बाँधा। आने वाली भारत की पीढ़ियों से स्वयं श्रीराम जी ने इस धर्मसेतु की रक्षा के लिए विनम्रता से प्रार्थना की थी। वे चाहते तो राजा थे आदेश कर सकते थे, किन्तु नहीं भगवान श्रीराम ने अपने उत्तराधिकारियों को उत्तराधिकार के रूप में अपने श्रीमुख से निकले वचनामृत सौंपे। श्रीराम जी ने कहा कि मेरे द्वारा जिस धर्म की, जिस मर्यादा की स्थापना की गई है, उसका पूर्णतया परिपालन धर्म प्राण भारत के शासकों को अवश्य ही करना चाहिए -

श्रीराम ने स्वयं कहा :-

**भूयो भूयो भविनो भूमिपाला।**
**नत्वा नत्वा याचते रामचंद्रः**
**सामान्योऽय धर्म सेतुराणां**
**कगले-काले पालनीयो भवद्धि ॥**

(स्कंद पुराण ब्रह्मा धर्मा 34-40)

अर्थात "हे भविष्य में होने वाले राजाओं! यह रामचंद्र आप लोगों से अत्यंत विनम्रतापूर्वक बारंबार प्रणाम कर याचना करता है कि आप लोग मेरे द्वारा बाँधे हुए धर्म सेतु की सुरक्षा सदा करते रहें।"

**स्वस्ति प्रजाभ्य परिलालयंताम्**
**न्यायेन मार्गेण महीमहिषः।**
**गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं**
**लोकः समस्त सुखिनः भवन्तु ॥**

उस समय राजा हुआ करते थे, आज प्रजातंत्र है, तो सर्वत्र प्रजा का ही सर्वाधिकार है। इसलिए भारत वर्ष के प्रत्येक नागरिक पर इस धर्मसेतु की रक्षा का दायित्व है। इस दायित्व को हमें बड़ी आस्था विश्वास के साथ निभाना है। श्री राम जी ने जिस प्रकार वेद, शास्त्र, सिद्धांतों की रक्षा की, मर्यादा का पालन किया, हमें भी उनके सिद्धांतों, मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए अपने धर्म का पालन करना है। अन्यथा काल के गाल में सबको समाना है, तो उत्कृष्ट कार्य ही क्यों न करें? श्री हनुमान जी ने रावण की सभा में रावण को समझाया था :-

**जाके डर अति काल डेराई।**
**जो सुर असुर चराचर खाई।**
**तासों बयरु कबहुं न कीजै ॥**

अन्त में मेरे विचार से भारत सरकार को अंतर्राष्ट्रीय कोर्ट में अपने ऐतिहासिक अधिकारों का

मुकदमा दायर करना चाहिए और कहना चाहिए कि सेतुबंध भारत की ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की धरोहर है। विशेषज्ञों की राय लेकर नया समुद्री मार्ग बनाया जाये। इस कालजयी धरोहर की रक्षा की जाए।

●

# मम कृत सेतु जो दरसन करिहीं

[ डॉ. मन्नू लाल यदु ]

पर ब्रह्म परमेश्वर भगवान श्री राम ने रामावतार में अलौकिक एवं अति मानवीय लीलाएं नहीं की हैं, जैसा कृष्णावतार में हुआ है। तथापि समुद्र पर पुल बनाना अति मानवीय कार्य है, जिसे भगवान श्री राम ने वानर, भालुओं के सहयोग से केवल पाँच दिन में पूर्ण कर दिया था। "मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र" त्रेता युग का परम प्रतापी वीर रावण लंका को सौ योजन समुद्र के कारण अति सुरक्षित मान रहा था, किन्तु इस पर सेतु का निर्माण होना विश्व का एक महान आश्चर्य है। रावण सेतु निर्माण को सुनकर इतना भयभीत और आश्चर्यचकित हुआ कि उसने दसों मुख से समुद्र के दस नाम लेकर आश्चर्य प्रकट किया यथा-

**बाँध्यो वननिधि नीरनिधि जलधि सिंधुबारीस।**
**सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस॥**

वननिधि, नीरनिधि, जलधि, सिंधु, वारीश, तोयनिधि, कंपति, उदधि, पयोधि और नदीश क्या सचमुच ही बाँध लिया? गिरि, जल, वन, आदि अनेक प्रकार के दुर्गों से संरक्षित लंका को पाकर रावण अपने को अंत्यंत सुरक्षित मान रहा था, जिसे सबसे पहले हनुमान जी ने समुद्र को लांघकर तत्पश्चात श्रीरामजी ने सेतु निर्माण कर तहस-नहस कर दिया। महाभिमानी रावण स्वर्ग तक सीढ़ी बनाना चाहता था, अग्नि को धुएं से रहित करना चाहता था तथा समुद्र के खारे पानी को मीठा बनाने की योजना पर काम कर रहा था। रावण ये सभी कार्य नहीं कर सका और समुद्र पर पुल बनाने जैसे असंभव कार्य को सुनकर आश्चर्यचकित हो उठा। तुलसीदास जी ने लिखा है कि समुद्र पर सेतु का निर्माण न तो नल-नील आदि वानरों की करामात से, न ही समुद्र की महिमा और न पत्थरों के गुण से हुआ। यह सेतु तो रामचंद्र जी की इच्छा से बना, बल्कि स्वयं रामचंद्र जी ने ही बनवाया। भगवान श्रीराम द्वारा निर्मित इस सेतु का जो दर्शन करेंगे, भव-सागर से पार हो जाएंगे। हिन्दू संस्कृति में भव-सागर पार होने के लिए चारों धाम, सप्तपुरी, आदि को बताया गया है। उसी प्रकार इस रामसेतु की महिमा बताई गई है। भगवान राम स्वयं भी धर्म सेतु हैं।

राम सेतु 100 योजन लम्बा और 10 योजन चौड़ा बनाया गया था। नल और नील विश्वकर्मा के अंश से ही पैदा हुए थे, जिससे वे निर्माण कला के कुशल शिल्पी थे। नल के गुरु अगस्त्य जी थे, जो अपने युग के महान ज्ञानी थे। संसार का निर्माण पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इन पाँच तत्वों से होता है। इन पाँच तत्वों पर अगस्त्य ऋषि का पूर्णाधिकार था। इस संसार की समस्त विद्याओं और तत्वों के जानकार होने के कारण अगस्त्य जी असंभव को संभव करने में समर्थ थे। विभिन्न प्रकार के ज्ञान-विज्ञान के निष्णात शिष्यों में हनुमान, अंगद, जामवंत, नल-नील, द्विविद आदि कपिश्रेष्ठ थे। महान वीर ज्ञानी-विज्ञानी, वानर-भालु सेना ने 100 योजन लम्बा, 10 योजन चौड़ा सेतु

केवल पाँच दिन में तैयार कर दिया। प्रथम दिन 14 योजन, दूसरे दिन 20 योजन, तीसरे दिन 21 योजन, चौथे दिन 22 योजन और अंतिम दिन 23 योजन लम्बा सेतु बनाया गया। 100 योजन लम्बे पुल निर्मित होने की घटना आज के मानवों को काल्पनिक लगती है। ऐसा इसलिए कि लाखों वर्ष पूर्व त्रेता युग के लोगों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक क्षमता का सही आकलन कलयुगी मानव के वश की बात नहीं है। दूसरा यह कि राम-कथा प्रत्येक कल्प में घटित होती है। प्रत्येक कल्प में श्रीराम के आदेश से वानर सेतु का निर्माण करते हैं। राम सेतु अनेक कल्पों से बनता चला आ रहा है।

सेतु निर्माण में प्रमुख भूमिका नल की थी, इसलिए इस रामसेतु को नल सेतु भी कह दिया जाता है। वाल्मीकि रामायण, आनंद रामायण आदि में इस कथा का वर्णन है। नल विश्वकर्मा के पुत्र हैं। इन्होंने पिता से सब वस्तुओं के जानने का वर पाया है। नल ने श्री रामचंद्र जी से कहा कि हमारे पिता ने हमारी माता को वरदान दिया था कि तुम्हारा पुत्र हमारे ही समान उत्पन्न होगा। अतएव हम पिता के समान सब कुछ बनाने में समर्थ हैं। एक कथा यह भी कि ये ब्राह्मणों के शालिग्राम को जल में फेंक दिया करते थे। तब उन ब्राह्मणों ने नल को शाप दे दिया कि पत्थर तुम्हारे स्पर्श मात्र से जल में न डूबेगा, अपितु तैरेगा, वह शाप इस समय वरदानतुल्य हो गया।

**राम चरन पंकज उर धरहू।**
**कौतुक एक भालु कपि करहू ॥**

जामवंत ने वानर समूह को बुला लिया और उनसे बोले, आप सब मेरी बात सुनिए। अपने हृदय में श्री रामचंद्र के चरण कमलों को धारण कीजिए तथा एक कौतुक कीजिए। कौतुक यह कि आप लोग दौड़कर वृक्षों और पहाड़ों के समूह उखाड़कर ले आएं। आज राम सेतु के संबंध में सारा जन-मानस विचार-मंथन कर रहा है। अनेक लोगों को इस पर पूरा भरोसा नहीं होता। आज का मानव जो भी सोचे, किन्तु सौ योजन लम्बा और दस योजन चौड़ा सेतु वानर सेना ने खेल में ही तैयार कर दिया, जिसके निर्माण में उन्हें कोई श्रम नहीं करना पड़ा। अत्यंत ऊँचे वृक्ष और पर्वतों को वानर ले आते हैं, ताकि बहुत दूर तक सेतु बँध जाए। वानर खेल सरीखे पर्वतों को उखाड़ लेते हैं और नल-नील को लाकर देते हैं, जो सेतु का निर्माण करते हैं तथा उसे सुंदर भी बनाते हैं।

बड़े-बड़े विशालकाय वीर वानर योद्धागण खेल-खेल में ही सेतु निर्माण कर डाले और उसे उन्होंने सुंदर भी बनाया। इस राम सेतु को सुंदर बनाने के लिए गिलहरी ने भी अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी। गिलहरी योगदान की उक्ति का संबंध इसी राम सेतु से है।

वह गिलहरी बार-बार समुद्र के जल में स्नान करके रेत पर लोट-पोट होती और सेतु पर दौड़ जाती। वहां वह अपनी शरीर में लगे सारे रेत को झाड़ देती और फिर स्नान करने दौड़ती। यह कार्य वह निरंतर कर रही थी। भगवान श्री राम बड़ी तन्मयता के साथ गिलहरी के कार्य को देख रहे थे। भगवान श्री राम ने उस नन्हीं सी गिलहरी से पूछा- तू सेतु पर क्या कर रही थी ? तुझे कुचल कर मर जाने का भय नहीं लगता। गिलहरी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा कि मृत्यु दो बार नहीं होती। इस कार्य में मेरी मृत्यु हो जाए तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा। सेतु में बहुत बड़े-बड़े शिलाखंड और वृक्ष लगाए जा रहे हैं। नल-

नील सेतु को समतल नहीं बना पा रहे हैं। ऊंचे-नीचे इस विषम सेतु पर चलने में आपके चरण कमलों को बड़ा कष्ट होगा यह सोचकर पुल के गड्ढ़ों में रेत भरने का काम मैं कर रही थी। गिलहरी से भगवान राम प्रसन्न हो गए और उन्होंने तीन उंगलियों से उसकी पीठ थपथपाई। ऐसा कहा जाता है कि गिलहरी की पीठ पर भगवान श्री रामजी की उंगलियों की रेखाएं आज भी दिखलाई पड़ती हैं।

सुंदरता से बनाया हुआ, शोभा संपन्न, समतल और सुसंबद्ध वह महान सेतु सागर में सीमान्त के समान शोभा पाता था।

**देखि सेतु अति सुंदर रचना।**
**बिहँसि कृपानिधि बोले बचना ॥**

सेतु की अत्यंत सुंदर रचना को देखकर रामचंद्र जी हँसकर बोले-

**परम रम्य उत्तम यह धरनी।**
**महिमा अमित जाइ नहिंबरनी ॥**

यह पृथ्वी परम रमणीय है, परम उत्तम है, इसकी महिमा अतुलनीय है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह लोक प्रसिद्ध बात है कि सब नदियाँ और उनके तट परम रम्य माने जाते हैं। इस विचार से भारतवर्ष में जितने पवित्र और बड़े-बड़े तीर्थ हैं, सभी नदियों के तट पर हैं। सभी नदियाँ समुद्र में मिलती हैं। अतः समुद्र अति पावन तीर्थ है और उसका तट परम रम्य है। जल तट और पवित्र स्थल में देव स्थान होना अति उत्तम है। यह बात भी ध्यातव्य है कि यह स्थान भारत की सीमा है। यहां अवश्य ही कोई न कोई पवित्र तीर्थ स्थान होना ही चाहिए। अतः यहाँ रामजी का ''राम सेतु'' बन गया, जिसके दर्शन मात्र से लोग भवसागर पार कर लेंगे और दूसरा तीर्थ, जिसकी चार धामों में एक धाम के रूप में मान्यता है-रामेश्वर है।

राम सेतु अनादि अनंतकाल से प्रत्येक कल्प में राम के द्वारा बनवाया जाता है। रावण विजय के पश्चात विभीषण की इच्छा का सम्मान करते हुए राम इस सेतु का एक कोना अपने तीर से तोड़ देते हैं, ताकि लंका में जाने का पथ अवरुद्ध हो जाए। इस राम सेतु की रक्षा-सुरक्षा का भार स्वयं राम ने अपने सखा निषादराज गुह को सौंपा था। आज भी वही निषाद इस राम सेतु के सेतुपति हैं और जिला रामनाथपुरम के राजा हैं। इस राम सेतु के रक्षक लाखों निषाद-मल्लाह हैं, जिनके जीवन निर्वाह में राम सेतु सहायक है। रामसेतु का विध्वंश सेतुपति निषादों की भावनाओं के विपरीत करना क्या अमानवीय कार्य नहीं है ? मानव के परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति के एक सरल मार्ग रामसेतु के दर्शन से वंचित करना क्या भक्तजनों की मान्यता पर कुठाराघात नहीं है ? परब्रह्म परमेश्वर भगवान श्रीराम ने धर्म की स्थापना और अधर्मी राक्षसों के विनाश के लिए जिस धर्म सेतु का निर्माण कराया था, वह सारी दुनिया की इकलौती धरोहर है, जिसने रावण जैसे महावीर को चौंका दिया था। भगवान श्रीराम द्वारा निर्मित यह रामसेतु सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए 'धर्मसेतु' जैसा है जिसकी रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का अपना धार्मिक दायित्व है। ●

# रामसेतु : विश्व का प्रथम आश्चर्य

[श्रीमती उर्वशी त्यागी]

अभियांत्रिकीय जगत में श्री रामसेतु मानव स्रष्टि के प्रथम इंजीनियर नल वानर द्वारा 17 लाख 50 हजार वर्ष ईसा पूर्व निर्मित किया गया विश्व का प्रथम प्राचीनतम और महान आश्चर्य है। महाभारत काल तक अर्थात् अब से लगभग 5 हजार वर्ष पूर्व तक इस सेतु को 'नलसेतु' से नाम के पुकारा जाता रहा है। नल के द्वारा बनाए हुए 100 योजन लम्बे और 10 योजन चौड़े इस नलसेतु को देवताओं और गंधर्वों के लिए भी बनाना बहुत ही कठिन काम था-

**दशयोजन विस्तीर्ण शतयोजनमायतम् ।**
**दहशुर्देव गंधर्वा नलसेतु सुदुष्करम ॥**

भगवान श्रीराम, सीता जी को अयोध्या लौटते समय पुष्पक विमान से, सेतुबंध को दिखाते हुए कहते है कि विशाल लोचने ! इस खारे पानी के समुद्र में यह मेरा बंधवाया हुआ पुल है, जो 'नलसेतु' के नाम से विख्यात हो गया है। देवि! तुम्हारे लिए ही यह अत्यंत दुष्कर सेतु बांधा गया था-

**एष सेतुर्मया बद्ध सागरे लवणार्णवे ।**
**तव हेतोर्विशालाक्षि नलसेतुः सुदुष्कर : ॥**

- वा.रा. ॥ युद्ध कांड। सर्ग। 23। श्लोक 161 ॥

इस पुल के अन्य नाम 'आदम-पुल' आदि भी लगभग 1500 वर्ष से अधिक समय से प्रचलित नहीं हैं। 'एडम्स ब्रिज' तो ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रथम सर्वेयर जनरल जेम्स रेनल द्वारा, प्रथम बार सन् 1788 में 'रामार सेतु' को पुनः, सन् 1804 में 'एडम्स-ब्रिज' के रूप में राजनीतिक नक्शे पर अंकित कर, प्रचारित किया गया। इस प्रकार इस नलसेतु के विषय में अपने गुप्तचरों से जानकर उस काल का प्रचंड शक्तिशाली लंका का राजा रावण भी आश्चर्यचकित हो गया था।

**समग्रं सागरं तीर्ण दुष्तरं वानरं बलम् ।**
**अभूतपूर्वं रामेण सागरे सेतुबन्धनम् ॥**
**सागरे सेतु बन्धं तं न श्रद्धायां कथंचन ।**

- वा.रा. ॥ युद्ध कांड। सर्ग। 25। श्लोक 2-3 ॥

उसने अपने मंत्री शुक और सारण से कौतूहल प्रकट करते हुए कहा कि यद्यपि समुद्र को पार करना अत्यंत कठिन था तो भी सारी वानर सेना उसे लांघ कर इस पार चली आयी। राम के द्वारा सागर पर सेतु का बांधा जाना अभूतपूर्व कार्य है। लोगों के मुँह से सुनने पर भी मुझे किसी तरह यह विश्वास नहीं होता कि समुद्र पर पुल बांधा गया होगा। वह आश्चर्य से भरा हुआ पूछता है कि अगाध जलराशि से भरे हुए समुद्र में वह पुल किस तरह बांधा गया ?

इस प्रकार हम देखते हैं कि संसार में इससे पूर्व इतने अधिक मानव-दिवस को इतने कम

समय में नियोजित कर, इतना विशाल एवं अद्भुत निर्माण संसार के प्रथम सात आश्चर्यों से भी यह महान आश्चर्य मानव की प्रथम अद्भुत मानव निर्मित कृति है। इसमें लगे विशेष प्रकार के बालू निर्मित मसाले और विशेष पत्थरों से यह सिद्ध होता है कि यह सेतु प्रकृति द्वारा निर्मित नहीं हो सकता।

नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ आशियन टेक्नोलॉजी (एन आई ओ टी चेन्नई) के निदेशक रहे अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त भूगर्भ वैज्ञानिक डॉ. बद्रीनारायण की खोज भी यही सिद्ध करती है कि श्रीराम सेतु का निर्माण विशेष प्रकार की बालू और पत्थर लाकर किया गया था और यह सेतु किसी भी प्रकार से प्राकृतिक रूप से नहीं बन सकता।

इसी प्रकार के अनेक अनुसंधानों पर आधारित एक डाक्यूमेंटरी फिल्म 'रामसेतु' तैयार की गई है। चण्डीगढ़ के फिल्म निर्देशक प्रो. पी.एस. निरोला और यमुना नगर हरियाणा के फिल्म निर्माता सिद्धार्थ द्वारा इन्हीं सत्य तथ्यों को उद्घाटित करने हेतु उक्त फिल्म के माध्यम से चित्रों सहित प्रामाणिक रूप से इसे प्रस्तुत किया गया है। इस फिल्म में रामसेतु के महत्व और विशिष्टताओं को रेखांकित करते हुए यह चेतावनी भी दी गई है कि यदि इसे तोड़ा जाता है, तो सुनामी का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। फिल्म में सेतु के टूटने से होने वाली हानियों और खतरों को रेखाचित्रों के माध्यम से दर्शाया गया है।

चंडीगढ़ फिल्मोत्सव 2008 में आए युवा फिल्म निर्माता मनोज राही ने 4 फरवरी 2008 को बताया कि यदि समय रहते सेंसर बोर्ड उक्त फिल्म को प्रमाण -पत्र दे देता, तो फिल्मोत्सव के द्वारा आम लोगों तक रामसेतु की सच्चाई पहुंचाई जा सकती थी। सेंसर बोर्ड की आनाकानी निश्चित रूप से सच्चाई पर पर्दा डालने का निंदनीय कृत्य है।

इस डाक्यूमेंटरी फिल्म 'रामसेतु' की शूटिंग (चित्रांकन) रामेश्वरम् और धनुषकोटि में की गई है। फिल्म की प्रारंभिक भूमिका में पहले दस मिनट रामायण वृत्तांत पर केन्द्रित हैं। रामसेतु के निर्माण की प्रक्रिया को प्रामाणिक अभिव्यक्ति देने के लिए जगह-जगह रामायण में लिखी वस्तु-स्थितियों को आधार बनाया गया है।

उदाहरण स्वरूप रामायण में उल्लेख है कि सेतु के निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार के पेड़ों का भी उपयोग किया गया था। आज भी धनुष कोटि के आसपास समुद्र के किनारे आम और बबूल के पेड़ लगे हैं। जो घने वनों और पेड़ों के लुप्त होने के प्रमाण को इंगित करते हैं। एन ओ आई टी, चेनैई के अध्ययन में उपलब्ध प्रमाण भी रामसेतु के मानव निर्मित होने को पुष्ट करते हैं।

बहरहाल, चंडीगढ़ के फिल्म निर्देशक प्रो.पी. एस. निरोला ने प्रधानमंत्री व सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय को पत्र लिखकर रामसेतु पर बनी डाक्यूमेंटरी को बिना विलम्ब किए सेंसर बोर्ड द्वारा प्रमाण-पत्र दिए जाने की मांग की है ताकि जन सामान्य को इस ऐतिहासिक सच्चाई से अवगत कराया जा सके।

यहां इस तथ्य को उद्घाटित करना असंगत नहीं होगा कि रामसेतु की सच्चाई को बाहर आने से रोकने के लिए विश्व स्तर पर अनेक आर्थिक, राजनैतिक एवं सामरिक तथा वैज्ञानिक दबाव डाले जा रहे हैं। कुछ कम्पनियां, रामसेतु के कारण भारतीय तटों पर रेत में बिखरे थोरियम को,

लाखों टनों के हिसाब से, उस बहुमूल्य रेत का निर्भय होकर निर्यात करके अवैध रूप से भारी कमाई कर रहे हैं। इस समुद्री रेत का निर्यात प्रतिबंधित होने के बावजूद कुछ कृपा पात्र कम्पनियां इस देशद्रोही कार्य में लगी हुई हैं। इस संबंध में कुछ लोगों द्वारा जनहित याचिकाएं भी लगाई गई हैं। किंतु निर्यात माफियाओं द्वारा उन्हें लम्बे समय तक लम्बित बनाए रखने के हथकंडों के रूप में ये दबाव प्रभावशील हो रहे हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि रामसेतु का निर्माण सिविल एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विश्व का प्रथम महान आश्चर्य तो है ही साथ ही साथ उस सत्य को जन-मानस तक न आने देना विश्व का दूसरा महान आश्चर्य भी है।

●

# वनगमन से रामसेतु तक की संक्षिप्त यात्रा

[ डॉ.हेमू यदु ]

## श्री रामवनगमन मार्ग छत्तीसगढ़ में : नदियाँ

छत्तीसगढ़ के कोरिया जिला का बनास नदी, मवाई नदी, रापा नदी, नेउर नदी, गोपद नदी, हसदो नदी, जिला अंबिकापुर में रेण नदी, महान नदी मैनी नदी, मछरी नदी, माण्ड नदी, महानदी, सीता नदी, दूध नदी, कोटरी नदी, इंद्रावती, शंखनी-डंकनी नदी, शबरी नदी के तट से होकर गोदावरी में प्रवेश किये।

**प्रमुख स्थान :-**

छत्तीसगढ़ में सीमावर्ती मध्यप्रदेश की सीधी जिला से लगा हुआ जिला कोरिया में भरतपुर तहसील में सीतामढ़ी, हरचौका, सीतामढ़ी, घाघरा, कोटा डोल, सीतामढ़ी हरचौका, आश्रम - सिद्ध बाबा का आश्रम, देवसील, रामगढ़, अमृतधारा जटाशंकरी गुफा बैकुण्ठपुर, सूरजपुर, देवगढ़ जमदग्नि आश्रम, अंबिकापुर जिले में बिलद्वार गुफा, महरमंडा ऋषि का आश्रम, सारासोर-सीताकुण्ड, उदयपुर सीताबेंगरा, जोगीमारा हथफोर गुफा सुरंग, लक्ष्मण गढ़, महेशपुर मुनि वसिष्ठ आश्रम, चंदनमिट्टी गुफा, दलामी ग्राम बंदरकोट-दरिमामार्ग, दमाली, कोट सुमाली टीला अंजनी टीला, महर्षि सुतीक्ष्ण आश्रम एवं दन्तोली आश्रम, केसरीवन, मैनपाट-शरभंग ऋषि का आश्रम, सीतापुर, महारानीपुर, देउरपुर, पम्पापुर, किन्धापर्वत, पिपलीग्राम. पिपल्कि ऋषि का आश्रम, रकसगंडा जशपुर जिला में पत्थलगाँव में किलकिला आश्रम, रायगढ़ जिला में चन्द्रपुर, चन्द्रहासिनी देवी, चाँपा जाँजगीर जिला में, शिवरीनारायण, शबरी एवं मतंगऋषि का आश्रम खरौद में लक्ष्मणेश्वर शिवमंदिर, जाँजगीर, बिलासपुर जिले में मल्हार, धमनी, जिला रायपुर में आरंग कौशिल्याकुण्ड, बागेश्वर शिवमंदिर, फिंगेश्वर, माण्डव्य ऋषि का आश्रम, चम्पारण, राजिम लोमश ऋषि का आश्रम, राजीवलोचन, पंचकोसी, धमतरी जिला में रुद्री अतरमरा अत्रि ऋषि का आश्रम, रुद्रेश्वर मंदिर, गंगरेल, दुधावा, देवखूंट, नगरी, सिहावा श्रृंगी ऋषि एवं सप्तऋषि मंडल का आश्रम, सीता नदी अभ्यारण्य, कांकेर जिला, कांकेर कंक ऋषि का आश्रम बस्तर क्षेत्र में केसकाल की तराई, धनोरा, गढ़धनोरा, नारायणपुर, राकसहाड़ा, रक्साडोंगरी, छोटे डोंगर, बारसूर-बाणासुर की राजधानी, चित्रकूट, नारायण पाल, जगदलपुर, गीदम-गिद्धराज की नगरी, दंतेवाड़ा माँ दंतेश्वरी देवी, तीरथगढ़, कुटुंबसर-कोटि महेश्वर, सुकमा, रामाराम, कोंटा से इंजरम, सबरी नदी के तट पर शबरी से भद्राचलम्, पर्णकुटीर होकर गोदावरी।

श्री रामवगमन के समय के कुछ महत्पूर्ण विचारणीय बिन्दु :-

1. माता कौशल्या ने राजा दशरथ से 14 वर्ष का वनवास क्यों माँगा था ?

इसका प्रमुख कारण यह है कि माता कौशल्या की दूरदर्शिता थी। वह जानती थी कि उनके

प्रिय पुत्र श्रीराम ही इस कार्य के लिए योग्य हैं, जो अपने पराक्रम और विवेकशीलता से द्रविण क्षेत्र में पहुँचकर अनार्यों को पराजित कर आर्य संस्कृति का प्रचार प्रसार एवं विस्तार करेंगे। माता कौशिल्या एक विदुषी महारानी ही नहीं, अपितु कुशाग्रा बुद्धि की धनी थी। अपनी दूरदर्शिता से वह जानती थी कि राजा अपने राज्य में ही पूजा जाता है। सर्वत्र पूजे जाने के लिए अपने प्रिय पुत्र राम को राज्य से बाहर भेजना आवश्यक होगा और यही एक उपयुक्त अवसर का उसने लाभ उठाया था और रामचंद्र जी ने वनवास काल में उत्तर से दक्षिण की यात्रा कर सर्वत्र पूजनीय हुए। इस लम्बी यात्रा के लिए चौदह वर्षों के वनवास की आवश्यकता थी, जिसमें उन्हें ज्ञात था कि दण्डकारण्य उन दिनों अत्यंत दुर्गम एवं कंटक मार्ग था। दक्षिणापथ में उन्हें दस वर्षों से कम समय नहीं लगेंगे।

2. रामचंद्र जी ने दण्डकारण्य क्षेत्र में ही वनवास काल व्यतीत करने का निर्णय क्यों लिया ? किसी अन्य क्षेत्र में भी तो जा सकते थे ?

इसका प्रमुख कारण यह है कि दण्डकारण्य में वनवास जाने का निर्णय प्रमुख था कि उत्तर और दक्षिण दोनों क्षेत्रों को जोड़ना है। उत्तर क्षेत्र से दक्षिण क्षेत्र में आर्य संस्कृति का विस्तार करने के लिए दण्डकारण्य ही एक प्रमुख मार्ग था, इसी कारण दण्डकारण्य का अधिकांश भाग उन दिनों कोसल कहलाता था। वहीं श्रीरामचंद्र जी की बहन शांता का विवाह श्रृंगी ऋषि के साथ हुआ था। श्रृंगी ऋषि सिहावा क्षेत्र में निवास करते थे अतः अपने परिजनों के क्षेत्र में भेंट करते हुए वनमार्ग के लिए दण्डकारण्य का चयन किया गया था।

3. धनुष कोटि में निर्मित रामसेतु वानर द्वारा वानरों के लिए बनाया प्रतीत होता है। इस सेतु की संरचना एक तिहाई भाग प्राकृतिक था, जो काफी संकरा एवं दुर्गम था, जिसे वानर प्रजाति ही आसानी से पार कर सकता था, मानव के लिए दुर्गम था। अतः वानर सेना इसे पार कर लंका में प्रवेश किया था।

4. श्री राम और लक्ष्मण को हनुमान जी अपने कंधों पर उड़ाकर लंका पहुँचाए थे, यह सेतु सिर्फ वानरों के उपयोग के लिए ही वानरों द्वारा निर्मित किया गया कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

5. राम की सेना में नल एवं नील इंजीनियर एवं वास्तुविद थे, किन्तु इन्हें इस बात का भी ज्ञान था कि समीप ऐसा पर्वत था, जिसके पत्थर जल में आसानीसे तैर सकते हैं, अतः इन्हीं पत्थरों का उपयोग उनके द्वारा किया गया। एक विशेष प्रकार का पत्थर जिसका आकार गोल एवं छोटे-छोटे छिद्र से युक्त थे, जो जल के घनत्व को कम करती थी और पाषाण आसानी से जल में हिचकोले ले सकते हैं। इस विशेष प्रकार के पत्थर का उपयोग रामसेतु निर्माण में किया गया। इन पत्थरों के अवशेष आज भी मिलते हैं।

6. पत्थरों को इस प्रकार से रचे गये हैं कि वे एक-दूसरे के भार को आपस में बाँटते जायें। इसकी संरचना में नल-नील जैसे महान वास्तुविदों की निपुणता स्पष्ट परिलक्षित होती है, जो सदियों बाद आज भी इसी तरह रचे हुए विद्यमान हैं।

7. प्राकृतिक एवं वानर निर्मित सेतुबंध एक ही श्रृंखला में पाया जाना तथा दोनों तरफ वानरों द्वारा एक लम्बी रस्सी लेकर खड़ा किया होगा और रस्सियों के मध्य में पत्थर डालकर उसे

रचा गया। वृक्ष लताओं को रस्सी रुप में उपयोग किया गया। इस सेतु बंध को निर्माण करने में पाँच दिनों का समय लगा था, ऐसी जानकारी पौराणिक शास्त्रों में मिलती है।

इस प्रकार रामसेतु बंध का निर्माण वानरों द्वारा वानरों के उपयोग के लिए किया था। प्राकृतिक एवं वानर निर्मित यह रामसेतुबंध सदियों बाद भी अपनी ऐतिहासिकता को समेटे हुए आज भी विद्यमान है, जो भारत की अस्मिता हैं।

●

# लेखक-परिचय



**जन्म** :- मेरठ के एक भूतपूर्व जमींदार एवं संभ्रांत त्यागी-ब्राह्मण परिवार में 21 फरवरी, 1943 को आपका जन्म हुआ।

**शिक्षा** :-सम्राट अशोक इंजीनियरिंग महाविद्यालय से सिविल इंजी. में डिप्लोमा करने के पश्चात् शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर से सिविल में बी.ई. तक शिक्षा।

**कार्यक्षेत्र** :- मेरठ, देहली, विदिशा, ग्वालियर, भिंड, मुरैना, रायपुर, दुर्ग और डोंगरगढ़, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ में लगभग 40 वर्षों से शासकीय सेवा में इंजीनियर रहते हुए-रायपुर नगर को ही साधना केंद्र बनाया।

**विशेष** :-बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कवि तथा साहित्यकार श्री अमरनाथ त्यागी एक उत्कृष्ट खिलाड़ी, एथलीट एवं कला पारखी होने के साथ-साथ एक चिंतक, साधक, पर्यावरणविद तथा समाज सेवी रहे हैं। आप राष्ट्रीय विचारधारा के प्रखर देश-भक्त कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए, वहीं प्रेरणा-दायक वीर-रस पूर्ण काव्य एवं भक्ति-काव्य के उत्कृष्ट एवं समृद्ध कवि मनीषी के रूप में स्थापित हो चुके हैं। यद्यपि मूलरूप से आप कवि हैं, किन्तु गद्यकार के रूप में भी आपने अपनी अलग पहचान बनाई है। हिन्दी साहित्य में दीर्घकालीन उल्लेखनीय सेवाओं आदि के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं राजस्थान की अनेक साहित्यिक एवं इंजीनियर-एसोसिएशन तथा खेल और सामाजिक संस्थाओं ने श्री त्यागी जी को सम्मानित कर उनका नागरिक अभिनन्दन किया है।

**ग्रंथ-रचना** :- प्रबंध काव्य- कृष्णचरित मानस, पद्यानुवाद-श्रीमद्भगवद् गीता, खण्ड-काव्य-महाराणा प्रताप, काव्य-संकलन- श्री गोविंद विलास, जहाँ चंदन महकते हैं, सहस्त्र सुमन-मन-उपवन के, राजा रतन सेन पद्मावत, रामसेतु, छत्तीसगढ़ की रामायण, धर्मरथ के अतिरिक्त अनेक ग्रंथ संकलन।

प्रो. देवीसिंह चौहान

अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य सम्मेलन एवं
हिन्दी साहित्य मंडल, रायपुर (छ.ग.)

# रामसेतु
# प्रभु-पाद समाना
## के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ



डॉ. रमन सिंह
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन



श्री रमेश बैस
पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सांसद



चंद्रशेखर साहू
माननीय कृषि मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन

## बीज निगम के उत्तरोत्तर बढ़ते कदम एवं उपलब्धियां

- प्रक्रिया केन्द्रों के सुदृढ़ीकरण के अर्न्तगत 18 प्रक्रिया केन्द्रों में आधुनिक ग्रेडिंग मशीनों की स्थापना एवं निगम गठन के समय निगम की भंडारण क्षमता 11500 मी. टन की थी निगम गठन उपरांत 18500 मी. टन का गोदाम निर्माण पूर्ण एवं 61500 मी. टन के गोदाम निर्माणाधीन।
- प्रक्षेत्रों पर उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से यांत्रिकीकरण हेतु ट्रैक्टर एवं कृषि यंत्रों की उपलब्धता।
- निगम के पोखरा स्थित कृषि प्रक्षेत्र पर कृषक प्रशिक्षण एवं संकर धान उत्पादन हेतु राजिम भक्तिन माता कृषक गुरूकुल की स्थापना।
- छोटे उरला (अभनपुर) में प्रदेश का पहला बायोफर्टिलाइजर संयंत्र की स्थापना।
- नवीन प्रक्रिया केन्द्र लभराखुर्द (महासमुंद), कलारतराई (धमतरी), सेंदरी (बिलासपुर), शिवपुरी (डोंगरगढ़), सरायपाली (महासमुंद), मुंगेली (बिलासपुर), बरमकेला (रायगढ़) की स्थापना।
- आगामी वर्षों में नवीन प्रक्रिया केन्द्र गरियाबन्द (रायपुर), अभनपुर (रायपुर), खरसिया (रायगढ़), गीदम (दंतेवाड़ा), कोरबा, कोरिया, कुनकुरी (जशपुर) खोला जाना प्रस्तावित।
- महासमुंद, धमतरी, कांकेर, दंतेवाड़ा, कोरबा, जशपुर तथा कोरिया में नये जिला कार्यालय प्रारंभ।



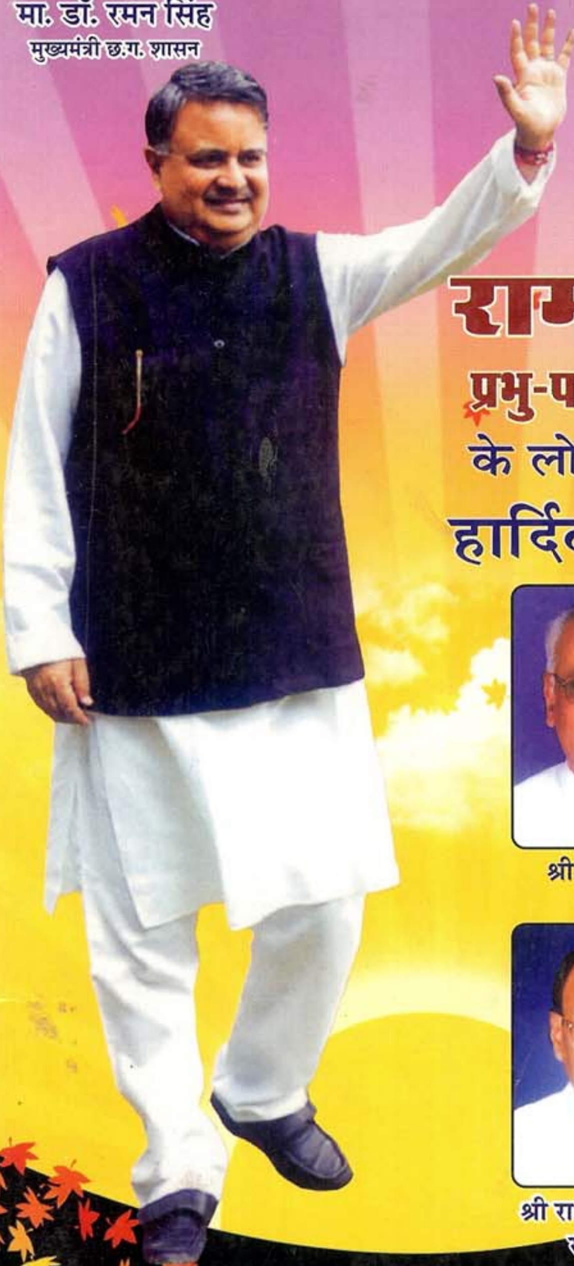
श्री श्याम बैस
अध्यक्ष
छ.ग. राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम

## छ.ग. राज्य बीज एवं कृषि विकास निगम लि. रायपुर

''बीज भवन'', जी.ई. रोड, तेलीबांधा, पो.आ.-रविग्राम, रायपुर-492 006
दूरभाष : (कार्या.) 0771-4017305, 4212201, फैक्स : 0771-4046039

Design 9993300793

मा. डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री छ.ग. शासन



# रामसेतु
## प्रभु-पाद समाना
## के लोकर्पण पर
# हार्दिक बधाई



श्री श्याम बैस
अध्यक्ष



श्री राधाकृष्ण गुप्ता
संयोजक

**श्री राम वन गमन मार्ग शोध संस्थान, रायपुर (छ.ग.)**